रामायण अयोध्याकांड
पत्र १२६

अ०
१

श्रीगणेशायनमः॥श्लोक॥वामांकेचविभातिभूधरसुतादेवापगामस्तके॥भालेबाल
विधुर्गलेचगरलंयस्योरसिव्यालराट॥सोयंभूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्व
दाशर्वः सर्वगतःशिवःशशिनिभःश्रीशंकरःपातुमां॥१॥प्रसन्नतांयानगताभिषेकात्त
थानमम्लेवनवासदुःखतः॥मुखांबुजश्रीरघुनंदनस्यमेसदास्तुसामंजुलमंगलप्र
दा॥२॥नीलांबुजश्यामलकोमलांगंसीतासमारोपितवामभागं॥पाणौमहासायक
चारुचापंनमामिरामंरघुवंशनाथं॥३॥दोहा॥श्रीगुरुचरनसरोजरजनिजमनमुकु
रसुधारि॥बरनौंरघुबरबिमलजसजोदायकफलचारि॥चौपाई॥जबतेरामब्याहिघर
आए॥नितनवमंगलमोदबधाए॥भुवनचारिदसभूधरभारी॥सुकृतमेघबरषहिंसु
खबारी॥रिधिसिधिसंपतिनदीसुहाई॥उमगिअवधअंबुधिकंहआई॥मनिगनपु १

रनरनारिसुजाती॥सुचिअमोलसुंदरसबभांती॥कहिनजाइकछुनगरविभूती॥ज
नुइतनियविरंचिकरतूती॥सबविधिसबपुरलोगसुषारी॥रामचंदमुखचंदुनिहारी॥
मुदितमातुसबसषीसहेली॥फलितविलोकिमनोरथवेली॥रामरूपगुनसीलसुभा
उ॥प्रमुदितहोहिदेषिसुनिराउ॥दोहा॥सबकेमनअभिलाषुअसकहहिंमनाइम
हेसु॥आपुअछतजुवराजपदुरामहिदेउनरेसु॥१॥एकसमयसबसहितसमाजा॥
राजसभारघुराजविराजा॥सकलसुकृतमूरतिनरनाहू॥रामसुजससुनिअतिहिउछा
हू॥नृपसबरहहिंकृपाअभिलाषे॥लोकपकरहिंप्रीतिरुषराषे॥तिभुवनतीनिकाल
जगमाहीं॥भूरिभागदशरथसमनाहीं॥मंगलमूलरामसुतजासू॥जोकछुकहियथो
रसबतासू॥रायसुभायमुकुरकरलीन्हा॥वदनविलोकिमुकुटसमकीन्हा॥श्रवन

अ०
२
समीप भए सित केसा॥ मनहु जरठपनु अस उपदेसा॥ न्रप जुबराजु राम कहु देहू॥ जीवन
जन्म लाहु किन लेहू॥ दोहा॥ यह बिचारु उर आनि न्रप सुदिन सुअवसरु पाइ॥ प्रेम पुल
कि तन मुदित मन गुरहि सुनाएउ जाइ॥ ३॥ कहइ भुआल सुनिय मुनिनायक॥ भए रा
मु सब बिधि सब लायक॥ सेवक सचिव सकल पुरबासी॥ जे हमरे अरि मित्र उदासी॥ सबहि
रामु प्रिय जेहि बिधि मोही॥ प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही॥ बिप्र सहित परिवार गोसाईं॥
करहि छोहु सब रउरेहि नाईं॥ जे गुरु चरन रेनु सिर धरहीं॥ ते जनु सकल बिभव बस करहीं॥
मोहि सम यहु अनुभएउ न दूजे॥ सबु पाएउ रज पावनि पूजे॥ अब अभिलाषु एक मन मोरे॥
पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे॥ मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू॥ कहेउ नरेस रजायसु देहू॥ दोहा॥ २
राजन राउर नामु जसु सब अभिमत दातार॥ फल अनुगामी महिप मनि मन अभिलाष तुम्ह

२॥३॥सबबिधिगुरुप्रसन्नजियजानी॥बोलेराउरहँसिम्रदुबानी॥नाथरामुकरिअहि
जुबराजू॥कहिअकृपाकरिकरिअसमाजू॥मोहिअछतयहहोइउछाहू॥लहहिंलोगसब
लोचनलाहू॥प्रभुप्रसादशिवसबइनिबाहीं॥यहलालसाएकमनमाहीं॥पुनिनसोचतु
नुरहउकिजाऊ॥जेहिनहोइपाछेंपछिताऊ॥सुनिमुनिदशरथबचनसुहाए॥मंगलमो
दमूलमनभाए॥सुनुनृपजासुबिमुखपछिताहीं॥जासुभजनबिनुजरनिनजाहीं॥भय
उतुम्हारतनयसोइस्वामी॥रामपुनीतप्रेमअनुगामी॥बेगिबिलंबुनकरियनृपसाजिय दो०
सबइसमाजु॥सुदिनसुमंगलुतबहिंजबरामुहोहिंजुबराजु॥४॥मुदितमहीपतिमंदिरआ
ए॥सेवकसचिवसुमंत्रुबुलाए॥कहिजयजीवसीसतिन्हनाए॥भूपसुमंगलबचनसुनाए
पंचहिंजोमतलागैनीका॥करहुहरषिहियरामहिटीका॥मंत्रीमुदितसुनतप्रियबानी॥अ

अ० ३ भि मत बिरव परेउ जनु पानी ॥ बिनती सचिव करहिं कर जोरी ॥ जिअहु जगतपति बरिस करो
री ॥ जग मंगल भल काजु बिचारा ॥ बेगिअ नाथ न लाइअ बारा ॥ नृपहि मोदु सुनि सचिव
सुभाषा ॥ बढ़त बौंड़ जनु लही सुसाषा ॥ दोहा ॥ कहेउ भूप मुनिराज कर जोइ जोइ आयसु
होइ ॥ राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ ॥ ५ ॥ हरषि मुनीस कहेउ मृदु बानी
आनहु सकल सुतीरथ पानी ॥ औषध मूल फूल फल पाना ॥ कहे नाम गनि मंगल नाना
चामर चरम बसन बहु भांती ॥ रोम पाट पट अगनित जाती ॥ मनि गन मंगल बस्तु अ
नेका ॥ जो जग जोगु भूप अभिषेका ॥ बेद बिहित कहि सकल बिधाना ॥ कहेउ रचहु पुर बि
बिध बिताना ॥ सफल रसाल पूगफल केरा ॥ रोपहु बीथिन्ह पुर चहु फेरा ॥ रचहु मंजु मनि ३
चौकै चारू ॥ कहहु बनावन बेगि बजारू ॥ पूजहु गनपति गुर कुलदेवा ॥ सब बिधि करहु भू

निसुरसेवा॥ दोहा॥ ध्वजपताकतोरनकलससजहुतुरगरथनाग॥ सिरधरिमुनिव
रबचनसबुनिजनिजकाजहिलाग॥ ६॥ जोमुनीसजेहिआयसुदीन्हा॥ सोतेहिकाजुप्र
थमजनुकीन्हा॥ विप्रसाधुसुरपूजतराजा॥ करतरामहितमंगलकाजा॥ सुनतरामअभि
षेकसुहावा॥ वाजगहागहअवधवधावा॥ रामसीयतनसगुनजनाए॥ फरकहिंमंगल
अंगसुहाए॥ पुलकिसप्रेमपरसपरकहहीं॥ भरतआगमनसूचकअहहीं॥ भएवहुतदि
नअतिअवसेरी॥ सगुनप्रतीतिभेटप्रियकेरी॥ भरतसरिसप्रियकोजगमाहीं॥ इहइसगु
नफलदूसर नाहीं॥ रामहिंबंधुसोचुदिनराती॥ अंडन्हिकमठहृदउजेहिभांती॥ दोहा॥
एहिअवसरमंगलुपरमसुनिरहसेउरनिवासु॥ सोभतलखिविधुवढतजनुवारिधवीचिवि
लासु॥ ७॥ प्रथमजाइजिन्हवचनसुनाए॥ भूषनवसनभूरितिन्हपाए॥ प्रेमपुलकितनु

अ॰
४
मनुअनुरागी॥ मंगलकलससजनसबलागी॥ चौकेचारुसुमित्रापूरी॥ मनिमयविविधभाँ
तिअतिरूरी॥ आनंदमगनराममहतारी॥ दिएदानबहुविप्रहँकारी॥ पूजीग्रामदेविसु
रनागा॥ कहेवहोरिदेनवलिभागा॥ जेहिविधिहोइरामकल्यानू॥ देहुदयाकरिसोवर
दानू॥ गावहिंमंगलकोकिलवयनी॥ विधुवदनीम्रगसावकनयनी॥ दोहा॥ रामराज
अभिषेकुसुनिहियहरषेनरनारि॥ लगेसुमंगलसजनसवविधिअनुकूलविचारि॥ ८
तवनरनाहवसिष्ठवोलाए॥ रामधामसिषदेनपठाए॥ गुरआगमनसुनतरघुनाथा॥
द्वारआइपदनाएउमाथा॥ सादरअरघदेइघरआने॥ सोरहभाँतिपूजिसनमाने॥ ग
हेचरनसियसहितवहोरी॥ वोलेरामुकमलकरजोरी॥ सेवकसदनस्वामिआगमनू॥ ४
मंगलमूलअमंगलदमनू॥ तदपिउचितजनुवोलिसप्रीती॥ पठइअकाजनाथअसि

सिनीती॥ प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू॥ भएउ पुनीत आजु यहु गेहू॥ आयसु होइ सो करौं
गोसाँई॥ सेवकु लहै स्वामि सेवकाई॥ दोहा॥ मुनि सनेह साने बचन मुनि रघुबरहि प्रसंस॥
राम कस न तुम्ह कहहु अस हंस बंस अवतंस॥ ९ ॥ बरनि राम गुन सील सुभाऊ॥ बोले प्रेम पु
लकि मुनिराऊ॥ भूप सजेउ अभिषेक समाजू॥ चाहत देन तुम्हहि जुबराजू॥ राम करहु सब
संजम आजू॥ जौ बिधि कुशल निबाहइ काजू॥ गुर सिष देइ राय पहि गएऊ॥ राम हृदय अस
बिसमय भएऊ॥ जनमे एक संग सब भाई॥ भोजन सयन केलि लरिकाई॥ करनबेध उ
पवीत बिवाहा॥ संग संग सब भए उछाहा॥ बिमल बंस यह अनुचित एकू॥ बंधु बिहाइ
बडेहि अभिषेकू॥ प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई॥ हरउ भगत मन कै कुटिलाई॥ दोहा॥
तेहि अवसर आए लषन मगन प्रेम आनंद॥ सनमाने प्रिय बचन कहि रघुकुल कैरव चंद

अ०
५

१०॥ बाजहिं बाजन बिबिध बिधाना॥ पुर प्रमोद नहिं जाइ बखाना॥ भरत आगमनु सकल म
नावहिं॥ आवहु बेगि नयन फलु पावहिं॥ हाट बाट घर गली अथाई॥ कहहिं परस्पर लोग
लोगाई॥ कालि लगन भलि केतिक बारा॥ पूजिहि बिधि अभिलाषु हमारा॥ कनक
सिंहासन सीय समेता॥ बैठहिं राम होइ चित चेता॥ सकल कहहिं कब होइहि काली॥ बिघ
न मनावहिं देव कुचाली॥ तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा॥ चोरहि चंदिनि राति न भावा॥ सा
रद बोलि बिनय सुर करहीं॥ बारहिं बार पाय लइ परहीं॥ दोहा॥ बिपति हमारि बिलोकि ब
ड़ि मातु करिय सोइ आजु॥ राम जाहिं बन राजु तजि होइ सकल सुरकाजु॥ ११॥ सुनि सुर बिनै
ठाढ़ि पछिताती॥ भइउ सरोज बिपिन हिमराती॥ देखि देव पुनि कहहिं निहोरी॥ मातु तोहि
नहिं थोरि उ खोरी॥ बिसमय हरष रहित रघुराऊ॥ तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ॥ जीव कर्म ५

बसमुषदुषभागी॥जाइअअवधदेवहितलागी॥बारबारगहिचरनसकोची॥चलीबि
चारिबिबुधमतिपोची॥ऊचनिवासुनीचकरतूती॥देषिनसकहिपराइबिभूती॥आ
गिलकाजविचारिबहोरी॥करिहहिंचाहकुशलकविमोरी॥हरषिहृदयदशरथपु
रआई॥जनुग्रहदशादुसहदुषदाई॥दोहा॥नाममंथरामंदमतिचेरीकेकइकेरि
अजसपेटारीताहिकरिगईगिरामतिफेरि॥१२॥दीषमंथरानगरुबनावा॥मंजुल
मंगलबाजबधावा॥पूछेसिलोगन्हकाहउछाहू॥रामतिलकसुनिभाउरदाहू॥क
रैविचारुकुबुद्धिकुजाती॥होइअकाजुकवनविधिराती॥देषिलागिमधुकुटिलकि
राती॥जिमिगवतकइलेउकेहिभांती॥भरतमातुपहिगइविलषानी॥काअनमनि
हंसिकहहंसिरानी॥ऊतरुनदेइनलेइउसांस॥नारिचरितकरिढारइआंसू॥हंसि

कहरानि गाल वड तोरें॥ दीन्हि लषन सिष अस मन मोरें॥ तव हुन वोलु चेरि वडि पापिनि
छाडइ स्वास कारि जनु सांपिनि॥ दोहा॥ सभय रानि कह कहसि किन कुशल रामु महिपालु
लषनु भरत रिपुदवन सुनि भा कुवरी उर सालु॥१३॥ कत सिष देइ हमहि कोउ माई॥ राम
हि छाडि कुशल केहि आजू॥ जिन्हहि जनेसु देइ जुवराजू॥ भएउ कौसिलहि विधि अति
दाहिन॥ देषत गरव रहत उर नाहिन॥ देषहु कस न जाइ सव सोभा॥ जो अवलोकि मो
र मनु छोभा॥ पूतु विदेस न सोचु तुम्हारें॥ जानति हहु वस नाहु हमारें॥ नीद वहुत प्रिय से
ज तुराई॥ लषहु न भूप कपट चतुराई॥ सुनि प्रिय वचन मलिन मनु जानी॥ झुकी रानि अ
व रहु अरगानी॥ पुनि अस कवहु कहसि घरफोरी॥ तव धरि जीभ कढावौं तोरी॥ दोहा॥ का
ने षोरे कूवरे कुटिल कुचाली जानि॥ तिय विशेषि पुनि चेरि कहि भरत मातु मुसकानि

१४ ॥ प्रियबादिनि सिष दीन्हिउँ तोही ॥ सपनेहुँ तो पर कोपु न मोही ॥ सुदिनु सुमंगल दा
यकु सोई ॥ तोर कहा फुर जेहि दिन होई ॥ जेठ स्वामि सेवक लघु भाई ॥ यह दिनकर कुल
रीति सोहाई ॥ राम तिलकु जौं साचेहुँ काली ॥ देउँ मागु मन भावत आली ॥ कौसल्या सम
सब महतारी ॥ रामहि सहज सुभाय पिआरी ॥ मो पर करहिं सनेहु विशेषी ॥ मै करि प्री
ति परीछा देषी ॥ जौं विधि जनमु देइ करि छोहू ॥ होहुँ राम सिय पूत पुतोहू ॥ प्रान तें अधिक
रामु प्रिय मोरे ॥ तिन्ह के तिलक छोभु कस तोरे ॥ दोहा ॥ भरत सपथ तोहि सत्य कहु परि
हरि कपट दुराउ ॥ १५ ॥ एकहि बार आस सब पूजी ॥ अब कछु कहब जीभ करि दूजी ॥ फो
रइ जोगु कपारु अभागा ॥ भलेउ कहत दुष रौरेहि लागा ॥ कहहिं झूठि फुरि बात बनाई ॥
ते प्रिय तुम्हहि करुइ मै माई ॥ हमहुँ कहबि अब ठकुरसोहाती ॥ नाहित मौन रहब दिन
हरष समय विसमउ करसि कारन मोहि सुनाउ

श्री रानी॥ करि कुरूप विधि परवस कीन्हा॥ वुवा सो लुनिय लहिय जो दीन्हा॥ कोउ नृप होउ ह
७ महिं का हानी॥ चेरि छाडि अब होब कि रानी॥ जारइ जोगु सुभाउ हमारा॥ अनभल देखि न
जाइ तुम्हारा॥ तातें कछुक बात अनुसारी॥ छमिय देवि वडि चूक हमारी॥ गूढ कपट प्रि दो०
य वचन सुनि तीय अधर वुधि रानि॥ सुरमाया वस वैरिनिहि सुहृद जानि पतियानि॥
१६॥ सादर पुनि पुनि पूछति ओही॥ सवरी गान मृगी जनु मोही॥ तसि मति फिरी अहइ
जसि भावी॥ रहसी चेरि घात जनु फावी॥ तुम्ह पूछहु मैं कहत डेराऊं॥ धरेउ मोर घरफो
रीनाऊं॥ सजि प्रतीति वहुविधि गढि छोली॥ अवध साढसाती तव वोली॥ प्रिय सिय रामु
कहा तुम्ह रानी॥ रामहि तुम्ह प्रिय सो फुरि वानी॥ रहा प्रथम अव ते दिन वीते॥ समउ फि ७
रें रिपु होहिं पिरीते॥ भानु कमल कुल पोषनिहारा॥ विनु जल जारि करै सोइ छारा॥ जर

तुम्हारि चह सवति उषारी॥ रूँधहु करि उपाउ बर बारी॥ दोहा॥ तुम्हहि न सोच सोहाग ब
ल निज बस जानहु राउ॥ मन मलीन मुह मीठ न्रप राउर सरल सुभाउ॥१७॥ चतुर गं
भीर राम महतारी॥ बीचु पाइ निज बात सँवारी॥ पठए भरत भूप ननिऔरे॥ राम मातु म
त जानब रौरे॥ सेवहिं सकल सवति मोहि नीके॥ गरबित भरत मातु बल पी के॥ सालु तुम्हा
र कौसिलहि माई॥ कपट चतुर नहि होइ जनाई॥ राजहि तुम्ह पर प्रेमु बिसेषी॥ सवति
सुभाउ सकइ नहि देषी॥ रचि प्रपंच भूपहि अपनाई॥ राम तिलक हित लगन धराई॥
यह कुल उचित राम कहु टीका॥ सबहि सुहाइ मोहि सुठि नीका॥ आगिलि बात समुझि
डरु मोही॥ देउ देउ फिरि सो फलु ओही॥ दोहा॥ रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि क
पट प्रबोधु॥ कहिसि कथा सत सवति कै जेहि बिधि बाढु बिरोधु॥१८॥ भावी बस प्रतीति उ

अ॰ रआई॥ पूछें रानि पुनि सपथ देवाई॥ का पूछहु तुम्ह अबहुँ न जाना॥ निज हित अनहि
८ त पसु पहिचाना॥ भएउ पाष दिन सजत समाजू॥ तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू॥ षा
इअ पहिरिअ राज तुम्हारें॥ सत्य कहें नहि दोषु हमारें॥ जौं असत्य कछु कहब बनाई॥
तौ बिधि देइहि हमहि सजाई॥ रामहि तिलक कालि जौं भएऊ॥ तुम्ह कहुँ बिपति बीजु बि
धि बएऊ॥ रेष षचाइ कहउँ बल भाषी॥ भामिनि भइहु दूध कइ माषी॥ जौं सुत सहित
करहु सेवकाई॥ तौ घर रहहु न आन उपाई॥ दोहा॥ कद्रू बिनतहि दीन्ह दुष तुम्हहि कौ
सिला देव॥ भरतु बंदिगृह सेइहहि लषनु राम के नेब॥ १९॥ कैकय सुता सुनत कटु बानी॥
कहि न सकइ कछु सहमि सुषानी॥ तन पसेउ कदली जिमि काँपी॥ कुबरी दशन जीभ तब ८
चाँपी॥ कहि कहि कोटिक कपट कहानी॥ धीरजु धरहु प्रबोधेसि रानी॥ फिरा करमु प्रिय ला

गिकुचाली॥ बकिहि सराहइ मानि मराली॥ सुनु मंथरा बात फुरि तोरी॥ दहिनि आँषि नित
फरकइ मोरी॥ दिन प्रति देषउँ राति कुसपने॥ कहउँ न तोहि मोह बस अपने॥ का करौं सषि
सूध सुभाउ॥ दाहिन बाम न जानउँ काउ॥ दोहा॥ अपने चलत न आजु लगि अनभल
काहुक कीन्ह॥ केहि अघ एकहि बार मोहि दैव दुसह दुष दीन्ह॥ २०॥ नैहर जन्म भरब बरु
जाइ॥ जियत न करबि सवति सेवकाइ॥ अरि बस दैव जिआवत जाही॥ मरनु नीक
तेहि जीवन चाही॥ दीन बचन कह बहुबिधि रानी॥ सुनि कुबरी तियमाया ठानी॥ अस क
स कहहु मानि मन ऊना॥ सुष सुहागु तुम्ह कहु दिन दूना॥ जेहि राउर अति अनभल ता
का॥ सोइ पाइहि यहु फलु परिपाका॥ जब ते कुमत सुना मै स्वामिनि॥ भूष न बासर नींद न जा
मिनि॥ पूछेउँ गुनिन्ह रेष तिन्ह षाँची॥ भरतु भुआल होहि यह साँची॥ भामिनि करहु त कहौं

अ॰ उपाउ॥ हेतुम्हरी सेवावसराउ॥ दोहा॥ः परौंकूपतववचनपरसकौंपूतपतित्यागि॥ कहसि
८ मोरदुखदेखिवडकसनकरवहितलागि॥२१॥ कुवरींकरिकवुलीकैकेई॥ कपटछुरीउरपा
हनटेई॥ लखइनरानिनिकटदुखकैसे॥ चरइहरिततिनवलिपसुजैसे॥ सुनतवातमृदु
अंतकठोरी॥ देतिमनहुमधुमाहुरघोरी॥ कहइचेरिसुधिअहइकिनाहीं॥ स्वामिनिकहि
हुकथामोहिपाहीं॥ दुइवरदानभूपसनथाती॥ मागहुआजुजुडावहुछाती॥ सुतहिरा
जुरामहिवनवासू॥ देहुलेहुसवसवतिहुलासू॥ भूपतिरामसपथजवकरई॥ तवमागेहु
जेहिवचनुनटरई॥ होइअकाजुआजुनिसिवीते॥ वचनुमोरप्रियमानेहुजीते॥ दोहा॥ः वड
कुघातुकरिपातकिनिकेहसिकोपगृहजाहु॥ काजुसवारेहुसजगसवुसहसाजनिपति ८
आहु॥२२॥ कुवरिहिरानिप्रानप्रियजानी॥ वारवारवडिवुद्धिवखानी॥ तोहिसमहितुनमो

रसंसारा॥ रहे जान कइ भइ सिर धारा॥ जौं विधि पुरब मनोरथु काली॥ करौं तोहि चष पू
तरि आली॥ बहु विधि चेरिहि आदरु देई॥ कोपभवन गवनी कैकेई॥ विपति बीजु बरषा
रितु चेरी॥ भुइ भइ कुमति कैकेई केरी॥ पाइ कपट जलु अंकुर जामा॥ बर दोउ दल दुष फल
परिनामा॥ कोपसमाजु साजि सब सोई॥ राजु करत निज कुमति विगोई॥ राउर नगर कुलाह
लु होई॥ यह कुचालि कछु जान न कोई॥ दोहा॥ प्रमुदित पुर नर नारि सब सजहिं सुमंगल
चार॥ एक प्रविसहि एक निर्गमहि भीर भूप दरबार॥ २३॥ बालसषा सुनि हियँ हरषाहीं
मिलि दस पाँच राम पहि जाहीं॥ प्रभु आदरहि प्रेमु पहिचानी॥ पूँछहि कुसल षेम मृदु बा
नी॥ फिरहिं भवन प्रिय आयसु पाई॥ करत परसपर राम बडाई॥ को रघुबीर सरिस संसारा
सील सनेह निवाहनिहारा॥ जेहि जेहि जोनि करम बस भ्रमहीं॥ तहँ तहँ ईसु देउ यह हम

अ० १० हों ॥ सेवक हम स्वामी सियनाह ॥ हो उ नात यह ओर निवाह ॥ अस अभिलाष नगर सब का
ह ॥ कैकेसुता हृदय अति दाह ॥ कोतकु संगति पाइ न साई ॥ रहै न नीच मतै चतुराई ॥ दो
हा ॥ सांझ समय सानंद नृप गयो कैकई गेह ॥ गवनु निठुरता निकट कियजनु धरि देह
सनेह ॥ २४ ॥ कोपभवन सुनि सकुचे रा उ ॥ भय बस अगहुड़ परै न पा उ ॥ सुरपति बसइ बा
ह बल जाके ॥ नरपति सकल रहहिं रुख ताके ॥ सो सुनि तिय रिस गयउ सुखाई ॥ देखहु काम
प्रताप बड़ाई ॥ सूल कुलिस असि अंगवनि हारे ॥ ते रतिनाथ सुमन सर मारे ॥ सभय नरेस
प्रिया पहिं गयऊ ॥ देखि दसा दुख दारुन भयऊ ॥ भूमि सयन पट मोट पुराना ॥ दिए डारि
तन भूषन नाना ॥ कुमतिहि कस कुवेषता फावी ॥ अन अहिवात सूच जनु भावी ॥ जाइ नि १०
कट नृप कह मृदु बानी ॥ प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी ॥ छंद ॥ केहि हेतु रानि रिसानि

परसतपानिपतिहिनिवारई॥मानहुसरोषभुवंगभामिनिविषमभाँतिनिहारई॥दो
उवासनारसनादसनवरमरमठाहरुदेषई॥तुलसीन्टपतिभवतव्यताबसकामकौतु
कलेषई॥सोरठा॥बारबारकहराउसुमुषिसुलोचनिपिकबचनि॥कारनमोहिसुनाउ
गजगामिनिनिजकोपकर॥२५॥अनहिततोरप्रियाकेइँकीन्हा॥केहिदुइसिरकेहिज
मुचहलीन्हा॥कहुकेहिरंकहिकरौंनरेसू॥कहुकेहिन्टपहिनिकासउँदेसू॥सकौंतोर
व अरिअमरौमारी॥काहकीटपुरेनरनारी॥जानसिमोरसुभाउबरोरू॥मनुतवआननचं
दचकोरू॥प्रियाप्रानसुतसरबसमोरे॥परिजनप्रजासकलबसतोरे॥जौंकछुकहउँकपट
करितोही॥भामिनिरामसपथसतमोही॥बिहसिमागुमनभावतिवाता॥भूषनसजहि
मनोहरगाता॥घरीकुघरीसमुझिजियदेषू॥बेगिप्रियापरिहरहिकुवेषू॥दोहा॥यहसु

अ॰ ११ निमनगुनिसपथवडिविहसिउठीमतिमंद॥भूषनसजतिविलोकिम्रगुमनहुकिराति
निफंद॥२६॥पुनिकहराउसुहृदजियजानी॥प्रेमपुलकिम्रदुमंजुलवानी॥भामिनिभय
उतोरमनभावा॥घरघरनगरअनंदवधावा॥रामहिदेउंकालिजुवराजू॥सजहिंसुलो
चनिमंगलसाजू॥दलकिउठेउसुनिहृदयकठोरू॥जनुछुइगएउपाकवरतोरू॥ऐसि
उपीरविहसितेइगोई॥चोरनारिजिमिप्रगटनरोई॥जद्यपिनीतिनिपुननरनाहू॥ना
रिचरितजलनिधिअवगाहू॥कपटसनेहवढाइवहोरी॥वोलीविहसिनयनमुहमोरी॥
दोहा॥: मांगुमांगुपैकहहुपियकवहुनदेहुनलेहु॥देनकहेहुवरदानदुइतेउपावत
संदेहु॥२७॥जानेउमरमुराउहंसिकहई॥तुम्हहिकोहावपरमप्रियअहई॥थातीरा ११
खिनमांगिहुकाऊ॥विसरिगयोमोहिभोरसुभाऊ॥झूठेहुहमहिदोसजनिदेहू॥दुइके

चारि मागि मकु लेहु॥ रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई॥ नहि
असत्य सम पातक पुंजा॥ गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा॥ सत्य मूल सब सुकृत सुहाए
बेद पुरान बिदित मुनि गाए॥ तेहि पर राम सपथ करि आई॥ सुकृत सनेह अवधि रघु
राई॥ बात दिढाइ कुमति हसि बोली॥ कुमत कुबिहग कुलह जनु षोली॥ दोहा॥ भूप
मनोरथ सुभग बनु सुष सुबिहंग समाजु॥ भिल्लिनि जिमि छाडन चहति बचनु भयंक
र बाजु॥ २९॥ सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का॥ देहु एक बर भरतहि टीका॥ मांगौं दूसर बर
कर जोरी॥ पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी॥ तापस बेष बिसेषि उदासी॥ चौदह बरिस राम ब
न बासी॥ सुनि मृदु बचन भूप हिय सोकू॥ ससि कर छुअत बिकल जिमि कोकू॥ गयउ
सहमि नहि कछु कहि आवा॥ जनु सचान बन झपटेउ लावा॥ बिबरन भयउ निपट

अ॰ नरपालू॥दामिनिहनेउमनहुँतरुतालू॥माथेहाथमूँदिदोउलोचन॥तनुधरिसोच
१२ लागजनुसोचन॥मोरमनोरथसुरतरुफूला॥फरतकरिनिजिमिहतेउसमूला॥अव
धउजारिकीन्हकेकेई॥दीन्हेसिअचलविपतिकैनेई॥दोहा॥कवनेअवसरकाभए
उगयोनारिविस्वास॥जोगसिद्धिफलसमयजिमिजतिहिअविद्यानास॥२९॥एहि
विधिराउमनहिमनझाषा॥देषिकुभाँतिकुमतिमनमाषा॥भरतुकिराउरपूतन
होहीं॥आनेहुमोलविसाहिकिमोहीं॥जोसुनिसरअसलागतुम्हारें॥काहेनबोलहु
वचनुसँभारे॥देहुउतरुअरुकरहुकिनाहीं॥सत्यसंधतुम्हरघुकुलमाहीं॥देनकहे
हुअवजनिवरुदेहू॥तजहुसत्यजगअपजसलेहू॥सत्यसराहिकहेहुवरुदेना॥जा १२
नेउलेइहिमागिचवेना॥सिविदधीचिवलिजोकछुभाषा॥तनुधनुतजेउवचनुप

नुराया॥ अनिकटुवचनकहतिकेकेई॥ मानहुँलोनजरेपरदेई॥ दोहा॥ धरमधुरंध
२ रधीरधरिनयनउघारेराय॥ सिरधुनिलीन्हिउसासअसिमारेसिमोहिकुठाय॥ ३०॥
आगेदीखिजरतरिसभारी॥ मनहुरोषतरवारिउघारी॥ मूठिकुबुद्धिधारनिठुराई॥ ध
रीकुवरीसानवनाई॥ लखीमहीपकरालकठोरा॥ सत्यकिजीवनुलेइहिमोरा॥ वोले
राउकठिनकरिछाती॥ वानीसविनयतासुसोहाती॥ प्रियावचनकसकहसिकुभां
ती॥ भीरुप्रतीतिप्रीतिकरिहांती॥ मोरेभरतुरामुदुइआंखी॥ सत्यकहउँकरिसंकरु
साखी॥ अवसिदूतमेपठउवप्राता॥ ऐहहिवेगिसुननदोउभ्राता॥ सुदिनसोधिसवु
साजसजाई॥ देउँभरतकहराजुवजाई॥ दोहा॥ लोभुनरामहिराजकरवहुतभरतप
रप्रीति॥ मैवडछोटविचारिजियकरतरहेउँनृपनीति॥ ३१॥ रामसपथसतकहउँ

सुभाउ॥ राम मातु कछु कहेउ न काउ॥ मैं सब कीन्ह तोहि बिनु पूछे॥ तेहि तें परेउ मनोर
अ० १३ थ छूछे॥ रिस परिहरु अब मंगल साजू॥ कछु दिन गए भरत जुबराजू॥ एकहि बात मो
हि दुख लागा॥ बर दूसर असमंजस मागा॥ अजहूँ हृदय जरत तेहि आँचा॥ रिस परिहा
स कि साँचेहु साचा॥ कहु तजि रोष राम अपराधू॥ सब कोउ कहइ राम सुठि साधू॥ तुहूँ स
राहसि करसि सनेहू॥ अब सुनि मोहि भयउ संदेहू॥ जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला॥ सो
किमि करिहि मातु प्रतिकूला॥ दोहा॥ प्रिया हास रिस परिहरहि मागु बिचारि बिबेकु॥ जे
हि देखौं अब नयन भरि भरत राज अभिषेकु॥ ३१॥ जिऐ मीन बरु बारि बिहीना॥ मनि
बिनु फनिकु जिऐ दुख दीना॥ कहउँ सुभाउ न छल मन माहीं॥ जीवन मोर राम बिनु ना १३
हीं॥ समुझि देखु जिय प्रिया प्रबीना॥ जीवनु राम दरस आधीना॥ सुनि मृदु बचन कुमति

अतिजरई॥ मनहुअनलआहुतिघृतपरई॥ कहहुकरहुकिनकोटिउपाया॥ इहा
नलागिहिराउरिमाया॥ देहुकिलेहुअजसुकरिनाहीं॥ मोहिनबहुतप्रपंचसोहाहीं
रामसाधुतुम्हसाधुसयाने॥ राममातुभलिसबपहिचाने॥ जसकोसिलामोरभलताता
का॥ तसफलुउन्हहिदेउँकरिसाका॥ दोहा॥ होतप्रातमुनिबेषुधरिजोनरामबनजा
हिं॥ मोरमरनुराउरअजसुनृपसमुझियमनुमांहि॥ ३३॥ असकहिकुटिलभईउठि
ठाढी॥ मानहुरोषतरंगिनिबाढी॥ पापपहारप्रगटभइसोई॥ भरीक्रोधजलजाइनजो
ई॥ दोउबरकूलकठिनहठधारा॥ भवरकूबरीबचनप्रचारा॥ ढाहतभूपरूपतरुमूला॥
चलीबिपतिबारिधिअनकूला॥ लषीनरेसबाततसबसांची॥ तियमिसमीचुसीसपरनां
ची॥ गहिपदबिनयकीन्हिबैठारी॥ जनिदिनकरकुलहोसिकुठारी॥ मागुमाथअबही

अ० २४ देउ तोही ॥ राम बिरह जनि मारसि मोही ॥ राखु राम कहुँ जेहि तेहि भाँती ॥ नाहि त जरिहि जनम
२४ भरि छाती ॥ दोहा ॥ देखी ब्याधि असाधि नृपु परेउ धरनि धुनि माथ ॥ कहत परम आरत ब
चन राम राम रघुनाथ ॥ ३४ ॥ ब्याकुल राउ सिथिल सब गाता ॥ करिनि कलपतरु मनहुँ नि
पाता ॥ कंठु सूख मुख आव न बानी ॥ जनु पाठीनु दीनु बिनु पानी ॥ पुनि कह कटु कठोर
कैकेई ॥ मनहुँ घाय महुँ माहुर देई ॥ जौं अंतहु अस करतबु रहेऊ ॥ मागु मागु तुम्ह के
हिं बल कहेऊ ॥ दुइ कि होहिं एक समय भुआला ॥ हँसब ठठाइ फुलाउब गाला ॥ दा
नि कहाउब अरु कृपनाई ॥ होइ कि खेम कुसल रौताई ॥ छाडहु बचनु कि धीरजु धरहू ॥
जनि अबला जिमि करुना करहू ॥ तनु तिय तनय धामु धनु धरनी ॥ सत्यसंध कहुँ तृन २४
सम बरनी ॥ दोहा ॥ मरम बचन सुनि राउ कह कहु कछु दोषु न तोर ॥ लागेउ तोहि पिसा

चजिमिकालु कहावनमोरा॥ ३४॥ रहतननभरतभूपनहिभोरें॥ विधिवसकुमतिवसी
जियतोरें॥ सोसवमोरपापपरिनामू॥ भयउकुठाहरजेंहिविधिवामू॥ सुवसवसिहिफि
रिअवधसुहाई॥ सवगुनधामरामप्रभुताई॥ करिहहिंभाइसकलसेवकाई॥ होइहि
तिहुपुररामवडाई॥ तोरकलंकुमोरपछिताऊ॥ मुएहुनमिटिहिनजाइहिकाऊ॥ अ
वतोहिनीकलागकरुसोई॥ लोचनओटवैठुमुहुगोई॥ जवलगिजिऔंकहउँकरजोरी
तवलगिजनिकछुकहसिवहोरी॥ फिरिपछितैहसिअंतअभागी॥ मारसिगाइनहारु
हिलागी॥ दोहा॥ परेउराउकहिकोटिविधिकाहेकरसिनिदानु॥ कपटसयानिनकह
तिकछुजागतिमनहुमसानु॥ ३५॥ रामरामरटविकलभुआलू॥ जनुविनुपंखविहंगवि २
हालू॥ हृदयमनावभोरजनिहोई॥ रामहिजाइकहइजनिकोई॥ उदउकरहुजनि

अ०
२५

रविरघुकुलगुर॥ अवधविलोकिसूलहोइहिअ॥ भूपप्रीतिकैकेइकठिनाई॥ उभय
अवधिविधिरचीवनाई॥ विलपतन्रपहिभए‍उभिनुसारा॥ वीनावेनुसंखधुनिद्वारा॥
पढहिंभाटगुनगावहिंगायक॥ सुनतन्रपहिजनुलागहिंसायक॥ मंगलसकलसो
हाहिंनकैसे॥ सहगामिनिहिविभूषनजैसे॥ तेहिनिसिनींदपरीनहिकाहू॥ रामदरस
लालसाउछाहू॥ दोहा॥ द्वारभीरसेवकसचिवकहहिंउदितरविदेखि॥ जागेउअजहुं
नअवधपतिकारनुकवनुविशेषि॥ ३७॥ पछिलेपहरभूपनितजागा॥ आजुहमहिंव
डअचरजुलागा॥ जाहुसुमंत्रजगावहुजाई॥ कीजियकाजुरजायसुपाई॥ गएसुमंत्रुत
वराउरमाहीं॥ देखिभयावनजातडेराहीं॥ धाइखाइजनुजाइनहेरा॥ मानहुविपतिवि २५
षादवसेरा॥ पूछेकोउनऊतरुदेई॥ गयेजेहिभवनभूपकैकेई॥ कहिजयजीवबैठसि

रनाई॥ देषिभूपगतिगयउसुषाई॥ सोचविकलविवरनमहिपरेउ॥ मानहुकमलमूल
परिहरेउ॥ सचिवसभीतसकैनहिपूछी॥ वोलीअसुभभरीसुभछूछी॥ दोहा॥ परीनराज
हिनींदनिसिहेतुजानजगदीसु॥ रामुरामुरटिभोरुकियकहइनमरमुमहीसु॥ ३८॥ आ
नहुरामहिवेगिवोलाई॥ समाचारतवपूछेहुआई॥ चलेउसुमंत्रुरायरुषजानी॥ लषी
कुचालिकीन्हिकछुरानी॥ सोचविकलमगपरइनपाउ॥ रामहिवोलिकहिहिकाराउ॥
उरधरिधीरजुगयउदुआरे॥ पूछहिसकलदेषिमनुमारे॥ समाधानुकरिसोसवहीका
गयउजहांदिनकरकुलटीका॥ रामसुमंत्रहिआवतदेषा॥ आदरुकीन्हपितासमले
षा॥ निरषिवदनुकहिभूपरजाई॥ रघुकुलदीपहिचलेउलेवाई॥ रामकुभांतिसचिवसंग
जाहीं॥ देषिलोगजंहतंहविलषाहीं॥ दोहा॥ जाइदीषरघुवंसमनिनरपतिनिपटकु

श्री०
९६

साजु॥ सहमि परेउ लषि सिंघिनिहि मनहु व्रद्ध गजराजु॥३९॥ सूषहि अधर जरइ स
व अंगू॥ मनहु दीन मनिहीन भुअंगू॥ सरुष समीप दीषि कैकेई॥ मानहु मीचु घरी ग
नि लेई॥ करुनामय मृदु राम सुभाऊ॥ प्रथम दीष दुषु सुना न काऊ॥ तदपि धीर धरि सम
उ विचारी॥ पूछी मधुर वचन महतारी॥ मोहि कहु मातु तात दुषु कारनु॥ करिय जतनु जेहि हो
इ निवारनु॥ सुनहु राम सबु कारन एहू॥ राजहि तुम्ह पर बहुत सनेहू॥ देन कहेन्हि मोहि दु
इ वरदाना॥ मागेउँ जो कछु मोहि सुहाना॥ सो सुनि भयउ भूप उर सोचू॥ छाडि न सकहि
तुम्हार सकोचू॥ दोहा॥ सुत सनेह इत वचन उत संकट परेउ नरेसु॥ सकहु न आयसु धरहु
सिर मेटहु कठिन कलेसु॥४०॥ निधरक बैठि कहै कटु बानी॥ सुनत कठिनता अति अकुला ९६
नी॥ जीभ कमान वचन सर नाना॥ मनहु महिप मृदु लक्ष समाना॥ जनु कठोरपनु धरे

सरीरु॥ सिय इधनुष बिद्यावरबीरु॥ सबु प्रसंग रघुपतिहि सुनाई॥ बैठि मनहुँ तनु धरि नि
ठुराई॥ मन मुसुकाइ भानुकुल भानू॥ रामु सहज आनंद निधानू॥ बोले बचन बिगत स
बदूषन॥ मृदु मंजुल जनु बाग बिभूषन॥ सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी॥ जो पितु मातु ब
चन अनुरागी॥ तनय मातु पितु तोषनिहारा॥ दुर्लभ जननि सकल संसारा॥ दोहा॥ मुनिग
न मिलनु बिशेषि बन सबहि भाँति हित मोर॥ तहि पर पितु आयसु बहुरि संमत जननी तो
र॥४१॥ भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू॥ बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजू॥ जौं न जाउँ बन ऐसे
हु काजा॥ प्रथम गनिय मोहि मूढ़ समाजा॥ सेवहिं अरँडु कलपतरु त्यागी॥ परिहरि अमृ
त लेहिं बिष मागी॥ तेउ न पाइ अस समउ चुकाहीं॥ देखु बिचारि मातु मन माहीं॥ अंब एक
दुखु मोहि बिशेषी॥ निपट बिकल नरनायकु देखी॥ थोरिहि बात पितहि दुख भारी॥ हो

अ० १७

नि पूछी तिन मोहि महतारी॥ राउ धीर गुन उदधि अगाधू॥ भा मोहि तें कछु बड अपराधू
जातें मोहि न कहत कछु राऊ॥ मोरि सपथ तोहि कहु सतिभाऊ॥ दोहा॥ सहज सरल रघु
बर बचन कुमति कुटिल करि जान॥ चलइ जोंक जल बक्रगति जद्यपि सलिलु समान॥४२॥
रहसी रानि राम रुख पाई॥ बोली कपट सनेहु जनाई॥ सपथ तुम्हार भरत कइ आना॥ हे
तु न दूसर मैं कछु जाना॥ तुम्ह अपराध जोगु नहि ताता॥ जननी जनक बंधु सुखदाता॥
राम सत्य सबु जो कछु कहहू॥ तुम्ह पितु मातु बचन रत अहहू॥ पितहि बुझाइ कहहु बलि
सोई॥ चौथेंपन जेहि अजसु न होई॥ तुम्ह सम सुवन सुकृत जेहि दीन्हे॥ उचित न तासु
निरादरु कीन्हे॥ लागहिं कुमुख बचन सुभ कैसे॥ मगह गयादिक तीरथ जैसे॥ रामै
हि मातु बचन सब भाए॥ जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाए॥ दोहा॥ गइ मुरुछा रामहि १७

सुमिरि न्रप फिरि करवट लीन्हि॥ सचिव राम आगमनु कहि बिनय समय सम कीन्हि
॥४३॥ अवनिप अकनि रामु पगु धारे॥ धरि धीरजु तब नैन उघारे॥ सचिव सँभारि राउ बैठा
रे॥ चरन परत न्रप रामु निहारे॥ लिए सनेह बिकल उर लाई॥ गइ मनि मनहु फनिक
फिरि पाई॥ रामहि चितइ रहेउ नरनाहू॥ चला बिलोचन बारि प्रवाहू॥ सोक बिबस कछु
कहइ न पारा॥ हृदय लगावत बारहि बारा॥ बिधिहि मनाउ राउ मन माही॥ जेहि रघु
नाथु न कानन जाही॥ सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी॥ बिनती सुनहु सदाशिव मोरी॥
आसुतोष तुम्ह अवढर दानी॥ आरति हरहु दीन जनु जानी॥ दोहा॥ तुम्ह प्रेरक सब के
हृदय सो मति रामहि देहु॥ बचनु मोर तजि रहहि घर परिहरि सील सनेहु॥४४॥ अज
सु होउ जग सुजसु नसाउ॥ नरक परौ बरु सुरपुर जाउ॥ सब दुख दुसह सहावहु मोही

अ० लोचन वोट राम जनि होही॥ अस मन गुनइ राउ नहि वोला॥ पीपर पात सरिस मनु डोला॥
१८ रघुपति पितहि प्रेमवस जानी॥ पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी॥ देस काल अवसर अ-
नुसारी॥ वोले वचन विनीत विचारी॥ तात कहौं कछु करौं ढिठाई॥ अनुचितु छमव जानि
लरिकाई॥ अति लघु वात लागि दुख पावा॥ काहु न मोहि कहि प्रथम जनावा॥ देखि गो-
साइँहि पूछिउँ माता॥ सुनि प्रसंगु भए सीतल गाता॥ दोहा॥ मंगल समय सनेह वस सो-
च परिहरिय तात॥ आयसु देइअ हरषि हिय कहि पुलके प्रभु गात॥ ४५॥ धन्य जनमु ज-
गतीतल तासू॥ पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू॥ चारि पदारथ करतल ताके॥ प्रिय पितु
मातु प्रान सम जाके॥ आयसु पालि जनम फलु पाई॥ ऐहौं वेगिहिं होउ रजाई॥ विदा मा- १८
तु सन आवौं मागी॥ चलिहौं वनहि वहुरि पग लागी॥ अस कहि राम गवनु तव कीन्हा॥ भू-

पसोक बस उतरु न दीन्हा॥ नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी॥ छुअत चढी जनु सब तन बीछी॥
सुनि भये बिकल सकल नर नारी॥ बेलि बिटप जिमि देषि दवारी॥ जो जहं सुनइ धुनइ सिर
सोई॥ बड बिषादु नहि धीरज होई॥ दोहा॥ मुष सुषाहिं लोचन स्रवहिं सोकु न हृदय स
माइ॥ मनहु करुन रस कटकई उतरी अवध बजाइ॥४६॥ मिलेहि माझ बिधि बात बिगा
री॥ जहं तहं देहि कैकइहि गारी॥ येहि पापिनिहि बूझि का परेऊ॥ छाइ भवन पर पाव
कु धरेऊ॥ निज कर नयन काढि चह दीषा॥ डारि सुधा बिषु चाहत चीषा॥ कुटिल कठोर
कुबुद्धि अभागी॥ भइ रघुबंस बेनु बन आगी॥ पालव बैठि पेडु येहि काटा॥ सुष महु सोक
ठाटु धरि ठाटा॥ सदा राम येहि प्रान समाना॥ कारन कवन कुटिलपनु ठाना॥ सत्य कह
हिं कबि नारि सुभाऊ॥ सब बिधि अगमु अगाध दुराऊ॥ निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जाई॥

अ० जानिनजाइनारिगतिभाई॥दोहा॥:काहनपावकुजारिसककानसमुद्रसमाइ॥का
१८ नकरैअबलाप्रबलकेहिजगकालुनषाइ॥४७॥कासुनाइविधिकाहसुनावा॥कादे
षाइचहकाहदेषावा॥एककहहिभलुभूपनकीन्हा॥वरुविचारिनहिकुमतिहिदी
न्हा॥जोहठिभएउसकलदुषभाजनु॥अवलाविवसज्ञानगुनगाजनु॥एकधरमपर
मितिपहिचाने॥न्रपहिदोसुनहिदेहिसयाने॥सिविदधीचहरिचंदकहानी॥एक
एकसनकहहिंवषानी॥एकभरतकरसंमतकहहीं॥एकउदासभायसुनिरहहीं
कानमूदिकररदगहिजीहा॥एककहहिंयहवातअलीहा॥सुकृतजांहिअसकहत
तुम्हारे॥रामुभरतकहुंप्रानपिआरे॥दोहा॥चंदचवइवरुअनलकनसुधाहोइविषतूल॥स १८
पनेहुकवहुनकरहिकछुभरतुरामुप्रतिकूल॥४८॥एकविधातहिदूषनदेहीं॥सुधादे

षाइ दीन्ह बिषय जेहीं॥ सब भए नगर सोचु सब काहू॥ दुसह दाह उर मिटा उछाहू॥ विप्र
बधू कुलमान्य जठेरी॥ जे प्रिय परम कैकई केरी॥ लगीं देन सिष सीलु सराही॥ बचन बा
न सम लागहिं ताही॥ भरतु न मोहि प्रिय राम समाना॥ सदा कहहु यहु सबु जगु जाना॥
करहु राम पर सहज सनेहू॥ केहिं अपराध आजु बनु देहू॥ कबहुँ न कियहु सवति आरेसू॥
प्रीति प्रतीति जान सबु देसू॥ कौसल्याँ अब काह बिगारा॥ तुम्ह जेहि लागि बज्र पुर पारा॥
दोहा॥ सीय कि पिय सँगु परिहरिहि लषनु कि रहिहहिं धाम॥ राजु कि भूँजब भरत पुर
नृपु कि जिइहि बिनु राम॥४९॥ अस बिचारि उर छाड़हु कोहू॥ सोक कलंक कोठि जनि
होहू॥ भरतहि अवसि देहु जुबराजू॥ कानन काह राम कर काजू॥ नाहिन रामु राज के भू
षे॥ धरम धुरीन बिषय रस रूषे॥ गुर गृह बसहुँ रामु तजि गेहू॥ नृप सन अस बरु दूसर ले

श्र० ४०

हू॥जौंनहिलगिहहुकहेहमोरें॥नहिलागिहिकछुहाथतुम्हारें॥जौंपरिहासकीन्हिक
छुहोई॥तौकहिप्रगटजनावहुसोई॥रामसरिससुतकाननजोगू॥काहकहिहिसुनितु
म्हकहंलोगू॥उठहुवेगिसोइकरहुउपाई॥जेहिविधिशोकुकलंकुनसाई॥छंद॥जेहिभां
तिसोकुकलंकुजाइउपाइकरिकुलपालही॥हठिफेरुरामहिजातवनजनिवातदूस
रिचालहीं॥जिमिभानुबिनुदिनुप्रानबिनुतनुचंदबिनुजिमिजामिनी॥तिमिअवधतुल
सीदासप्रभुबिनुसमुझिधौंजियभामिनी॥सोरठा॥सषिन्हसिषावनदीन्हसुनतमधुरप
रिनामहित॥तेहिकछुकाननकीन्हकुटिलप्रबोधीकूवरी॥५०॥उतरुनदेइदुसहरि
सरूषी॥मृगिन्हचितवजनुवाघिनिभूषी॥व्याधिअसाधिजानितिन्हत्यागी॥चलींकहत ४०
तमतिमंदअभागी॥राजुकरततयहदैवविगोई॥कीन्हेसिअसजसकरइनकोई॥एहिवि

धि बिलपहिं पुरनरनारी॥ देहिं कुचालिहि कोटिक गारी॥ जरहिं बिषम ज्वर लेहिं उसासा २
कवनि राम बिनु जीवन आसा॥ बिपुल बियोग प्रजा अकुलानी॥ जनु जलचरगन सूषत
पानी॥ अति बिषाद बस लोग लोगाईं॥ गए मातु पहिं रामु गोसाईं॥ मुष प्रसन्न चित चौगु
न चाऊ॥ दुहै सोचु जनि राषै राऊ॥ दोहा॥ नव गयंद रघुबीर मनु राजु अलान समान॥ छू
ट जानि बन गवनु सुनि उर अनंदु अधिकान॥ ५१॥ रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाथा॥ मु
दित मातु पद नाएउ माथा॥ दीन्हि असीस लाइ उर लीन्हे॥ भूषन बसन निछावरि कीन्हे
बार बार मुष चुंबति माता॥ नयन नेह जलु पुलकित गाता॥ गोद राषि पुनि हृदय लगाए॥
स्रवत प्रेमरस पयद सुहाए॥ प्रेम प्रमोदु न कछु कहि जाई॥ रंक धनद पदवी जनु पाई॥ १
सादर सुंदर बदनु निहारी॥ बोली मधुर बचन महतारी॥ कहहु तात जननी बलिहारी॥ क

वहिलगनमुदमंगलकारी॥सुकृतसीलसुखसीवँसुहाई॥जन्मलाभकइअवधिअघा
श्री० ई॥दोहा॥जेहिचाहतनरनारिसवअतिआरतएहिभाँति॥जिमिचातकचातकितृषितवृ
२१ ष्टिसरदरितुस्वाति॥५२॥तातजाउँवलिवेगिनहाहू॥जोमनभावमधुरकछुषाहू॥पितु
समीपतवजाएहुभैया॥भैवडिवारजाइवलिमैया॥मातुवचनसुनिअतिअनकूला॥ज
नुसनेहसुरतरुकेफूला॥सुषमकरंदभरेश्रियमूला॥निरषिराममनुभवरुनभूला॥ध
रमधुरीनधरमगतिजानी॥कहेउमातुसनअतिमृदुवानी॥पितादीन्हमोहिकाननरा
जू॥जहँसवभाँतिमोरवडकाजू॥आयसुदेहिमुदितमनमाता॥जेहिमुदमंगलकाननजा
ता॥जनिसनेहवसडरपसिभोरे॥आनंदअंवअनुग्रहतोरे॥दोहा॥वरषचारिदसविपिन २१
वसिकरिपितुवचनप्रमान॥आइपांयपुनिदेषिहौंमनुजनिकरसिमलान॥५३॥वचनवि

नीतमधुररघुबरके॥सरसमलगेमातुउरकरके॥सहमिसूषिसुनिसीतलबानी॥जिमिज
वासुपरेपावसपानी॥कहिनजाइकछुहृदयविषादू॥मनहुमृगीसुनिकेहरिनादू॥नय
नसजलतनथरथरकाँपी॥माजहिषाइमीनजनुमापी॥धरिधीरजुसुतवदननिहारी॥ग
दगदवचनकहतिमहतारी॥तातपितहितुम्हप्रानपियारे॥देषिमुदितनितचरिततुम्हारे॥
राजुदेनकहुँसुभदिनसाधा॥कहेउजानबनकेहिअपराधा॥तातसुनावहुमोहिनिदानू॥
कोदिनकरकुलभयउकृसानू॥दोहा॥ निरषिरामरुषसचिवसुतकारनुकहेउबुझाइ
सुनिप्रसंगुरहिमूकजिमिदसाबरनिनहिजाइ॥५४॥राषिनसकइनकहिसकजाहू॥
दुहूँभांतिउरदारुनदाहू॥लिषतसुधाकरगालिषिराहू॥विधिगतिवामसदासबकाहू॥
धरमसनेहउभयमतिघेरी॥भइगतिसांपछुछुंदरिकेरी॥राषौंसुतहिकरौंअनुरोधू॥ध

अ०
२२ मैं जाइ अरु वंधु विरोधू॥ कहौं जान वन तौ वडि हानी॥ संकट सोच विवस भइ रानी॥ वहुरि
समुझि तिय धरमु सयानी॥ रामु भरतु दोउ सुत सम जानी॥ सरल सुभाउ राम महतारी॥
वोली वचन धीर धरि भारी॥ तात जाउँ वलि कीन्हेहु नीका॥ पितु आयसु सव धरम क टीका॥
दोहा॥ राजु देन कहि दीन्ह वनु मोहि न सो दुष लेसु॥ तुम्ह विनु भरतहि भूपतिहि प्रज
हि प्रचंड कलेसु॥५५॥ जौं केवल पितु आयसु ताता॥ तौ जनि जाहु जानि वडि माता॥ जौं
पितु मातु कहेउ वन जाना॥ तौ कानन सत अवध समाना॥ पितु वनदेव मातु वनदेवी॥
षग मृग चरन सरोरुह सेवी॥ अंतहु उचित नृपहि वनवासू॥ वय विलोकि हिय होइ हरा
सू॥ वडभागी वनु अवध अभागी॥ जो रघुवंस तिलक तुम्ह त्यागी॥ जौं सुत कहौं संग मोहि २२
लेहू॥ तुम्हरे हृदय होइ संदेहू॥ पूत परम प्रिय तुम्ह सवही के॥ प्रान प्रान के जीवन जी के॥

तेतुम्ह कहहु मातु बन जाऊं॥ मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊं॥ दोहा॥ः यह बिचारि नहिं क
रौं हठ झूठ सनेह बढाइ॥ मानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ॥ ५६॥ देव पितर
सब तुम्हहिं गोसाईं॥ राखहु पलक नयन की नाईं॥ अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना॥ तु
म्ह करुनाकर धरम धुरीना॥ अस बिचारि सोइ करहु उपाई॥ सबहि जियत जेहि भेंटहु आ
ई॥ जाहु सुषेन बनहि बलि जाऊं॥ करि अनाथ जन परिजन गाऊं॥ सब कर आजु सुकृत
फल बीता॥ भयउ करालु कालु बिपरीता॥ बहु बिधि बिलपि चरन लपटानी॥ परम अ
भागिनि आपुहि जानी॥ दारुन दुसह दाहु उर ब्यापा॥ बरनि न जाइ बिलाप कलापा॥
रामु उठाइ मातु उर लाई॥ कहि म्रिदु बचन बहुरि समुझाई॥ दोहा॥ः समाचार तेहि स
मय सुनि सीय उठी अकुलाइ॥ जाइ सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिरु नाइ॥ ५७॥ दी

अ० २३ न्हि असी ससासु म्रदु बानी॥ अति सुकुमारि देषि अकुलानी॥ वैठि नमित मुष सोचति सी
ता॥ रूप रासि पति प्रेम पुनीता॥ चलन चहत वन जीवन नाथू॥ केहि सुकृती सन होइहि
साथू॥ की तनु प्रान कि केवल प्राना॥ विधि करतव कछु जाइ न जाना॥ चारु चरन नष लेष
ति धरनी॥ नूपुर मुषर मधुर कवि वरनी॥ मनहु प्रेम वस विनती करहीं॥ हम हि सीय पद
जनि परिहरहीं॥ मंजु विलोचन मोचत वारी॥ बोली देषि राम महतारी॥ तात सुनहु सिय
अति सुकुमारी॥ सासु ससुर परिजन हि पिआरी॥ दोहा॥ पिता जनक भूपाल मनि ससुर
भानु कुल भानु॥ पति रवि कुल कैरव विपिन विधु गुन रूप निधानु॥ ५९॥ मैं पुनि पुत्र वधू
प्रिय पाई॥ रूप रासि गुन सील सुहाई॥ नयन पुतरि करि प्रीति वढाई॥ राषेउँ प्रान जानकि २३
हि लाई॥ कलप वेलि जिमि वहु विधि लाली॥ सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली॥ फूलत फल

नभसरुविधिवामा॥ जानिनजाइकाहपरिनामा॥ पलँगुपीठतजिगोदहिंडोरा। सिय
नदीन्हपदअवनिकठोरा॥ जिअनमूरिजिमिजोगवतरहऊ॥ दीपवातिनहिटारन
कहऊ॥ सोइसियचलनचहतिवनसाथा॥ आयसुकाहहोइरघुनाथा॥ चंदकिरनर
सरसिकचकोरी॥ रविरुषनयनसकैकिमिजोरी॥ दोहा॥ करिकेहरिनिशिचरचरहिं
दुष्टजंतुवनभूरि॥ विषवाटिकाकिसोहसुतसुभगसजीवनिमूरि॥ ६०॥ वनहितकोल
किरातकिसोरी॥ रचीविरंचिविषयसुषभोरी॥ पाहनकृमिजिमिकठिनसुभाऊ॥ तिन्ह
हिंकलेसुनकाननकाऊ॥ कैतापसतियकाननजोगू॥ जिन्हतपहेतुतजासवभोगू॥
सियवनवसिहितातकेहिभांती॥ चित्रलिषितकपिदेषिडराती॥ सुरसरसुभगवनजवन
चारी॥ डावरजोगुकिहंसकुमारी॥ असविचारिजसआयसुहोई॥ मैसिषदेउँजानकिहि

अ० २४

सोई॥ जौं सिय भवन रहइ कह अंबा॥ मोहि कहँ होइ बहुत अवलंबा॥ सुनि रघुबीर मातु प्रि-
य बानी॥ सील सनेह सुधा जनु सानी॥ दोहा॥ कहि प्रिय बचन बिबेकमय कीन्ह मातु परि-
तोष॥ लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि बिपिन गुन दोष॥ ६० मातु समीप कहत सकुचाहीं॥
बोले समउ समुझि मन माहीं॥ राजकुमारि सिखावनु सुनहू॥ आन भाँति जिय जनि कछु
गुनहू॥ आपन मोर नीक जौं चहहू॥ बचनु हमार मानि गृह रहहू॥ आयसु मोर सासु सेव-
काई॥ सब बिधि भामिनि भवन भलाई॥ एहि तें अधिक धरमु नहि दूजा॥ सादर सासु ससुर
पद पूजा॥ जब जब मातु करिहि सुधि मोरी॥ होइहि प्रेम बिकल मति भोरी॥ तब तब तुम्ह कहि
कथा पुरानी॥ सुंदरि समुझाएहु मृदु बानी॥ कहौं सुभाय सपथ सत मोही॥ सुमुखि मातु हि- २४
त राखौं तोही॥ दोहा॥ गुर श्रुति संमत धरम फलु पाइय बिनहि कलेस॥ हठ बस सब संक

टसहेगालवनदुखमनरोस॥६१॥मैंपुनिकरिप्रमानपितुवानी॥वेगिफिरवसुनुसुमुखिस
यानी॥दिवसजातनहिंलागिहिवारा॥सुंदरिसिखवनुसुनहुहमारा॥जौंहठकरहुप्रेम
वसवामा॥तौतुम्हदुखपाउवपरिनामा॥काननुकठिनभयंकरभारी॥घोरघामुहिमवा
रिवयारी॥कुसकंटकमगकाकरनाना॥चलवपयादेहिंविनुपदत्राना॥चरनकमलमृ
दुमंजुतुम्हारे॥मारगअगमभूमिधरभारे॥कंदरखोहनदीनदनारे॥अगमअगाधनजा
हिंनिहारे॥भालुवाघवृककेहरिनागा॥करहिंनादसुनिधीरजुभागा॥दोहा॥भूमिस
यनवलकलवसनअसनकंदफलमूल॥तेकिसदासवदिनमिलहिंसवैसमयअनु
कूल॥६२॥नरअहाररजनीचरचरहीं॥कपटवेषविधिकोटिककरहीं॥लागइअतिपहा
रकरपानी॥विपिनविपतिनहिंजाइवखानी॥व्यालकरालविहगवनघोरा॥निशिच

अ०
२५

रनिकरनारिनरचोरा॥डरपहिंधीरगहनसुधिआये॥म्रगलोचनितुम्हभीरुसुभाये॥हं
सगवनितुम्हनहिवनजोगू॥सुनिअपजसुमोहिदेइहिलोगू॥मानससलिलसुधाप्र
तिपाली॥जिअइकिलवनपयोधिमराली॥नवरसालवनविहरनसीला॥सोहकिको
किलविपिनकरीला॥रहहुभवनअसहृदयविचारी॥चंदवदनिदुखकाननभारी॥
दोहा॥ सहजसुहृदगुरुस्वामिसिखजोनकरइसिरमानि॥सोपछिताइअघाइउर
अवसिहोइहितहानि॥६३॥सुनिमृदुवचनमनोहरपियके॥लोचनललितभरेजल
सियके॥सीतलसिखदाहकभइकैसे॥चकइहिसरदचंदनीजैसे॥उतरुनआवविकल
वैदेही॥तजनचहतसुचिस्वामिसनेही॥वरवसरोकिविलोचनवारी॥धरिधीरजुउरअव २५
निकुमारी॥लागिसासुपगकहकरजोरी॥छमविदेविवडिअविनयमोरी॥दीन्हिप्रान

पति मोहि सिष सोई॥ जेहि विधि मोर परम हित होई॥ मैं पुनि समुझि दीष मन माहीं॥ पि
य वियोग सम दुष जग नाहीं॥ दोहा॥ प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुषद सुजान॥ तु
म्ह विनु रघुकुल कुमुद विधु सुरपुर नरक समान॥ ६४॥ मातु पिता भगिनी प्रिय भाई॥ प्रि
य परिवार सुहृद समुदाई॥ सासु ससुर गुर सजन सहाई॥ सुत सुंदर सुसील सुषदाई॥
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते॥ पिय विनु तियहि तरनिहु ते ताते॥ तनु धनु धामु धरनि पुर
राजू॥ पति विहीन सब सोक समाजू॥ भोग रोग सम भूषन भारू॥ जम जातना सरिस संसा
रू॥ प्राननाथ तुम्ह विनु जग माहीं॥ मो कहु सुषद कतहु कछु नाहीं॥ जिय विनु देह नदी
रा विनु वारी॥ तइसिअ नाथ पुरुष विनु नारी॥ नाथ सकल सुष साथ तुम्हारे॥ सरद विमल वि
धु वदन निहारे॥ दोहा॥ षग म्रग परिजन नगरु वनु वलकल विमल दुकूल॥ नाथ सा

श्री० २६ थमुरसदनसमपरनसालसुषमूल॥६५॥वनदेवीवनदेवउदारा॥करिहहिंसासुससुरस
मसारा॥कुसकिसलयसाथरीसुहाई॥प्रभुसंगमंजुमनोजतुराई॥कंदमूलफलअमि
यअहारू॥अवधसौधसतसरिसपहारू॥छिनुछिनुप्रभुपदकमलविलोकी॥रहिहौं
मुदिताद्दिवसजिमिकोकी॥वनदुषनाथकहेवहुतेरे॥भयविषादपरितापघनेरे॥प्रभुवि
योगलवलेससमाना॥सबमिलिहोहिंनकृपानिधाना॥असजियजानिसुजानसिरोमनि
लेइयसंगमोहिछाडियजनि॥विनतीवहुतकरौंकास्वामी॥करुनामेउरअंतरजामी॥
दोहा॥ दीनवंधुसुंदरसुषदसीलसनेहनिधान॥राषिअअवधजोअवधिलगिरहत
नजानिअहिप्रान॥६६॥मोहिमगचलतनहोइहिहारी॥छिनुछिनुचरनसरोजनिहारी॥ २६
सवहिभांतिपियसेवाकरिहौं॥मारगजनितसकलश्रमहरिहौं॥पायपषारिवैठितरु

छाहीं॥ करिहौं बाउ मुदित मन माहीं॥ श्रम कन सहित स्याम तन देखें॥ कहँ दुख समउ
प्रान पति पेखें॥ सम महि त्रिन तरु पल्लव डासी॥ पाय पलोटिहि सब निसि दासी॥ बार बार
मृदु मूरति जोही॥ लागिहि तात बयारि न मोही॥ को प्रभु संग मोहि चितवनिहारा॥ सिं
घ बधुहि जिमि ससक सिआरा॥ मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू॥ तुम्हहि उचित तप मो कहँ
भोगू॥ दोहा॥ ऐसेउ बचन कठोर सुनि जौं न हृदय बिलगान॥ तौ प्रभु बिषम बियोग दु
ख सहिहहिं पावँर प्रान॥६७॥ अस कहि सीय बिकल भइ भारी॥ बचन बियोगु न सकी
सँभारी॥ देखि दशा रघुपति जिय जाना॥ हठि राखें नहिं राखिहि प्राना॥ कहेउ कृपाल
भानुकुलनाथा॥ परिहरि सोच चलहु बन साथा॥ नहिं बिषाद कर अवसर आजू॥ बे
गि करहु बन गवन समाजू॥ कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई॥ लगे मातु पद आसिष पा

अ०
२७
ई॥ वेगिप्रजादुषमेटवआई॥ जननीनिठुरविसरिजनिजाई॥ फिरिहिदसाविधिवहुरि
किमोरी॥ देषिहौंनयनमनोहरजोरी॥ सुदिनसुघरीतातकवहोइहि॥ जननीजियतवद
नविधुजोइहि॥ दोहा॥ वहुरिवछकहिलालुकहिरघुपतिरघुवरतात॥ कवहिंवोलाइ
लगाइहियहरषिनिरषिहौंगात॥ ६८॥ लषिसनेहकातरिमहतारी॥ वचनुनआववि
कलभइभारी॥ रामप्रवोधुकीन्हविधिनाना॥ समउसनेहनजाइवषाना॥ तवजानकी
सासुपगलागी॥ सुनिअमायमैंपरमअभागी॥ सेवासमयदइअवनुदीन्हा॥ मोरमनो
रथुसुफलुनकीन्हा॥ तजवछोभुजनिछाडियछोहू॥ करमुकठिनकछुदोसुनमोहू॥
सुनिसियवचनसासुअकुलानी॥ दशाकवनिविधिकहौंवषानी॥ वारहिवारलाइउ २७
रलीन्ही॥ धरिधीरजुसिषआसिषदीन्ही॥ अचलहोउअहिवातुतुम्हारा॥ जवलगिगंग

जमुनजलधारा॥ दोहा॥ सीनहिसासुअसीससियदीन्हिअनेकप्रकार॥ चलीनाइ
पदपदुमसिरुअतिहितवारहिवार॥६८॥ समाचारजवलछिमनपाए॥ व्याकुलविलष
वदनउठिधाए॥ कंपपुलकतननयनसनीरा॥ गहेचरनअतिप्रेमअधीरा॥ कहिनस
कतकछुचितवतठाढे॥ मीनुदीनुजनुजलतेंकाढे॥ सोचुहृदयविधिकाहोनिहारा॥ स
वुसुखसुकृतुसिरानहमारा॥ मोकहुकाहकहवरघुनाथा॥ रषिहहिंभवनकिलेइहि
हिंसाथा॥ रामविलोकिवंधुकरजोरें॥ देहगेहसवसनतृनतोरें॥ वोलेवचनरामनयना
गर॥ सीलसनेहसरलसुषसागर॥ तातप्रेमवसजनिकदराहू॥ समुझिहृदयपरिनाम
उछाहू॥ दोहा॥ मातुपितागुरस्वामिसिषसिरधरिकरहिसुभाय॥ लहेउलाभतिन्हजन्म
करनतरुजन्मुजगजाय॥७०॥ असिजियजानिसुनहुसिषभाई॥ करहुमातुपितुपदसे

अ०
२८

वकाई॥भवनभरतुरिपुसूदनुनाहीं॥राउबृद्धममदुषुमनमाहीं॥मैंबनजाउंतुम्हहिले
इसाथा॥होइसबहिविधिअवधअनाथा॥गुरुपितुमातुप्रजापरिवारू॥सबकहुंपरइदुस
हदुषभारू॥रहहुकरहुसबकरपरितोषू॥नतरुतातहोइहिबडदोषू॥जासुराजप्रियप्र
जादुषारी॥सोनृपअवसिनरकअधिकारी॥रहहुतातअसिनीतिबिचारी॥सुनतलषनु
भएव्याकुलभारी॥सियरेबचनसूषिगएकैसे॥परसतनुहिनतामरसुजैसे॥दोहा॥उतरु
नआवतप्रेमबसगहेचरनअकुलाइ॥नाथदाससैंस्वामितुम्हतजहुतकाहबसाइ॥७१
दीन्हिमोहिसिषनीकिगोसांईं॥लागिअगमअपनीकदराई॥नरबरधीरधरमधुरधारी
निगमनीतिकहुतेअधिकारी॥मैंसिसुप्रभुसनेहप्रतिपाला॥मंदरुमेरुकिलेहिमराला २८
गुरपितुमातुनजानउंकाहू॥कहउंसुभाउनाथपतिआहू॥जहंलगिजगतसनेहसगाई॥

प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई॥ मोरें सबइ एकु तुम्ह स्वामी॥ दीनवंधु उर अंतरजामी॥ धर
मनीति उपदेसिय ताही॥ कीरति भूति सुगति प्रिय जाही॥ मन क्रम वचन चरन रत होई॥ कृपा
सिंधु परिहरिय कि सोई॥ दोहा॥ करुनासिंधु सुवंधु के सुनि मृदु वचन विनीत॥ समुझाए
उर लाइ प्रभु जानि सनेह सभीत॥ ७२॥ मागहु विदा मातु सन जाई॥ आवहु वेगि चलहु व
न भाई॥ मुदित भए सुनि रघुवर वानी॥ भए उ लाभ वड गइ वडि हानी॥ हरषित हृदय मा
तु पहि आए॥ मनहु अंध फिरि लोचन पाए॥ जाइ जननि पग नाए उ माथा॥ मनु रघुनंदन जा
नकि साथा॥ पूछे मातु मलिन मनु देषी॥ लषन कही सव कथा विशेषी॥ गई सहमि सुनि वच
न कठोरा॥ म्रगी देषि दव जनु चहु ओरा॥ लषन लषेउ भा अनरथ आजु॥ एहि सनेह वस क
रव अकाजु॥ मागत विदा सभय सकुचाहीं॥ जाइ संग विधि कहिहि कि नाहीं॥ दोहा॥ समुझि

अ० २९

सुमित्रा राम सिय रूप सुसील सुभाउ ॥ न्रप सनेहु लषि धुनेउ सिरु पापिनि दीन्ह कुदाउ
॥७३॥ धीरजु धरेउ कुअवसर ज्ञानी ॥ सहज सुहृद वोली म्रदु वानी ॥ तात तुम्हारि मातु वैदेही
पिता रामु सव भाँति सनेही ॥ अवध तहाँ जहँ राम निवासू ॥ तहइँ दिवसु जहँ भानु प्रकासू
जौं पै सीय रामु वन जाहीं ॥ अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं ॥ गुर पितु मातु वंधु सुर साँईं ॥ सेइ
अहिं सकल प्रान की नाईं ॥ रामु प्रानप्रिय जीवनु जी के ॥ स्वारथ रहित सषा सवही के ॥ पूजनी २
य प्रिय परम जहाँ तें ॥ सव मानियहि राम के नातें ॥ अस जिय जानि संग वन जाहू ॥ लेहु तात ज
ग जीवनु लाहू ॥ दोहा ॥ भूरि भाग भाजनु भएहु मोहि समेत वलि जाउँ ॥ जौं तुम्हरे मन छाडि
छलु कीन्ह राम पद ठाउँ ॥ ७४ ॥ पुत्रवती जुवती जग सोई ॥ रघुपति भगतु जासु सुतु होई ॥ नतरु २९
वाँझ भलि वादि विआनी ॥ राम विमुष सुत तें हित हानी ॥ तुम्हरेहि भाग रामु वन जाहीं ॥ दूसर हे

तु तात कछु नाहीं॥ सकल सुकृत कर बड़ फलु एहू॥ राम सीय पद सहज सनेहू॥ राग रोषु इरिषा
मदु मोहू॥ जनि सपनेहुँ इन्ह के बस होहू॥ सकल प्रकार बिकार बिहाई॥ मन क्रम बचन करेहु से
वकाई॥ तुम्ह कहुँ बन सब भाँति सुपासू॥ सँग पितु मातु रामु सिय जासू॥ जेहिं न रामु बन लहहिं क
लेसू॥ सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू॥ छंद॥ उपदेसु यहु जेहिं तात तुम्हरे रामु सिय सुख पावहीं॥
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं॥ तुलसी प्रभुहि सिख देइ आयसु दीन्ह पु
नि आसिष दई॥ रति होउ अबिरल अमल सिय रघुबीर पद नित नित नई॥ सोरठा॥ मातु चर
न सिरु नाइ चले तुरत संकित हृदय॥ बागुर बिषम तोराइ मनहुँ भाग मृगु भाग बस॥ ७५॥ गये
लषनु जहँ जानकिनाथू॥ भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू॥ बंदि राम सिय चरन सुहाये॥ चले संग
नृपमंदिर आये॥ कहहिं परसपर पुर नर नारी॥ भलि बनाइ बिधि बात बिगारी॥ तन कृस मन दु

सुवदनमलीने॥ विकलमनहुँमाषीमधुछीने॥ करमीजहिंसिरधुनिपछिताहीं॥ जनुविनुपंख

अ० विहगअकुलाहीं॥ भइवडिभीरभूपदरवारा॥ वरनिनजाइविषादुअपारा॥ सचिवउठाइराउ

२० वैठारे॥ कहिप्रियवचनरामपगुधारे॥ सीयसहितदोउतनयनिहारी॥ व्याकुलभयउभूमिप

तिभारी॥ दोहा॥ सीयसहितसुतसुभगदोउदेषिदेषिअकुलाइ॥ वारहिंवारसनेहवसराउले

इउरलाइ॥ ७६॥ सकैनवोलिविकलनरनाहू॥ सोकजनितउरदारुनदाहू॥ नाइसीसुपदअति

अनुरागा॥ उठिरघुवीरविदातवमागा॥ पितुअसीसआयसुमोहिदीजे॥ हरषसमयविसमउक

तकीजे॥ तातकियेंप्रियप्रेमप्रमादू॥ जसुजगजाइहोइअपवादू॥ सुनिसनेहवसउठिनरनाहा॥ वै

ठारेरघुपतिगहिवाँहा॥ सुनहुताततुम्हकहँमुनिकहहीं॥ रामुचराचरनायकअहहीं॥ सुभअरु २०

असुभकरमअनुहारी॥ ईसुदेइफलुहृदयविचारी॥ करैजोकरमुपावफलुसोई॥ निगमनीति

अस कह सबु कोई॥ दोहा॥: और करइ अपराधु कोउ और पाव फल भोगु॥ अति बिचित्र भगवं
त गति को जग जानइ जोगु॥ ७७॥ राय राम राषन हित लागी॥ बहुत उपाय किये छल त्यागी॥ ल
षी राम रुष रहत न जाने॥ धरम धुरंधर धीर सयाने॥ तब नृप सीय लाइ उर लीन्ही॥ अति हित ब
हुत भाँति सिष दीन्ही॥ कहि बन के दुष दुसह सुनाए॥ सासु ससुर पितु सुष समुझाए॥ सिय मनु
राम चरन अनुरागा॥ घरु न सुगम बन बिषमु न लागा॥ औरौं सबहिं सीय समुझाई॥ कहि कहि बि
पिन बिपति अधिकाई॥ सचिव नारि गुर नारि सयानी॥ सहित सनेह कहहिं म्रदु बानी॥ तुम्ह कहँ
तौ न दीन्ह बनबासू॥ करहु जो कहहिं ससुर गुर सासू॥ दोहा॥: सिष सीतलि हित मधुर म्रदु सुनि
सीतहि न सोहानि॥ सरद चंद चांदिनि लगत जनु चकई अकुलानि॥ ७८॥ सीय सकुच बस उतरु न
देई॥ सो सुनि तमकि उठी कैकेई॥ मुनि पट भूषन भाजन आनी॥ आगे धरि बोली म्रदु बानी॥ नृप

हिंप्रानप्रियतुम्हरघुवीरा॥सीलसनेहनछाडहिभीरा॥सुकृतसुजसुपरलोकनसाऊ॥तुम्ह
अ० ३१ हिजानवनकहिहिनकाऊ॥असविचारिसोइकरहुजोभावा॥रामजननिसिषसुनिसुषपावा॥
भूपहिवचनवानसमलागे॥करहिंनप्रानपयानअभागे॥लोगविकलमुरछितनरनाहू॥
काहकरिअकछुसूझनकाहू॥रामतुरतमुनिवेषवनाई॥चलेजनकजननिहिसिरुनाई॥
दोहा॥ सजिवनसाजुसमाजुसवुवनितावंधुसमेत॥वंदिविप्रगुरचरनप्रभुचलेकरिसवहि
अचेत॥७९॥निकसिवसिष्ठद्वारभएठाढे॥देषेलोगविरहदवडाढे॥कहिप्रियवचनसकल
समुझाए॥विप्रवृंदरघुवीरवोलाए॥गुरुसनकहिवरषासनदीन्हे॥आदरदानविनयवसकी
न्हे॥जांचकदानमानसंतोषे॥मीतपुनीतप्रेमपरितोषे॥दासीदासवोलाइवहोरी॥गुरहिसौंपि ३१
वोलेकरजोरी॥सवकैसारसँभारगोसाईं॥करविजनकजननीकीनाईं॥वारहिवारजोरिजुग

पानी॥ कहत राम सुत सब सन मृदु बानी॥ सोइ सब भाँति मोर हितकारी॥ जेहि तें रहइ भुआल सु
खारी॥ दोहा॥ मातु सकल मोरे बिरहँ जेहिं न होहिं दुख दीन॥ सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सब पुरज
न परम प्रबीन॥८०॥ एहि बिधि राम सबहि समुझावा॥ गुर पद पदुम हरषि सिरु नावा॥ गनपति
गौरि गिरीसु मनाई॥ चले असीस पाइ रघुराई॥ राम चलत अति भयउ बिषादू॥ सुनि न जाइ पु
र आरत नादू॥ कुसगुन लंक अवध अति सोकू॥ हरष बिषाद बिबस सुरलोकू॥ गइ मुरछा तब
भूपति जागे॥ बोलि सुमंत्रु कहन अस लागे॥ रामु चले बन प्रान न जाहीं॥ केहि सुख लागि रहत तन
माहीं॥ एहि तें कवन ब्यथा बलवाना॥ जो दुख पाइ तजहिं तनु प्राना॥ पुनि धरि धीर कहइ नरना
हू॥ लै रथु संग सखा तुम्ह जाहू॥ दोहा॥ सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि॥ रथ च
ढ़ाइ देखराइ बनु फिरेहु गए दिन चारि॥८१॥ जौं नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई॥ सत्यसंध दृढ़ब्रत र

२

अ० ३२

घुराई॥ तौ तुम्ह बिनय करेहु कर जोरी॥ फेरिय प्रभु मिथिलेस किसोरी॥ जब सिय कानन देखि
डेराई॥ कहेहु मोरि सिष अवसरु पाई॥ सासु ससुर अस कहेउ संदेसू॥ पुत्रि फिरिय बन बहु
त कलेसू॥ पितु गृह कबहुं कबहुं ससुरारी॥ रहेहु जहां रुचि होइ तुम्हारी॥ एहि बिधि कर
हु उपाय कदंबा॥ फिरइ त होइ प्रान अवलंबा॥ नाहि त मोर मरनु परिनामा॥ कछु न बसा
इ भए बिधि बामा॥ अस कहि मुरुछि परा महि राऊ॥ रामु लषनु सिय आनि देषाऊ॥ दोहा
पाइ रजायसु नाइ सिरु रथु अति बेग बनाइ॥ गए उ जहां बाहिर नगर सीय सहित दोउ
भाइ॥ ८१॥ तब सुमंत्र नृप बचन सुनाए॥ करि बिनती रथु रामु चढाए॥ चढि रथु सीय सहि
त दोउ भाई॥ चले हृदय अवधहि सिरु नाई॥ चलत रामु लषि अवध अनाथा॥ बिकल लो ३२
ग सब लागे साथा॥ कृपासिंधु बहुबिधि समुझावहिं॥ फिरहिं प्रेम बस पुनि फिरि आवहिं॥

लागतिअवधभयावनिभारी॥ मानहुकालरातिअँधियारी॥ घोरजंतुसमपुरनरनारी
डरपहिंएकहिंएकनिहारी॥ घरमसानजनुपरिजनभूता॥ सुतहितमीतमनहुजमद्
ता॥ बागन्हबिटपबेलिकुम्हिलाहीं॥ सरितसरोवरदेषिनजाहीं॥ दोहा॥ हयगयकोटि
न्हकेलिमृगपुरपसुचातकमोर॥ पिकरथांगसुकसारिकासारसहंसचकोर॥ ८३॥ राम
बियोगबिकलसबठाढे॥ जहँतहँमनहुचित्रलिषिकाढे॥ नगरुसफलबनगहवरभारी
षगमृगबिपुलसकलनरनारी॥ बिधिकैकईकिरातिनिकीन्ही॥ जेहिंदवदुसहदसहुँ
दिसिदीन्ही॥ सहिनसकेरघुबरबिरहागी॥ चलेलोगसबब्याकुलभागी॥ सबहिंबिचारु
कीन्हमनमाहीं॥ रामलषनसियबिनुसुषनाहीं॥ जहांरामुतहसबुइसमाजू॥ बिनुरघुबी
रअवधनहिकाजू॥ चलेसाथअसमंत्रुदृढाई॥ सुरदुर्लभसुषसदनबिहाई॥ रामचरनपं

कजप्रियजिनहीं॥विषयभोगवसकरहिंकितिनहीं॥दोहा॥ बालकवृद्धविहायग्रहलगे
अ० लोगसववसाथ॥तमसातीरनिवासुकियप्रथमदिवसरघुनाथ॥८४॥रघुपतिप्रजाप्रेमवस
३३ देषी॥सदयहृदयदुषभयोविशेषी॥करुनामयरघुनाथगोसांई॥वेगिपाइअहिपीरपरा
ई॥कहिसप्रेममृदुवचनसुहाए॥वहुविधिरामलोगसमुझाए॥किएधरमउपदेसघनेरे
लोगप्रेमवसफिरहिनफेरे॥सीलसनेहछाडिनहिजाई॥असमंजसवसभेरघुराई॥लोग
सोगश्रमवसगयेसोई॥कछुकदेवमायामतिमोई॥जेवहिजामजुगजामिनिवीती॥रामसचि
वसनकहेउसप्रीती॥षोजुमारिरथहांकहुताता॥आनउपायवनिहिनहिवाता॥दोहा॥:
रामलषनसियजानचढिसंभुचरननसिरुनाइ॥सचिवचलाएउतुरतरथइतउतषोजदु
राइ॥८५॥जागेसकललोगभयेभोरु॥गयेरघुनाथभएउअतिसोरु॥रथकरषोजकतहुं ३३

नहि पावहिं॥ राम राम कहि चहुँ दिसि धावहिं॥ मनहु वारिनिधि बूड जहाजू॥ भयउ विकल
वड वनिक समाजू॥ एक एकहि देहिं उपदेसू। तजे राम हम जानि कलेसू॥ निंदहिं आपु सरा
हहिं मीना॥ धिग जीवनु रघुवीर विहीना॥ जौं पै प्रिय वियोगु विधि कीन्हा॥ तौ कस मरनु न मा
गे दीन्हा॥ एहि विधि करत प्रलाप कलापा॥ आए अवध भरे परितापा॥ विषम वियोग न जाइ
वखाना॥ अवधि आस सव राखहि प्राना॥ दोहा॥ राम दरस हित नेम व्रत लगे करन नर नारि
मनहु कोक कोकी कमल दीन विहीन तमारि॥ ८६॥ सीता सचिव सहित दोउ भाई॥ स्रंगवे
रपुर पहुचे जाई॥ उतरे राम देवसरि देषी॥ कीन्ह दंडवत हरषु विसेषी॥ लषन सचिव सिय कि प
ए प्रनामा॥ सवहि सहित सुष पायउ रामा॥ गंग सकल मुद मंगल मूला॥ सव सुष करनि हर
नि सव सूला॥ कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा॥ रामु विलोकहि गंग तरंगा॥ सचिवहि अनुज

अ॰ हि प्रिय हहि सुताई॥ बिबुधनदी महिमा अधिकाई॥ मज्जन कीन्ह पंथ श्रम गएऊ॥ सुचि ज
३४ लु पियत मुदित मन भएऊ॥ सुमिरत जाहि मिटै श्रम भारू॥ तेहि श्रम यह लौकिक ब्यवहारू॥
दोहा॥ सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुलकेतु॥ चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर
सेतु॥ ८७॥ यह सुधि गुह निषाद जब पाई॥ मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई॥ लिय फल मूल भेंट
भरि भारा॥ मिलन चलेउ हिय हरषु अपारा॥ करि दंडवत भेंट धरि आगे॥ प्रभुहि बिलोकत
अति अनुरागे॥ सहज सनेह बिबस रघुराई॥ पूछी कुसल निकट बैठाई॥ नाथ कुसल पद
पंकज देखे॥ भएउ भागभाजन जन लेखे॥ देव धरनि धनु धामु तुम्हारा॥ मैं जनु नीचु सहित प
रिवारा॥ कृपा करिय पुर धारिय पाऊ॥ थापिय जनु सब लोग सिहाऊ॥ कहेहु सत्य सब सखा
सुजाना॥ मोहि दीन्हि पितु आयसु आना॥ दोहा॥ बरष चारि दस बासु बन मुनि ब्रत बेष अ ३४

हरु॥ ग्राम बास नहिं उचित सुनि गुहहि दुःख अति भारु॥८७॥ राम लषन सिय रूप निहा
री॥ कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी॥ ते पितु मातु कहहु सषि कैसे॥ जिन्ह पठए बन बालक ऐ
से॥ एक कहहिं भल भूपति कीन्हा॥ लोयन लाहु हमहि बिधि दीन्हा॥ तब निषादपति उ
र अनुमाना॥ तरु सिंसुपा मनोहर जाना॥ लै रघुनाथहि ठाउं देषावा॥ कहेउ राम सब भां
ति सुहावा॥ पुरजन करि जोहारु घर आए॥ कुस किसलेमय मृदुल सुहाई॥ सुचि फल मूल
मधुर मृदु जानी॥ दोना भरि भरि राषेसि आनी॥ दोहा॥ सिय सुमंत्र भ्राता सहित कंद मूल फ
ल षाइ॥ सयन कीन्ह रघुबंसमनि पाय पलोटत भाइ॥८८॥ उठे लषनु प्रभु सोवत जानी॥ क
हि सचिवहि सोवन मृदु बानी॥ कछुक दूरि सजि बान सरासन॥ जागन लगे बैठि बीरासन
गुह बोलाइ पाहरू प्रतीती॥ ठावं ठावं राषे अति प्रीती॥ आपु लषन पहिं बैठेउ जाइ॥ कटि

रघुबर संध्या करन सिधाए गुह संवारि साथरी डसाई ५

अ० भाथी सर चाप चढाई ॥ सोवत प्रभुहि निहारि निषादू ॥ भयउ प्रेम बस हृदय बिषादू ॥ तनु पुल
३५ कित जलु लोचन बहई ॥ बचन सप्रेम लषन सन कहई ॥ भूपति भवन सुभाय सुहावा ॥ सुरप
ति सदनु न पटतर पावा ॥ मनिमय रचित चारु चौबारे ॥ जनु रतिपति निज हाथ संवारे ॥ दोहा
सुचि सुबिचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुबास ॥ पलंग मंजु मनिदीप जहं सब बिधि सकल
सुपास ॥ ९१ ॥ बिबिध बसन उपधान तुराई ॥ छीरफेन मृदु बिसद सुहाई ॥ तहं सिय रा
मु सयन निसि करहीं ॥ निज छबि रति मनोज मदु हरहीं ॥ ते सिय राम साथरी सोए ॥ श्रमित
बसन बिनु जाहिं न जोए ॥ मातु पिता परिजन पुरबासी ॥ सखा सुसील दास अरु दासी ॥ जोगव
हिं जिन्हहि प्रान की नाई ॥ महि सोवत तेइ राम गोसाई ॥ पिता जनक जग बिदित प्रभाऊ ॥ ३५
ससुर सुरेस सखा रघुराऊ ॥ रामचंद्र पति सो बैदेही ॥ सोवति महि बिधि बाम न केही ॥ सिय

रघुवीरकिकाननजोगू॥ करमप्रधानसत्यकहलोगू॥ दोहा॥ कैकयनंदिनिमंदमतिक
ठिनकुटिलपनकीन्ह॥ जेहिरघुनंदनजानकिहिसुषअवसरदुषदीन्ह॥ ९०॥
भइदिनकरकुलविटपकुठारी॥ कुमतिकीन्हसवविश्वदुषारी॥ भए उविषादनिषादहि
भारी॥ रामसीयमहिसयननिहारी॥ वोलेलषनमधुरमृदुवानी॥ ज्ञानविरागभगतिरससा
नी॥ काहुनकोउसुषदुषकरदाता॥ निजकृतकरमभोगसवभ्राता॥ जोगवियोगभोगभ
लमंदा॥ हितअनहितमध्यमभ्रमफंदा॥ जनममरनजहँलगिजगजालू॥ संपतिविपति
करमअरुकालू॥ धरनिधामधनपुरपरिवारू॥ सरगनरकजहँलगिव्यवहारू॥ देषियसु
नियगुनियमनमाहीं॥ मोहमूलपरमारथनाहीं॥ दोहा॥ सपनेहोइभिषारिन्रपरंक
नाकपतिहोइ॥ जागेलाभनहानिकछुतिमिप्रपंचजियजोइ॥ ९१॥ अससविचारिनहिंकी

अ०
३६

जियरोसू॥ काहुहि बादि न देइय दोसू॥ मोह निसा सब सोवनिहारा॥ देखिय सपन अनेक प्र
कारा॥ एहि जग जामिनि जागहि जोगी॥ परमारथी प्रपंच वियोगी॥ जानिय तबहि जीव जग
जागा॥ जब सब विषय विलास विरागा॥ होइ विवेकु मोह भ्रम भागा॥ तब रघुनाथ चरन अनु
रागा॥ सखा परम परमारथ येहू॥ मन क्रम वचन राम पद नेहू॥ राम ब्रह्म परमारथ रूपा॥
१ अविगत अलख अनादि अनूपा॥ सकल विकार रहित गतभेदा॥ कहि नित नेति निरूपहि
वेदा॥ दोहा॥ भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल॥ करत चरित धरि मनुज तनु
सुनत मिटहि जग जाल॥ ९३॥ सखा समुझि अस परिहरि मोहू॥ सिय रघुवीर चरन रत हो
म हू॥ कहत राम गुन भा भिनुसारा॥ जागे जग मंगल दाता रा॥ सकल सौच करि राम नहावा॥ सुचि व ३६
सुजान वट छीर मगावा॥ अनुज सहित सिर जटा वनाए॥ देखि सुमंत्र नयन जल छाए॥ हृद

पदगहिअतिवदनमलीना॥कहेकरजोरिवचनअतिदीना॥नाथकहेउअस कोसलना
था॥लैरथजाहुरामकेसाथा॥वनदेषाइसुरसरिअन्हवाई॥आनेहुफेरिवेगिदोउभाई
लषनुरामसियआनेहुफेरी॥संसयसकलसकोचनिवेरी॥दोहा॥नृपअसकहेउगोसा
ईजसकहइकरौंवलिसोइ॥करिविनतीपायन्हपरेउदीन्हवालजिमिरोइ॥९४॥तातकृ ल
पाकरिकीजियसोई॥जातेअवधअनाथनहोई॥मंत्रिहिरामउठाइप्रवोधा॥तातधरममत
तुम्हसवसोधा॥सिविदधीचिहरिचंदनरेसा॥सहेधरमहितकठिनकलेसा॥रंतिदेववलि
भूपसुजाना॥धरमधरेउसहिसंकटनाना॥धरमनदूसरसत्यसमाना॥आगमनिगमपु
रानवषाना॥मैसोइधरमसुलभकरिपावा॥तजेतिहूपुरअपजसछावा॥संभावितकहु
अपजसलाहू॥मरनकोटिसमदारुनदाहू॥तुम्हसनतातवहुतकाकहऊ॥दिएउतरुफिरि

अ०
३७
रिपात कलह उँ ॥ दोहा ॥ पितु पद गहि कहि कोटि नति बिनय करब कर जोरि ॥ चिंता कवनिहु
बात कै तात करिय जनि मोरि ॥ ९४ ॥ तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरे ॥ बिनती करौं तात कर जो
रे ॥ सब बिधि सोइ करतब्य तुम्हारे ॥ दुष न पाव पितु सोच हमारे ॥ सुनि रघुनाथ सचिव संबाद
भए उ सपरिजन बिकल निषादू ॥ पुनि कछु लषन कही कटु बानी ॥ प्रभु बरजे बड़ अनुचित
जानी ॥ सकुचि राम निज सपथ देवाई ॥ लषन सँदेस कहिय जनि जाई ॥ कह सुमंत्र पुनि भूप सँ
देसू ॥ सहि न सकिहि सिय बिपिन कलेसू ॥ जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया ॥ सोइ रघुबरहि
तुम्हहि करनीया ॥ न तरु निपट अवलंब बिहीना ॥ मै न जिअब जिमि जल बिनु मीना ॥ दोहा ॥
मइकै ससुरे सकल सुष जबहि जहां मनु मान ॥ तहं तब रहिहि सुषेन सिय जब लगि बिपति ३७
बिहान ॥ ९५ ॥ बिनती भूप कीन्हि जेहि भांती ॥ आरति प्रीति न सो कहि जाती ॥ पितु सँदेस सुनु

निजकृपानिधाना॥ सियहितदोनिमिकुलकोटिविधाना॥ सासुससुरगुरप्रियपरिवारू॥ फिरहु
तौसबकरमिटैषभारू॥ सुनिपतिबचनकहतिवैदेही॥ सुनहुप्रानपतिपरमसनेही॥ प्रभुक
रुनामयपरमविवेकी॥ तनुतजिरहतिछाँहकिमिछेकी॥ प्रभाजाइकहभानुविहाई॥ कह
चंद्रिकाचंदुतजिजाई॥ पतिहिप्रेममयविनयसुनाई॥ कहतिसचिवसनगिरासुहाई॥ तुम्ह
पितुससुरसरिसहितकारी॥ उतरुदेउँफिरिअनुचितभारी॥ दोहा॥ आरतिवससनमुषभ
इउँविलगनमानवतात॥ आरजसुतपदकमलविनुवादिजहाँलगिनात॥ ७६॥ पितुवैभव
विलासमैडीठा॥ नृपमनिमुकुटमिलितपदपीठा॥ सुषनिधानअसपितुग्रहमोरे॥ पियवि
हीनमनभावनभोरे॥ ससुरचक्कवैकोसलराऊ॥ भुवनचारिदसप्रगटप्रभाऊ॥ आगेहोइजे
हिसुरपतिलेई॥ अर्धसिंघासनुआसनुदेई॥ ससुरएतादृसअवधनिवासू॥ प्रियपरिवार

श्री० मातु समम मास्त॥ बिनु रघुपति पद पदुम परागा॥ मोहि सब सपनेहुँ सुषद न लागा॥ अगम पंथ
रा० बनभूमि पहारा॥ करि केहरि सर सरित अपारा॥ कोल किरात कुरंग बिहंगा॥ मोहि सब सुषद
प्रानपति संगा॥ दोहा॥ सासु ससुर सन मोरि हुँति बिनय करबि परि पाय॥ मोरि सोचु जनि करि
य कछु मै बन सुषी सुभाय॥ ८७॥ प्राननाथ प्रिय देवर साथा॥ बीर धुरीन धरे धनु भाथा॥ नहि
मग श्रमु भ्रमु दुष मन मोरे॥ मोहि लगि सोचु करिय जनि भोरे॥ सुनि सुमंत्रु सिय सीतलि बानी
भए बिकल जनु फनि मनि हानी॥ नयन सूझ नहि सुनइ न काना॥ कहि न सकै कछु अति
अकुलाना॥ राम प्रबोधु कीन्ह बहु भांती॥ तदपि होति नहि सीतल छाती॥ जतन अनेक साथ हि
त कीन्हे॥ उचित उतर रघुनंदन दीन्हे॥ मेटि जाइ नहि राम रजाई॥ कठिन करम गति कछु न ब
साई॥ राम लषन सिय पद सिरु नाई॥ फिरिउ बनिक जनु मूल गवाई॥ दोहा॥ रथु हांकेउ हय ३८

राम तन हेरि हेरि हिहि हिनाहीं ॥ देषि निषाद विषाद वस धुनहि सीस पछिताहिं ॥ ८८ ॥ जासु वि
योग विकल पसु ऐसे ॥ प्रजा मातु पितु जीहहि कैसे ॥ बरबस राम सुमंत्रु पठाए ॥ सुरसरि तीर आपु
तब आए ॥ मागी नाव न केवट आना ॥ कहइ तुम्हार मरमु मै जाना ॥ चरन कमल रज कहु सब कह
ई ॥ मानुष करनि मूरि कछु अहई ॥ छुअत सिला भइ नारि सुहाई ॥ पाहन तेन काठ कठिनाई ॥
तरनि उ मुनि घरनी होइ जाई ॥ बाट परै मोरि नाव उडाई ॥ एहि प्रतिपालौं सब परिवारू ॥ नहि
जानउं कछु और कबारू ॥ जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू ॥ मोहि पद पदुम पषारन कहहू ॥ छंद ॥
पद कमल धोइ चढाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ॥ मोहि राम राउरि आन दशरथ सपथ सब सा
ची कहौं ॥ बरु तीर मारहु लषनु पै जब लगि न पाय पषारिहौं ॥ तब लगि न तुलसीदास नाथ कृ
पाल पारु उतारिहौं ॥ सोरठा ॥ सुनि केवट के बयन प्रेम लपेटे अटपटे ॥ बिहसे करुनाऐ यन

अ० चितइजानकीलषनतन॥९९॥कृपासिंधुबोलेमुसकाई॥सोइकरुजेहितवनावनजाई॥
३९ वेगिआनुजलपायपषारू॥होतविलंवउतारहिपारू॥जासुनामसुमिरतएकवारा॥उतरहिन
रभवसिंधुअपारा॥सोइकृपालकेवटहिनिहोरा॥जेहिजगुकियतिहुपगहुतेथोरा॥पदनषनि
रषिदेवसरिहरषी॥सुनिप्रभुवचनमोहमतिकरषी॥केवटरामरजायसुपावा॥पानिकठवता
भरिलेइआवा॥अतिआनंदउमगिअनुरागा॥चरनसरोजपषारनलागा॥वरषिसुमनसुर
सकलसिहाहीं॥एहिसमपुन्यपुंजकोउनाहीं॥दोहा॥पदपषारिजलुपानकरिआपुसहित
परिवार॥पितरपारकरिप्रभुहिपुनिमुदितगएलेपार॥१००॥उतरिठाढभएसुरसरिरेता॥
सीयरामगुहलषनसमेता॥केवटउतरिदंडवतकीन्हा॥प्रभुहिसकुचएहिकछुनहिदी ३९
न्हा॥पियहियकीसियजाननिहारी॥मनिमुदरीमनमुदितउतारी॥कहेउकृपाललेहुउत

राई॥ केवट चरन गहे अकुलाई॥ नाथ आजु मैं काह न पावा॥ मिटे दोष दुख दारिद दावा॥ बहुत
काल मैं कीन्हि मजूरी॥ आजु दीन्हि बिधि बनि भलि भूरी॥ अब कछु नाथ न चाहिय मोरे॥ दीनद
याल अनुग्रह तोरे॥ फिरती बार मोहि जो देबा॥ सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा॥ दोहा॥ बहुत की
न्ह प्रभु लषन सिय नहि कछु केवटु लेइ॥ बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ॥ १०१
तब मज्जन करि रघुकुलनाथा॥ पूजि पारथिव नायउ माथा॥ सिय सुरसरिहि कहेउ कर जोरी॥
मातु मनोरथ पुरउबि मोरी॥ पति देवर संग कुसल बहोरी॥ आइ करउँ जेहि पूजा तोरी॥ सुनि सि
य बिनय प्रेम रस सानी॥ भइ तव बिमल बारि बर बानी॥ सुनु रघुबीर प्रिया बैदेही॥ तव प्रभाव ज
ग बिदित न केही॥ लोकप होहि बिलोकत तोरे॥ तोहि सेवहि सब सिधि कर जोरे॥ तुम्ह जो हमहि
बडि बिनय सुनाई॥ कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बडाई॥ तदपि मै देवि असीसा॥ सुफल होन हित देवि

निजबागीसा॥दोहा॥प्राननाथदेवरसहितकुसलकोसलाआइ॥पूजिहिसबमनकाम
अ॰ ४० नासुजसुरहिहिजगछाइ॥१०३॥गंगाबचनसुनिमंगलमूला॥मुदितसीयसुरसरिअनु
कूला॥तबप्रभुगुहहिकहेउघरजाहू॥सुनतसूषमुषभाउरदाहू॥दीनबचनगुहकह
कुश करजोरी॥बिनयसुनहुरघुमनिमोरी॥नाथसाथरहिपंथदेषाई॥करिदिनचारिचरन
सेवकाई॥जेहिंबनजाइरहबरघुराई॥परनकुटीमैंकरबिसुहाई॥तबमोहिकहजसिदे
बरजाई॥सोइकरिहौंरघुबीरदोहाई॥सहजसनेहरामलषितासू॥संगलीन्हगुहहृ
दयहुलासू॥पुनिगुहग्यातिबोलितबलीन्हे॥करिपरितोषुबिदातबकीन्हे॥दोहा॥तबगन
पतिसिवसुमिरिप्रभुनाइसुरसरिहिमाथ॥सषाअनुजसियसहितबनगवनकीन्हरघु ४०
नाथ॥१०४॥तेहिदिनभयउबिटपतरबासू॥लषनसषासबकीन्हसुपासू॥प्रातप्रातकृ

तकरि रघुराई॥ तीरथराजु दीष प्रभु जाई॥ सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी॥ माधव सरिस मी
तु हितकारी॥ चारि पदारथ भरा भंडारू॥ पुन्य प्रदेस देस अति चारू॥ छेत्रु अगम गढु गाढ़
सुहावा॥ सपनेहु नहि प्रतिपक्षिन पावा॥ सेन सकल तीरथ बर बीरा॥ कलुष अनीक दल
न रनधीरा॥ संगमु सिंहासनु सुठि सोहा॥ छत्र अषैवट मुनि मन मोहा॥ चवर जमुन अरु गं
ग तरंगा॥ देषि होहि दुष दारिद भंगा॥ दोहा॥ सेवहि सुकृती साधु सुचि पावहि सब मनका
म॥ बंदी बेद पुरान गन कहहि बिमल गुन गान॥ १०४॥ को कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ॥ कलु
ष पुंज कुंजर मृगराऊ॥ अस तीरथपति देषि सुहावा॥ सुष सागर रघुबर सुषु पावा॥ कहि
सिय लषनहि सषहि सुनाई॥ श्रीमुष तीरथराज बडाई॥ करि प्रनाम देषत बन बागा॥ क
हत महातम अति अनुरागा॥ एहि बिधि आइ बिलोकी बेनी॥ सुमिरत सकल सुमंगल दे

अ॰
८१

नी॥मुदितनहाइकीन्हिसिवसेवा॥पूजियथाविधितीरथदेवा॥तवप्रभुभरद्वाजपहिं
आए॥करतदंडवतमुनिउरलाए॥मुनिमनमोदनकहिकछुजाई॥ब्रह्मानंदरासि
जनुपाई॥दोहा॥दीन्हिअसीसमुनीसउरअतिअनंदअसजानि॥लोचनगोचरसुकृत
फलमनहुंकिएविधिआनि॥१०५॥कुसलप्रस्नकरिआसनदीन्हे॥पूजिप्रेमपरिपूरन
कीन्हे॥कंदमूलफलअंकुरनीके॥दिएआनिमुनिमनहुंअमीके॥सीयलषनजनसहि
तसुहाए॥अतिरुचिराममूलफलषाए॥भएविगतश्रमरामसुषारे॥भरद्वाजमृदुवचनउ
चारे॥आजुसफलतपतीरथत्यागा॥आजुसफलजपजोगविरागा॥सुफलसकलसुभसाध
नसाजू॥रामतुम्हहिअवलोकतआजू॥लाभअवधिसुषअवधिनदूजी॥तुम्हरेंदरसआससब ८१
पूजी॥अवकरिकृपादेहुवरयेहू॥निजपदसरसिजसहजसनेहू॥दोहा॥करमवचनमन

छाडिछलुजबलगिजनुनतुम्हार॥ तबलगिसुषसपनेहुंनहीकिएकोटिउपचार॥१०७
सुनिमुनिबचनरामुसकुचाने॥ भावभगतिआनंदअघाने॥ तबरघुबरमुनिसुजसुसुहा
वा॥ कोटिभाँतिकहिसबहिसुनावा॥ सोबडसोसबगुनगनगेहू॥ जेहिमुनीसतुम्हआद
रदेहू॥ मुनिरघुबीरपरसपरनवहीं॥ बचनअगोचरसुषअनुभवहीं॥ यहसुधिपायप्रयाग
निवासी॥ बटुतापसमुनिसिद्धउदासी॥ भरद्वाजआश्रमसबआए॥ देषनदसरथसुअनसु
हाए॥ रामप्रनामकीन्हसबकाहू॥ मुदितभएलहिलोचनलाहू॥ देहिंअसीसपरमसुषपा
ई॥ फिरेसराहतसुंदरताई॥ दोहा॥ रामकीन्हबिश्रामनिसिप्रातप्रयागनहाइ॥ चलेस
हितसियलषनजनमुदितमुनिहिसिरनाइ॥१०८॥ रामसप्रेमकहेउमुनिपाहीं॥ नाथ
कहियहमकेहिमगजाहीं॥ मुनिमनबिहसिरामसनकहहीं॥ सुगमसकलमगतुम्हक

अ०
८२

हुं अहहीं॥ साथ लागि मुनि सिष्य बोलाए॥ सुनि मन मुदित पचासक आए॥ सबन्हि राम प
र प्रेम अपारा॥ सकल कहहिं मगु दीख हमारा॥ मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे॥ जिन्ह बहु जनम
सुकृत सब कीन्हे॥ करि प्रनाम रिषि आयसु पाई॥ प्रमुदित हृदय चले रघुराई॥ ग्राम नि
कट निकसहिं जब जाई॥ देखहिं दरसु नारि नर धाई॥ होहिं सनाथ जनम फलु पाई॥ फिरहिं
दुखित मनु संग पठाई॥ दोहा॥ बिदा किए बटु बिनय करि फिरे पाइ मन काम॥ उतरि नहाए
जमुन जल जो सरीर सम स्याम॥१०८॥ सुनत तीर बासी नर नारी॥ धाए निज निज काज बिसा
री॥ लषन राम सिय सुंदरताई॥ देखि करहिं निज भाग्य बडाई॥ अति लालसा बसहिं मन
माहीं॥ नाउँ गाउँ बूझत सकुचाहीं॥ जे तिन्ह महुँ बयबृद्ध सयाने॥ तिन्ह करि जुगुति राम प
हिचाने॥ सकल कथा तिन्ह सबहि सुनाई॥ बनहि चले पितु आयसु पाई॥ सुनि सबिषा ८२

द सकल पछिताहीं॥ रानी राय कीन्ह भल नाहीं॥ तेहि अवसर एक तापस आवा॥ तेज पुंज
लघु बयस सुहावा॥ कबि अलखित गति बेषु बिरागी॥ मन क्रम बचन राम अनुरागी॥ दोहा॥
सजल नयन तन पुलकि निज इष्टदेव पहिचानि॥ परे उ दंड जिमि धरनितल दसा न जाइ ब
खानि॥ १०५॥ राम सप्रेम पुलकि उर लावा॥ परम रंक जनु पारस पावा॥ मनहु प्रेम परमारथ
दोउ॥ मिलत धरें तन कह सब कोऊ॥ बहुरि लखन पायन्ह सोइ लागा॥ लीन्ह उठाइ उम
गि अनुरागा॥ पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा॥ जननि जानि सिसु दीन्ह असीसा॥ कीन्ह
निषाद दंडवत तेही॥ मिले मुदित लखि राम सनेही॥ पियत नयन पुट रूप पियूषा॥ मुदि
त सुअसन पाइ जिमि भूषा॥ ते पितु मातु कहहु सखि कैसे॥ जिन्ह पठए बन बालक ऐसे॥
राम लखन सिय रूप निहारी॥ होहिं सनेह बिकल नर नारी॥ दोहा॥ तब रघुबीर अनेक बिधि

सषहिसिषावनदीन्ह॥रामरजायसुसीसधरिभवनगवनतेहिकीन्ह॥११०॥पुनिसियराम
अ० लषनकरजोरी॥जमुनहिकीन्हप्रनामबहोरी॥चलेससीयमुदितदोउभाई॥रबितनुजाकेक
४३ रतबडाई॥पथिकअनेकमिलहिमगजाता॥कहहिसप्रेमदेषिदोउभ्राता॥राजलषनस
बअंगतुम्हारे॥देषिसोचुअतिहृदयहमारे॥मारगचलहुपयादेहिपाए॥जोतिषझूठहमा
रेभाए॥अगमपंथगिरिकाननभारी॥तेहिमहसाथनारिसुकुमारी॥करिकेहरिवनजाइन
जोई॥हमसंगचलहिंजोआयसुहोई॥जावजहांलगितहंपहुचाई॥फिरववहोरितुमहिसि
रनाई॥दोहा॥एहिविधिपूछहिंप्रेमवसपुलकगातजलनैन॥कृपासिंधुफेरहिंतिन्हहिक
हिविनीतमृदुवैन॥१११॥जेपुरगावंवसहिंमगमाहीं॥तिन्हहिनागसुरनगरसिहाहीं॥के ४३
हिसुकृतीकेहिघरीवसाए॥धन्यपुंन्यमयपरमसुहाए॥जहंजहंरामचरनचलिजाहीं॥तिन्ह

समानअमरावतिनाहीं॥पुन्यपुंजमगनिकटनिवासी॥तिन्हहिसराहहिंसुरपुरवासी॥
जेभरिनयनबिलोकहिंरामहि॥सीतालषनसहितघनस्यामहि॥जेसरसरितरामअवगाह
हिं॥तिन्हहिदेवसरसरितसराहहिं॥जेहितरुतरप्रभुबैठहिंजाई॥करहिंकल्पतरुतासुबडा
ई॥परसिरामपदपदुमपरागा॥मानतिभूमिभूरिनिजभागा॥दोहा॥छांहकरहिंघनबिबु
धगनबरषहिंसुमनसिहाहिं॥देषतगिरिबनबिहगमृगरामुचलेबनजाहिं॥११३॥सीता
लषनसहितरघुराई॥गांवनिकटजबनिकसहिंजाई॥सुनिसबबालबृद्धनरनारी॥चलहिं
तुरतगृहकाजबिसारी॥रामलषनसियरूपनिहारी॥पाइनयनफलहोहिंसुषारी॥सजल
बिलोचनपुलकसरीरा॥सबभयेमगनदेषिदोउबीरा॥बरनिनजाइदसातिन्हकेरी॥लहि
जनुरंकन्हिसुरमनिढेरी॥एकन्हएकबोलिसिषदेहीं॥लोचनलाहुलेहुछनयेहीं॥एकराम

श्री०
४४

हिदेयेअनुरागे॥ चितवतचलेजाहिंसंगलागे॥ एकनयनमगछविउरआनी॥ होहिंसिथि
लतनमनवरवानी॥ दोहा॥ एकदेषिवटछाँहभलिडासिम्रदुलत्रनपात॥ कहहिंगवाइ
अछिनुकुश्रमगवनवअवहिंकिप्रात॥११३॥ एककलसभरिआनहिपानी॥ अचइअना
थकहहिंम्रदुवानी॥ मुनिप्रियवचनप्रीतिअतिदेषी॥ रामकृपालसुसीलविशेषी॥ जानी
श्रमितसीयमनमाहीं॥ घरिकविलंवकीन्हवटछाहीं॥ मुदितनारिनरदेषहिंसोभा॥ रू
पअनूपनयनमनुलोभा॥ एकटकसवजोवहिंचहुंओरा॥ रामचंद्रमुषचंदचकोरा॥ तरुन
तमालवरनतनुसोहा॥ देषतकोटिमदनमनुमोहा॥ दामिनिवरनलषनसुठिनीके॥ नष
सिषसुभगभावतेजीके॥ मुनिपटकटिन्हकसेतूनीरा॥ सोहहिंकरकमलनिधनुतीरा॥ दो० ४४
जटामुकुटसीसनसुभगउरभुजनयनविसाल॥ सरदपरवविधुवदनवरलसतसेदकनजा

ल॥२२४॥बरनिनजाइमनोहरजोरी॥सोभाबहुतथोरिमतिमोरी॥रामलषनसियसुंदरताई
सबचितवहिंचितमनमतिलाई॥थकेनारिनरप्रेमपिआसे॥मनहुमृगीमृगदेषिदिआसे
सीयसमीपग्रामतियजाहीं॥पूछतअतिसनेहसकुचाहीं॥बारबारसबलागहिपाएं॥कह
हिबचनमृदुसरलसुभाएं॥राजकुमारिबिनयहमकरहीं॥तियसुभायकछुपूछतडर
हीं॥स्वामिनिअबिनयछमबिहमारी॥बिलगुनमानबिजानिगवारी॥राजकुंअरदोउसह
जसलोने॥इन्हतेलहिदुतिमरकतसोने॥दोहा॥स्यामलगोरकिसोरबरसुंदरसुषमाऐ
यन॥सरदसरबरीनाथमुषसरदसरोरुहनयन॥२२५॥कोटिमनोजलजावनिहारे॥सुमु
षिकहहुकोआहितुम्हारे॥सुनिसनेहमयमंजुलबानी॥सकुचिसीयमनमहुमुसुकानी
तिन्हहिबिलोकिबिलोकतधरनी॥दुहुसकोचसकुचतिबरबरनी॥सकुचिसप्रेमबालमृग

अ० ४५

गानेनी॥ बोलीमधुरबचनपिकबयनी॥ सहजसुभायसुभगतनगोरे॥ नामुलषनुलघुदेव
रमोरे॥ बहुरिबदनबिधुअंचलढांकी॥ पियतनचितइभौंहकरिबांकी॥ षंजनमंजुतिरीछे
नयननि॥ निजपतिकहेउतिन्हहिसियसयननि॥ भईमुदितसबग्रामबधूटी॥ रंकनरा
यरासिजनुलूटी॥ दोहा॥ अतिसप्रेमसियपायपरिबहुबिधिदेहिअसीस॥ सदासोहागि
निहोहुतुम्हजबलगिमहिअहिसीस॥ ११६॥ पारबतीसमपतिप्रियहोहु॥ देबिनहमपर
छाडबछोहु॥ पुनिपुनिबिनयकरिअकरजोरी॥ जौंएहिमारगफिरिअबहोरी॥ दरसनु
देबजानिनिजदासी॥ लषीसीयसबप्रेमपियासी॥ मधुरबचनकहिकहिपरितोषी॥ जनु
कुमुदिनीकौमुदीपोषी॥ तबहिलषनरघुबररुषजानी॥ पूछेउमगुलोगन्हिमृदुबानी॥ ४५
सुनतनारिनरभएदुषारी॥ पुलकितगातबिलोचनबारी॥ मिटामोदमनभएमलीने

विधिनिषिधिदीन्हिलेतजनुछीने॥समुझिकरमगतिधीरजुकीन्हा॥सोधिसुगाममगुतिन्हक
हिदीन्हा॥दोहा॥ लषनुजानकीसहिततवगवनुकीन्हरघुनाथ॥फेरेसवप्रियवचनुक
हिलिएलाइमनसाथ॥११७॥फिरतनारिनरअतिपछितांहीं॥देअहिदोषुदेहिमनुमाहीं
सहितविषादपरसपरकहहीं॥विधिकरतवउलटेसवअहहीं॥निपटनिरंकुसनीचुनिसं
कू॥जेहिससिकीन्हसरुजसकलंकू॥रूखकलपतरुसागरखारा॥तेहिपठएवनराजकुमा
रा॥जौंपैइन्हहिदीन्हवनवासू॥कीन्हवादिविधिभोगविलासू॥येविचरहिमगविनुपद
त्राना॥रचेवादिविधिवाहननाना॥येमहिपरहिंडासिकुसपाता॥सुभगसेजकतसृजी
विधाता॥तरुतरवासइन्हहिविधिदीन्हा॥धवलधामरचिरचिश्रमकीन्हा॥दोहा॥ जौंयेमु
निपटधरजटिलसुंदरसुठिसुकुमार॥विविधभांतिभूषनवसनवादिकिएकरतार॥११८॥

अ॰ ४६ जौं ए कंद मूल फल षाहीं॥ बादि सुधादि असन जग माहीं॥ एक कहहिं ए सहज सुहाए॥ आपु
प्रगट भए बिधि न बनाए॥ जहँ लगि बेद कही बिधि करनी॥ श्रवन नयन मन गोचर बरनी॥ दे
षहु षोजि भुवन दस चारी॥ कहँ अस पुरुष कहाँ असि नारी॥ इन्हहि देषि बिधि मन अनुरा
गा॥ पटतर जोग बनावै लागा॥ कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आए॥ तेहि इरषा बन आनि दुराए॥
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं॥ आपुहि परम धन्य करि मानहिं॥ ते पुनि पुन्यपुंज हम ले
षे॥ जे देषहिं देषिहहिं जिन्ह देषे॥ दोहा॥ एहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय लेहि नयन भरि
नीर॥ किमि चलिहहि मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर॥ ११९॥ नारि सनेह बिकल बस हो
हीं॥ चकई सांझ समय जनु सोहीं॥ मृदु पद कमल कठिन मगु जानी॥ गहबरि हृदय कहे ४६
हि बर बानी॥ परसत मृदुल चरन अरुनारे॥ सकुचति महि जिमि हृदय हमारे॥ जौ जगदी

सइ उन्हहि बनु दीन्हा॥ कस न सुमनमय मारगु कीन्हा॥ जौं माँगा पाइअ बिधि पाहीं॥ ये र
षिअहिं सषि आषिन्ह माहीं॥ जे नर नारि न अवसर आए॥ तिन्ह सिय रामु न देषन पाए॥
मुनि सरूप बूझहिं अकुलाई॥ अब लगि गए कहाँ लगि भाई॥ समरथ धाइ बिलोकहिं जा
ई॥ प्रमुदित फिरहिं जनमफल पाई॥ दोहा॥ अबला बालक बृद्ध जन कर मीजहिं पछि
ताहिं॥ होहिं प्रेमबस लोग इमि रामु जहाँ जहँ जाहिं॥ १२०॥ गाँव गाँव अस होइ अनंदू॥
देषि भानुकुल कैरव चंदू॥ जे कछु समाचार सुनि पावहिं॥ ते न्रप रानिहि दोषु लगावहिं॥
कहहिं एक अति भल नरनाहू॥ दीन्ह हमहि जेहिं लोचन लाहू॥ कहहिं परसपर लोग लो
गाईं॥ बातैं सरल सनेह सुहाईं॥ ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाए॥ धन्य सो नगरु जहाँ ते आए॥
धन्य सो देसु सैलु बन गाऊँ॥ जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ॥ सुष पायउ बिरंचि रचि तेही॥

अ॰ येजेहिकेसबभाँतिसनेही॥रामलषनपथिककथासुहाई॥रहीसकलमगकाननछाई॥
८७ दोहा॥ एहिविधिरघुकुलकमलरविमगलोगन्हसुषदेत॥जाहिंचलेदेषतविपिनसि
यसौमित्रिसमेत॥१२३॥आगेरामलषनवनेपाछे॥तापसवेषविराजतकाछे॥उभयवीच स
सियसोहतिकैसे॥ब्रह्मजीवविचमायाजैसे॥वहुरिकहौंछविजसिमनवसई॥जनुमधुम
दनमध्यरतिलसई॥उपमावहुरिकहौंजियजोही॥जनुवुधविधुविचरोहिनिसोही॥प्र
भुपदरेषवीचविचसीता॥धरतिचरनमगचलतिसभीता॥सीयरामपदअंकवराए॥ल
षनचलहिंमगुदाहिनलाए॥रामलषनसियप्रीतिसुहाई॥वचनअगोचरकिमिक
हिजाई॥षगमृगमगनदेषिछविहोहीं॥लिएचोरिचितरामवटोहीं॥दोहा॥जिन्हजि ८७
न्हदेषेपथिकप्रियसीयसहितदोउभाइ॥भवमगुअगमुअनंदुतेइविनुश्रमरहेसिराइ॥

इ॥१२४॥ अजहुँ जासु उर सपनेहु काऊ॥ बसहु लषनु सिय रामु बटाऊ॥ राम धाम पथ पाइ
हि सोई॥ जो पथ पावक बहु मुनि कोई॥ तब रघुबीर श्रमित सिय जानी॥ देषि निकट बटु सीत
ल पानी॥ तहँ बसि कंद मूल फल षाई॥ प्रात नहाइ चले रघुराई॥ देषत बन सर सैल सुहाए
बालमीकि आश्रम प्रभु आए॥ राम दीष मुनि बासु सुहावनु॥ सुंदर गिरि काननु जलु पा
वनु॥ सरनि सरोज बिटप बन फूले॥ गुंजत मंजु मधुप रस भूले॥ षग मृग बिपुल कोलाह
ल करहीं॥ बिरहित बैर मुदित मन चरहीं॥ दोहा॥ सुचि सुंदर आश्रमु निरषि हरषे राजिव
नैन॥ सुनि रघुबर आगवनु मुनि आगे आए लेन॥१२३॥ मुनि कहँ राम दंडवत कीन्हा॥
आशिर्बाद बिप्रबर दीन्हा॥ देषि राम छबि नयन जुड़ाने॥ करि सनमानु आश्रमहिं आने॥
मुनिबर अतिथि प्रान प्रिय पाए॥ कंद मूल फल मधुर मगाए॥ सिय सौमित्रि राम फल षाए

आ० २॥ तव मुनि आसन दिए सुहाए॥ बालमीकि मन आनंदु भारी॥ मंगल मूरति नयन नि
४८ हारी॥ तव कर कमल जोरि रघुराई॥ बोले वचन श्रवन सुषदाई॥ तुम्ह त्रिकाल दरसी मु
निनाथा॥ विश्व वद्र जिमि तुम्हरे हाथा॥ अस कहि प्रभु सव कथा बषानी॥ जेहि जेहि भांति
दीन्ह वन रानी॥ दोहा॥ तात वचन पुनि मातु हित भाइ भरत अस राउ॥ मो कहं दरस तुम्हा
र प्रभु सव मम पुन्य प्रभाउ॥१२४॥ देषि पाय मुनिराय तुम्हारे॥ भए सुकृत सव सुफल ह
मारे॥ अव जहं राउर आयसु होई॥ मुनि उदवेग न पावै कोई॥ मुनि तापस जिन्ह ते दुष ल
हहीं॥ ते नरेस विनु पावक दहहीं॥ मंगल मूल विप्र परितोषू॥ दहइ कोटि कुल भूसुर रो
षू॥ अस जिय जानि कहिय सोइ ठाउं॥ सिय सौमित्रि सहित जहं जाउं॥ तहं रचि रुचिर प ४८
रन तृन साला॥ वास करउं कछु काल कृपाला॥ सहज सरल सुनि रघुवर वानी॥ साधु सा

धुवोलेमुनिग्यानी॥ कसनकहहुअसरघुकुलकेतू॥ तुम्हपालकसंततश्रुतिसेतू॥ छंदः॥
श्रुतिसेतुपालकरामतुम्हजगदीसमायाजानकी॥ जोस्रजतिजगुपालतिहरतिरु
षपाइकृपानिधानकी॥ जोसहससीसुअहीसमहिधरुलषनुसचराचरधनी॥ सुर
काजधरिनरराजतनुचलेदलनषलनिसिचरअनी॥ सोरठा॥ रामसरूपतुम्हारवच
नअगोचरबुद्धिपर॥ अविगतअकथअपारनेतिनेतिनितनिगमकह॥१४५॥ जगुपेष
नतुम्हदेषनिहारे॥ विधिहरिसंभुनचावनिहारे॥ तेउनजानहिमरमतुम्हारा॥ औ
रतुम्हहिकोजाननिहारा॥ सोइजानइजेहिदेहुजनाई॥ जानततुम्हहितुम्हइहोइजाई॥
तुम्हरिहिकृपातुम्हहिरघुनंदन॥ जानहिभगतभगतउरचंदन॥ चिदानंदमयदेहतु
म्हारी॥ विगतविकारजानअधिकारी॥ नरतनुधरेहुसंतसुरकाजा॥ कहहुकरहुजस

अ०
४८
प्राकृतनरराजा॥ रामदेखिमुनिचरितुम्हारे॥ जडमोहहिंबुधहोहिंसुषारे॥ तुम्हजोकहहु
करहुसबुसाचा॥ जसकाछिअतसचाहियनाचा॥ दोहा॥ पूछेहुमोहिकिरहौंकहँमैपू
छतसकुचाउँ॥ जहँनहोहुतहँदेहुकहितुम्हहिदेषावउँठाउँ॥१२६॥ सुनिमुनिबच
नप्रेमरससाने॥ सकुचिराममनमहुँमुसकाने॥ बालमीकिहसिकहहिंबहोरी॥ बा
नीमधुरअमियरसबोरी॥ सुनहुरामअबकहौंनिकेता॥ जहांबसहुसियलषनसमेता॥
जिन्हकेश्रवनसमुद्रसमाना॥ कथातुम्हारिसुभगसरिनाना॥ भरहिंनिरंतरहोहिंन
पूरे॥ तिन्हकेहियतुम्हकहुँगृहरूरे॥ लोचनचातकजिन्हकरिराषे॥ रहहिंदरसजलध
रअभिलाषे॥ निदरहिंसरितसिंधुसरभारी॥ रूपबिंदुजलहोहिंसुषारी॥ तिन्हकेहृदयसद ४८
नसुषदायक॥ बसहुबंधुसियसहरघुनायक॥ दोहा॥ जसतुम्हारमानसबिमलहंसिनिजीहा

हा जासु ॥ मुकुताहल गुन गन चुनइ राम बसहु मन तासु ॥१२७॥ प्रभु प्रसाद सुचि सुभग
सुबासा ॥ सादर जासु लहइ नित नासा ॥ तुम्हहि निवेदित भोजन करहीं ॥ प्रभु प्रसाद पट
भूषन धरहीं ॥ सीस नवहि सुर गुर द्विज देखी ॥ प्रीति सहित करि विनय विशेषी ॥ कर नित
करहि राम पद पूजा ॥ राम भरोस हृदय नहि दूजा ॥ चरन राम तीरथ चलि जाहीं ॥ राम बसहु
तिन्ह के मन माहीं ॥ मंत्रराज नित जपहि तुम्हारा ॥ पूजहि तुम्हहि सहित परिवारा ॥ तरप
न होम करहि विधि नाना ॥ विप्र जेवाइ देहि बहु दाना ॥ तुम्ह ते अधिक गुरहि जिय जानी ॥
सकल भाय सेवहि सनमानी ॥ दोहा ॥ सबु करि मागहि एक फल राम चरन रति होउ ॥ ति
न्ह के मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ ॥१२८॥ काम क्रोध मद मान न मोहा ॥ लोभ न
छोभ न राग न द्रोहा ॥ जिन्ह के कपट दंभ नहि माया ॥ तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया ॥ सब

अ० ५०

के प्रिय सबके हितकारी॥ दुष सुष सरिस प्रसंसा गारी॥ कहहि सत्य प्रिय बचन बिचारी॥ जा
गत सोवत सरन तुम्हारी॥ तुम्हहि छाडि गति दूसरि नाहीं॥ राम बसहु तिन्ह के मन माहीं॥ ज
ननी सम जानहि पर नारी॥ धन पराव बिष ते बिष भारी॥ जे हरषहि पर संपति देषी॥ दुषित हो
हि पर बिपति बिशेषी॥ जिन्हहि राम तुम्ह प्रान पियारे॥ तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे॥ दोहा
स्वामि सषा पितु मातु गुरु जिन्ह के सब तुम्ह तात॥ मन मंदिर तिन्ह के बसहु सीय सहित दोउ भ्रा
त॥१२९॥ अवगुन तजि सबके गुन गहहीं॥ बिप्र धेनु हित संकट सहहीं॥ नीति निपुन जिन्ह क
इ जग लीका॥ घर तुम्हार तिन्ह कर मन नीका॥ गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा॥ जेहि सब भांति
तुम्हार भरोसा॥ राम भगत प्रिय लागहि जेही॥ तेहि उर बसहु सहित बैदेही॥ जाति पांति धनु ५०
धरमु बडाई॥ प्रिय परिवार सदन सुषदाई॥ सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई॥ तेहि के हृदय र

हहु रघुराई॥ सरगु नरकु अपबरगु समाना॥ जहँ तहँ देष धरे धनु बाना॥ करम बचन मन राउ
र चेरा॥ राम करहु तेहि कें उर डेरा॥ दोहा॥ जाहि न चाहिय कबहु कछु तुम्ह सन सहज सनेहु॥
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु॥१३०॥ एहि बिधि मुनिबर भवन दिषाए॥ बचन स
प्रेम राम मन भाए॥ कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक॥ आश्रम कहउँ समय सुषदायक॥
चित्रकूट गिरि करहु निवासू॥ तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू॥ सैल सुहावन कानन चारू॥ करि
केहरि मृग बिहग बिहारू॥ नदी पुनीत पुरान बषानी॥ अत्रिप्रिया निज तप बल आनी॥ सुरसरि
धार नाउँ मंदाकिनि॥ जो सब पातक पोतक डाकिनि॥ अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं॥ करहिं
जोग जप तप तन कसहीं॥ चलहु सफल स्रम सब कर करहू॥ राम देहु गौरव गिरिबरहू॥ दोहा
चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ॥ आइ नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाइ॥१३१॥

अ० रघुबर कहेउ लषन भल घाटू॥ करहु कतहु अब ठाहरु ठाटू॥ लषन दीष पय उतर करा
५१ रा॥ चहु दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा॥ नदी पनच सर सम दम दाना॥ सकल कलुष क
लि साउज नाना॥ चित्रकूट जनु अचल अहेरी॥ चुकइ न घात मार मुठभेरी॥ अस कहि
लषन ठाउ देषरावा॥ थलु बिलोकि रघुबर सुष पावा॥ रमेउ राम मनु देवन्ह जाना॥
चले सहित सुरपति परधाना॥ कोल किरात बेष सब आए॥ रचे परन तृन सदन सुहाए॥
बरनि न जाहि मंजु दुइ साला॥ एक ललित लघु एक बिसाला॥ दोहा॥ लषन जानकी
सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत॥ सोह मदनु मुनि बेष जनु रति रितुराज समेत॥१३४॥ अम
र नाग किंनर दिसिपाला॥ चित्रकूट आए तेहि काला॥ राम प्रनाम कीन्ह सब काहू॥ मुदि ५१
त देव लहि लोचन लाहू॥ बरषि सुमन कह देव समाजू॥ नाथ सनाथ भए हम आजू॥ क

रि विनती सुर सहस सुनाए॥ हरषित निज निज सदन सिधाए॥ चित्रकूट रघुनंदनु छा
ए॥ समाचार सुनि सुनि मुनि आए॥ आवत देखि मुदित मुनिवृंदा॥ कीन्ह दंडवत रघुकुल
नंदा॥ मुनि रघुवरहि लाइ उर लेही॥ सुफल होन हित आसिष देही॥ सिय सौमित्रि राम छ
वि देखहि॥ साधन सकल सफल करि लेखहि॥ दोहा॥ जथाजोग सनमानि प्रभु विदा किए
मुनिवृंद॥ करहि जोग जप जाग तप निज आश्रमनि सुछंद॥१३३॥ यह सुधि कोल किरा
तन्ह पाई॥ हरषे जनु नव निधि घर आई॥ कंद मूल फल भरि भरि दोना॥ चले रंक जनु लू
टन सोना॥ तिन्ह महं जिन्ह देखे दोउ भ्राता॥ अपर तिन्हहि पूछहि मगु जाता॥ कहत
सुनत रघुवीर निकाई॥ आइ सवनि देखे रघुराई॥ करहि जोहारु भेट धरि आगे॥ प्रभुहि
अति विलोकहि अनुरागे॥ चित्र लिखे जनु जहं तहं ठाढे॥ पुलक सरीर नयन जल वाढे॥ राम

अ० ५२

सनेहमगनसवजाने॥कहिप्रियवचनसकलसनमाने॥प्रभुहिजोहारिवहोरिवहोरी
वचनविनीतकहहिकरजोरी॥दोहा॥अवहमनाथसनाथसवभएदेषिप्रभुपाय॥भा
गहमारेआगमनुराउरकोशलराय॥१३५॥धन्यभूमिवनपंथपहारा॥जंहजंहनाथ
पाउंतुम्हधारा॥धन्यविहगमृगकाननचारी॥सफलजन्मभएतुम्हहिनिहारी॥ह
मसवधन्यसहितपरिवारा॥दीषदरसभरिनयनतुम्हारा॥कीन्हवासुभलठांउविचा
री॥इहांसकलरितुरहवसुषारी॥हमसवभांतिकरवसेवकाई॥करिकेहरिअहिवाघव
राई॥वनवेहडगिरिकंदरषोहा॥सवहमारप्रभुपगपगजोहा॥जंहतंहतुम्हहिअहेर
षेलाउव॥सरनिर्झरजलठांउदेषाउव॥हमसेवकपरिवारसमेता॥नाथनसकुचवं ५२
आयसुदेता॥दोहा॥वेदवचनमुनिमनअगमतेप्रभुकरुनाऐन॥वचनकिरातन्हकें

सुनत न जिमि पितु बालक बैन॥१३५॥ रामहि केवल प्रेमु पिआरा॥ जानि लेउ जो जाननि-
हारा॥ राम सकल बनचर तब तोषे॥ कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे॥ बिदा किए सिर नाइ
सिधाए॥ प्रभु गुन कहत सुनत घर आए॥ एहि बिधि सिय समेत दोउ भाई॥ बसहिं बिपि-
न सुर मुनि सुखदाई॥ जब ते आइ रहे रघुनायकु॥ तब ते भएउ बन मंगलदायकु॥ फूल-
हिं फलहिं बिटप बिधि नाना॥ मंजु बलित बर बेलि बिताना॥ सुरतरु सरिस सुभाय सुहा-
ए॥ मनहु बिबुध बन परिहरि आए॥ गुंज मंजुतर मधुकर श्रेनी॥ त्रिबिध बयारि बहै सु-
ख देनी॥ दोहा॥ नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्क चकोर॥ भांति भांति बोलहिं बिहग श्र-
वन सुखद चित चोर॥१३६॥ करि केहरि कपि कोल कुरंगा॥ बिगत बैर बिचरहिं सब संगा॥
फिरत अहेर राम छबि देखी॥ होहिं मुदित मृग बृंद बिसेषी॥ बिबुध बिपिन जहं लगि जग

अ॰
५३

गमाहीं॥ देखिप्रभाउसकलसिहाहीं॥ सुरसरिसरसइदिनकरकन्या॥ मेकलसुतागो
दावरिधन्या॥ सबसरसिंधुनदीनदनाना॥ मंदाकिनिकरकरहिंबखाना॥ उदेअस्त॰
गिरिअरुकैलासू॥ मंदरमेरुसकलसुरबासू॥ सैलहिमाचलआदिकजेते॥ चित्रकूटज
सुगावहितेते॥ विंधिमुदितमनसुखनसमाई॥ श्रमबिनुबिपुलबडाईपाई॥ दोहा॥ चि
त्रकूटकेबिहगमृगबेलिबिटपतृनजाति॥ पुन्यपुंजसबधन्यअसकहहिंदेवदिनरा॰
ति॥ १३७॥ नैनवंतरघुबरहिबिलोकी॥ पाइजनमफलहोहिबिसोकी॥ परसिचरनरजअ
चरसुखारी॥ भएपरमपदकेअधिकारी॥ सोबनसैलसुभायसुहावन॥ मंगलमयअति
पावनपावन॥ महिमाकहिअकवनिबिधितासू॥ सुखसागरजहँकीन्हिनिवासू॥ पयप॰ ५३
योधितजिअवधबिहाई॥ जहँसियलखनुरामुरहेआई॥ कहिनसकहिंसुखमाजसिका

नन जौं सत सहस होहिं सहसानन ॥ सो मैं बरनि कहौं बिधि केहीं ॥ डाबर कमठ कि मंद
र लेहीं ॥ सेवहिं लषनु करम मन बानी ॥ जाइ न सील सनेह बषानी ॥ दोहा ॥ छिनु छिनु ल
षि सिय राम पद जानि आपु पर नेहु ॥ करत न सपनेहु लषनु चित बंधु मातु पितु गेहु ॥ १३८ ॥
राम संग सिय रहति सुषारी ॥ पुर परिजन गृह सुरति बिसारी ॥ छिनु छिनु पिय बिधु बदनु
निहारी ॥ प्रमुदित मनहु चकोरकुमारी ॥ नाह नेह नित बढ़त बिलोकी ॥ हरषित रहति दिव
स जिमि कोकी ॥ सिय मनु राम चरन अनुरागा ॥ अवध सहस सम बनु प्रिय लागा ॥ परनकु
टी प्रिय प्रियतम संगा ॥ प्रिय परिवारु कुरंग बिहंगा ॥ सासु ससुर सम मुनितिय मुनिबर ॥ अ
सनु अमिय सम कंद मूल फर ॥ नाथ साथ साथरी सुहाई ॥ मयन सयन सत सम सुषदाई ॥
लोकप होहिं बिलोकत जासू ॥ तेहि कि मोहि सक बिषय बिलासू ॥ दोहा ॥ सुमिरत रामहि तज

अ०
५४

जहिजनतरनसमविषयविलासु॥रामप्रियाजगजननिसियकछुनआचरजुतासु॥१३९
सीयलषनुजेहिविधिसुषलहहीं॥सोइरघुनाथकरहिसोइकहहीं॥कहहिपुरात
नकथाकहानी॥सुनहिलषनुसियअतिसुषमानी॥जबजबरामअवधसुधिकरहीं॥
तबतबवारिविलोचनभरहीं॥सुमिरिमातुपितुपरिजनभाई॥भरतसनेहुसीलसेवकाई
कृपासिंधुप्रभुहोहिदुषारी॥धीरजधरहिकुसमउविचारी॥लषिसियलषनुविकलहोइ
जाहीं॥जिमिपुरुषहिअनुसरपरिछाहीं॥प्रियाबंधुगतिलषिरघुनंदनु॥धीरकृपाल
भगतउरचंदनु॥लगेकहनकछुकथापुनीता॥सुनिसुषलहहिलषनुअरुसीता॥दो०
रामलषनसीतासहितसोहतपरननिकेत॥जिमिवासवबसअमरपुरसचीजयंतसमे ५४
त॥१४०॥जोगावहिप्रभुसियलषनहिकैसें॥पलकविलोचनगोलककैजैसें॥सेवहिलषनु

सीयरघुवीरहि॥जिमिअविवेकीपुरुषसरीरहि॥एहिविधिप्रभुवनवसहिसुषारी॥षग
म्रगसुरतापसहितकारी॥कहेउंरामवनगवनसुहावा॥सुनहुसुमंत्रअवधजिमिआवा
फिरिउनिषादप्रभुहिपहुचाई॥सचिवसहितरथदेषेसिआई॥मंत्रीविकलविलोकिनि
षादू॥कहिनजाइजसभयउविषादू॥रामरामसियलषनपुकारी॥परेउधरनितलव्याकु
लभारी॥देषिदषिनदिसिहयहिहिनाहीं॥जनुविनुपंषविहगअकुलाहीं॥दोहा॥नहि
त्नचरहिनपियहिजलुमोचहिलोचनवारि॥व्याकुलभएनिषादसबरघुवरवाजिनि
हारि॥४१॥धरिधीरजुतबकहइनिषादू॥अबसुमंत्रपरिहरहुविषादू॥तुम्हपंडितपरमा
रथग्याता॥धरहुधीरलषिविमुषविधाता॥विविधकथाकहिकहिम्रदुवानी॥रथवैठारेअ
रवसआनी॥सोकसिथिलरथसकैनहांकी॥रघुवरविरहपीरउरवांकी॥तरफराहिमग

श्री०
५५

चलहि नघोरे॥ बन मृग मनहु आनि रथ जोरे॥ अढुकि परहि फिरि हेरहि पीछे॥ राम बि
योग बिकल दुख तीछे॥ जो कह रामु लषनु बैदेही॥ हिंकरि हिंकरि हित हेरहि तेही॥ बाजि
बिरह गति कहि किमि जाती॥ बिनु मनि फनिक बिकल जेहि भांती॥ दोहा॥ भयउ निषा
दु बिषाद बस देषत सचिव तुरंग॥ बोलि सुसेवक चारि तब दिए सारथी संग॥ १४२॥ गुह सा
रथिहि फिरेउ पहुचाई॥ बिरह बिषादु बरनि नहि जाई॥ चले अवध लेइ रथहि निषादा॥
होहि छनहि छन मगन बिषादा॥ सोच सुमंत्र बिकल दुष दीना॥ धिग जीवन रघुबीर बि
हीना॥ रहिहि न अंतहु अधम सरीरू॥ जसु न लहेउ बिछुरत रघुबीरू॥ भए अजस अघ
भाजन प्राना॥ कवन हेतु नहि करत पयाना॥ अहह मंद मनु अवसर चूका॥ अजहु न ह
दय होत दुइ टूका॥ मीजि हाथ सिरु धुनि पछिताई॥ मनहु कृपन धन रासि गवाई॥ बि ५५

रदवाँधिवरवीरुकहाई॥ चलेउसमरजनुसुभटपराई॥ दोहा॥ः विप्रविवेकीवेदविदसं
मतसाधुसुजाति॥ जिमिधोखेमदपानकरसचिवसोचतेहिभाँति॥१४३॥ जिमिकुलीनति
यसाधुसयानी॥ पतिदेवताकरममनवानी॥ रहैकरमवसपरिहरिनाहू॥ सचिवहृदय
तिमिदारुनदाहू॥ लोचनसजलडीठिभइथोरी॥ सुनइनश्रवनविकलमतिभोरी॥ सूष
हिंअधरलागिमुहलाटी॥ जिउनजाइउरअवधिकपाटी॥ विवरनभएउनजाइनिहा
री॥ मारेसिमनहुपितामहतारी॥ हानिगलानिविपुलमनव्यापी॥ जमपुरपंथसोचजि
मिपापी॥ वचनुनआवहृदयपछिताई॥ अवधकाहमैदेषवजाई॥ रामरहितरथुदेषिहि
जोई॥ सकुचिहिमोहिविलोकतसोई॥ दोहा॥ धाइपूछिहहिमोहिजवविकलनगरनर
नारि॥ उतरुदेवमैसवहितवहृदयवज्रवैठारि॥१४४॥ पुछिहहिदीनदुषितसवमाता॥ क

अ०
५६

हवकाहेमेतिन्हहिविधाता॥ पूछिहिजवलिखनमहतारी॥ कहिहौंकवनसंदेसुसुषारी॥
रामजननिजवआइहिधाई॥ सुमिरिवछजनुधेनुलवाई॥ पूछतउतरदेवमैतेही॥ गेवनु
रामलखनुवैदेही॥ जोइपूछिहितेहिउतरुदेवा॥ जाउअवधअवयहसुखुलेवा॥ पूछिहिज
वहिराउदुखदीना॥ जिवनुजासुरघुनाथअधीना॥ देहौंउतरुकवनमुहलाई॥ आएउ
कुसलकुंअरपहुचाई॥ सुनतलखनसियरामसंदेसू॥ त्रिनजिमितनुपरिहरिहिनरेसू॥
दोहा॥ हृदउनविदरेउपंकजिमिविछुरतप्रीतमुनीरु॥ जानतहौंमोहिदीनविधियहु
जातनासरीरु॥१४५॥ एहिविधिकरतपंथपछितावा॥ तमसातीरतुरतरथुआवा॥ विदा
किएकरिविनयनिषादा॥ फिरेपायपरिविकलविषादा॥ पैठतनगरसचिवसकुचाई॥ ज ५६
नुमारेसिगुरुवाभनगाई॥ वैठिविटपतरदिवसगवावा॥ सांझसमयतवअवसरुपावा॥ अ

वधप्रवेसुकीन्हअधियारे॥पैठभवनरथुराखिदुआरे॥जिन्हजिन्हसमाचारसुनिपाये॥
भूपद्वाररथुदेषनआए॥रथुपहिचानिविकललषिघोरे॥गरहिगातजिमिआतपओरे॥
नगरनारिनरव्याकुलकैसे॥निघटतनीरमीनगनजैसे॥दोहा॥ सचिवआगमनुसुनत
सवुविकलभयउरनिवासु॥भवनभयंकरुलागतेहिमानहुप्रेतनिवासु॥१४६॥अतिआ
रतिसवपूछहिरानी॥उतरनआवविकलभइवानी॥सुनइनश्रवननयननहिसूझा
वूझा कहहुकहांन्टपजेहितेहि॥दासिन्हदीषसचिवविकलाई॥कौसल्यागृहगईलवाई॥
जाइसुमंत्रदीषकसराजा॥अमिअरहितजनुचंदुविराजा॥आसनसयनविभूषनहीना॥
परेउभूमितलनिपटमलीना॥लेइउसाससोचएहिभाती॥सुरपुरतेजनुषसेउजजाती॥
लेतसोचभरिछिनुछिनुछाती॥जनुजरिपंषपरेउसंपाती॥रामरामकहरामसनेही॥पुनि

अ० ५८

कहुरामलषनवैदेही॥ दोहा॥ देषिसचिवजयजीवकहिकीन्हेउदंडप्रनामु॥ सुनतउठेउ
ब्याकुलन्रपतिकहुसुमंत्रकहँरामु॥१४७॥ भूपसुमंत्रलीन्हउरलाई॥ बूडतकछुअधा
रजनुपाई॥ सहितसनेहनिकटबैठारी॥ पूछतराउनयनभरिबारी॥ रामकुसलकहुसषा
सनेही॥ कहँरघुनाथलषनबैदेही॥ आनेफेरिकिबनहिसिधाए॥ सुनतसचिवलोचनज
लछाए॥ सोकबिकलपुनिपूछनरेसू॥ कहुसियरामलषनसंदेसू॥ रामरूपगुनसील
सुभाऊ॥ सुमिरिसुमिरिउरसोचतराऊ॥ राउसुनाइदीन्हबनबासू॥ सुनिमनभयउनह
रषहरासू॥ सोसुतबिछुरतगएनप्राना॥ कोपापीबडमोहिसमाना॥ दोहा॥ सषारामु
सियलषनजँहतहाँमोहिपहुचाउ॥ नाहितचाहतचलनअबप्रानकहौंसतिभाउ॥ ५८
१४८॥ पुनिपुनिपूछतमंत्रिहिराऊ॥ प्रियतमसुअनसंदेससुनाऊ॥ करहिसषासोइ

वेगि उपाउ॥ राम लषन सिय नयन देषाउ॥ सचिव धीर धरि कह म्रदु वानी॥ महारा
ज तुम्ह पंडित ज्ञानी॥ वीर सुधीर धुरंधर देवा॥ साधु समाजु सदा तुम्ह सेवा॥ जनम मरन
सव दुष सुष भोगा॥ हानि लाभ प्रिय मिलन वियोगा॥ काल करम वस होहिं गोसाईं॥ व
रवस राति दिवस की नाईं॥ सुष हरषहिं जड दुष विलषाहीं॥ दोउ सम धीर धरहिं मन
माहीं॥ धीरज धरहु विवेक विचारी॥ छाडिय सोच सकल हितकारी॥ दोहा॥ प्रथम वास
तमसा भयउ दूसर सुरसरि तीर॥ न्हाइ रहे जलपानु करि सिय समेत दोउ वीर॥ १४८॥
केवट कीन्ह बहुत सेवकाई॥ सो जामिनि सिंगरौर गवाईं॥ होत प्रात वट छीर मगावा॥
जटा मुकुट निज सीस वनावा॥ राम सषा तव नाव मगाई॥ प्रिया चढाइ चढे रघुराई॥ ल
षन वान धनु धरे वनाई॥ आपु चढे प्रभु आयसु पाई॥ विकल विलोकि मोहि रघुवीरा॥

अ०
५८

बोलेमधुरबचनधरिधीरा॥ तातप्रनामतातसनकेहेहू॥ वारवारपदपंकजगहेहू॥ करवि
पायपरिविनयवहोरी॥ तातकरिअजनिचिंतामोरी॥ वनमगमंगलकुसलहमारे॥ क्र
पाअनुग्रहपुन्यतुम्हारे॥ छंद॥ ः तुम्हरेअनुग्रहतातकाननजातसवसुखपाइहौं
प्रतिपालिआयसुकुसलदेखनपायपुनिफिरिआइहौं॥ जननीसकलपरितोषिपरिपे
रिपायकरिविनतीघनी॥ तुलसीकरेहुसोइजतनुजेहिकुसलीरहहिकोसलधनी॥ सो
रठा॥ गुरसनकहवसंदेसवारवारपदपदुमगहि॥ करवसोइउपदेसजेहिनसोचमोहिअ
वधपति॥१५०॥ पुरजनपरिजनसकलनिहोरी॥ तातसुनायहुविनतीमोरी॥ सोइसवभाँ
तिमोरहितकारी॥ जातेरहनरनाहसुखारी॥ कहवसंदेसुभरतकेआए॥ नीतिनतजिअ ५८
राजपदुपाए॥ पालेहुप्रजहिकरममनवानी॥ सेएहुमातुसकलसमजानी॥ औरनिवा

हेतु भायप भाई ॥ करि पितु मातु सुजन सेवकाई ॥ तात भांति तेहि राषब राउ ॥ सोच मोर जेहि
करइ न काउ ॥ लषन कहे कछु बचन कठोरा ॥ बरजि राम पुनि मोहि निहोरा ॥ बार बार निज
सपथ देवाई ॥ कहबि न तात लषन लरिकाई ॥ दोहा ॥ कहि प्रनामु कछु कहन लिय सिय भइ
सिथिल सनेह ॥ थकित बचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह ॥ १५१ ॥ तेहि अवसर रघुबर रु
ष पाई ॥ केवट पारहि नाव चलाई ॥ रघुकुल तिलक चले एहि भांती ॥ देषेउं ठाढ कुलिस धरि
छाती ॥ मैं आपन किमि कहउं कलेसू ॥ जियत फिरेउं लइ राम संदेसू ॥ अस कहि सचिव बच
न रहि गयेउ ॥ हानि गलानि सोच बस भयेउ ॥ सूत बचन सुनतहि नरनाहू ॥ परेउ धरनि उ
र दारुन दाहू ॥ तलफत विषम मोह मन मापा ॥ माजा मनहु मीन कहु ब्यापा ॥ करि विला
प सब रोवहि रानी ॥ महा विपति किमि जाइ बषानी ॥ सुनि बिलाप दुषहु दुष लागा ॥ धीरज

अ०
५८ हंकरिधीरजुभागा॥दोहा॥भएउकोलाहलअवधअतिसुनिनृपराउसोरु॥बिपुल
बिहगबनपरेउनिसिमानहुंकुलिसकठोर॥१५४॥प्रानकंठगतभएउभुआलू॥मनि
बिहीनजनुब्याकुलब्यालू॥इंद्रीसकलबिकलभइभारी॥जनुसरसरसिजबनबिनुबारी
कोसल्यानृपदीखमलाना॥रबिकुलरबिअथएउजियजाना॥उरधरिधीरराममहता
री॥बोलीबचनसमयअनुसारी॥नाथसमुझिमनकरियबिचारू॥रामबियोगपयोधिअ
पारू॥करनधारतुम्हअवधजहाजू॥चढेउसकलप्रियपथिकसमाजू॥धीरजधरिअत
पाइअपारू॥नाहिंतबूडिहिसबपरिवारू॥जौंजियधरिअबिनयपियमोरी॥रामुलखनसि
यमिलहिंबहोरी॥दोहा॥प्रियाबचनमृदुसुनतनृपचितयउआंखिउघारि॥तलफतमी ५८
नमलीनजनुसींचेउसीतलबारि॥१५५॥धरिधीरजुउठिबैठभुआलू॥कहुसुमंत्रकहं

मनहुकपाल॥कहँलषनुकहँरामसनेही॥कहँप्रियपुत्रबधूबैदेही॥बिलपतराउबिकल
बहुभाँती॥भइजुगसरिससिरातिनराती॥तापसअंधसापसुधिआई॥कौसल्यहिसबक
थासुनाई॥भयउबिकलबरनतइतिहासा॥रामरहितधिगजीवनआसा॥सोतनुराखिक
रबिमैकाहा॥जेहिनप्रेमपनुमोरनिबाहा॥हारघुनंदनप्रानपिरीते॥तुम्हबिनुजियतब
हुतदिनबीते॥हाजानकीलषनहारघुबर॥हापितुहितचितचातकजलधर॥दोहा॥रा
मरामकहिरामकहिरामरामकहिराम॥तनुपरिहरिरघुबरबिरहराउगयउसुरधाम
१५४॥जिअनमरनफलुदसरथपावा॥अंडअनेकअमलजसुछावा॥जिअतरामबिधुब
दननिहारा॥रामबिरहकरिमरनसंवारा॥सोकबिकलसबरोवहिरानी॥रूपसीलबल
तेजबखानी॥करहिबिलापअनेकप्रकारा॥परहिभूमितलबारहिबारा॥बिलपहिबिक

अ॰ ६० लदासअरुदासी॥ घरघररुदनुकरहिपुरवासी॥ अथयउआजुभानुकुलभानू॥ धरमअव
धिगुनरूपनिधानू॥ गारीसकलकैकइहिदेही॥ नयनविहीनकीन्हजगजेही॥ यहिविधि
विलपतरइनिविहानी॥ आएसकलमहामुनिग्यानी॥ दोहा॥ तववसिष्ठमुनिसमयसम
कहिअनेकइतिहास॥ सोकनिवारेउसवहिकरनिजविग्यानप्रकास॥१५५॥ तेलनावभरि
न्रपतनुराषा॥ दूतवोलाइवहुरिअसभाषा॥ धावहुवेगिभरतपहिजाहू॥ न्रपसुधिकतहुक
हहुजनिकाहू॥ येतनइकहेहुभरतसनजाई॥ गुरवोलाइपठएदोउभाई॥ सुनिमुनिआ
यसुधावनधाए॥ चलेवेगिवरवाजिलजाए॥ अनरथअवधअरंभेउजवते॥ कुसगुनहोहिं
भरतकहतवते॥ देषहिरातिभयानकसपना॥ जागिकरहिकटुकोटिकलपना॥ विप्रजेवाइ ६०
देहिदिनदाना॥ सिवअभिषेककरहिविधिनाना॥ मागहिहृदयमहेसमनाई॥ कुसलमा

नु पितु परिजन भाई॥ दोहा॥ यहि बिधि सोचत भरत मन धावन पठए आइ॥ गुर अनुसा स
न श्रवन सुनि चले गनेस मनाइ॥१५६॥ चले समीर बेग हय हाँके॥ नाघत सैल सरित बन बाँके॥
हृदै अ सोच बड कछु न सोहाई॥ अस जानहि जिय जाउँ उडाई॥ एक निमेष बरष सम जाई॥ य
हि बिधि भरत नगर निअराई॥ असगुन होहि नगर पैठारा॥ रटहि कुभाँति कुखेत करारा॥ खर
सिआर बोलहि प्रतिकूला॥ सुनि सुनि होइ भरत मन सूला॥ श्रीहत सर सरिता बन बागा॥ नग
र बिशेषि भयावन लागा॥ खग मृग हय गय जाहि न जोए॥ राम बियोग कुरोग बिगोए॥ नगर
नारि नर निपट दुखारी॥ मनहु सबन्ह सब संपति हारी॥ दोहा॥ पुरजन मिलहि न कहहि कछु
गवहि जोहारहि जाहि॥ भरत कुसल पूछि न सकहि भय बिषाद मन माहि॥१५७॥ हाट बाट
नहि जाइ निहारी॥ जनु पुर दह दिसि लागि दवारी॥ आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि॥ हरषी र

श्री
६१

विकुलजलरुहचंदिनि॥ सजिआरतीमुदितउठिधाई॥ द्वारेहिंभेटिभवनलइआई॥ भ
रतदुषितपरिवारुनिहारा॥ मानहुंतुहिनवनजवनुमारा॥ कैकेईहरषितयहिभांती
मनहुंमुदितदवलाइकिराती॥ सुतहिससोचदेषिमनुमारे॥ पूछतिनैहरकुसलहमा
रे॥ सकलकुसलकहिभरतसुनाई॥ पूछीनिजकुलकुसलभलाई॥ कहुकहंतातकहां
सवमाता॥ कहंसियरामलषनप्रियभ्राता॥ दोहा॥ सुनिसुतवचनसनेहमयकपटनी
रभरिनयन॥ भरतश्रवनमनसूलसमपापिनिवोलीवयन॥ १५८॥ तातवातमैंसकलसं
वारी॥ भइमंथरासहाइविचारी॥ कछुककाजविधिवीचविगारेउ॥ भूपतिसुरपतिपुरपगु
धारेउ॥ सुनतभरतभयेविवसविषादा॥ जनुसहमेउकरिकेहरिनादा॥ तात तात हा तात ६१
पुकारी॥ परेभूमितलव्याकुलभारी॥ चलतनदेषनपायउंतोही॥ तातनरामहिसौंपेउ

मोही॥ बहुरिधीरधरि उठेसँभारी॥ कहुपितुमरनहेतुमहतारी॥ सुनिसुतबचनकहतिकै
केई॥ मरमुपाछिजनुमाहुरदेई॥ आदिहुतेसबआपनिकरनी॥ कुटिलकठोरमुदितमनब
रनी॥ दोहा॥ भरतहिबिसरेउपितुमरनसुनतरामबनगौन॥ हेतुअपनपउजानिजियथ
कितरहेधरिमौन॥ १५९॥ बिकलबिलोकिसुतहिसमुझावति॥ मनहुजरेपरलोनुलगाव
ति॥ तातराउनहिसोचइजोग॥ बिढइसुकृतजसुकीन्हेउभोग॥ जीवतसकलजनमफल
पाए॥ अंतअमरपतिसदनसिधाए॥ असअनुमानिसोचुपरिहरहू॥ सहितसमाजराजपु
रकरहू॥ सुनिसुठिसहमेउराजकुमारू॥ पाकेछतजनुलागअँगारू॥ धीरजुधरिभरिलेहिउ
सासा॥ पापिनिसबहिभाँतिकुलनासा॥ जौपैकुरुचिरहीअतितोही॥ जनमतकाहेनमारेमो
ही॥ पेडुकाटितइपालेउसींचा॥ मीनजिअननितिबारिउलीचा॥ दोहा॥ हंसबंसुदसरथु

जनकसुतारामलषनसेभाइ॥ जननीतूंजननीभईविधिसनकछुनवसाइ॥१६०॥ जवतेकुम
अ० १६२ तिकुमतजियठएउ॥ षंडषंडहोइहृदयनगएउ॥ वरमागतमुहभईनपीरा॥ गरिनजी
हमुहपरेउनकीरा॥ भूपप्रतीतितोरिकिमिकीन्ही॥ मरनकालविधिमतिहरिलीन्ही॥ विधि
हुंननारिहृदयगतिजानी॥ सकलकपटअघअवगुनषानी॥ सरलसुसीलधरमरतराउ॥ सो
न किमिजानैतीयसुभाउ॥ असकोजीवजंतुजगमाहीं॥ जेहिरघुनाथप्रानप्रियनाहीं॥ भय
अतिअहितरामतेउतोही॥ कोतूंअहसिसत्यकहुमोही॥ जोहसिसोहसिमुहमसिलाई॥ आं
षिओटउठिवैठहिजाई॥ दोहा॥ रामविरोधीहृदयतेप्रगटकीन्हविधिमोहि॥ मोसमानको
पातकीवादिकहउंकछुतोहि॥१६१॥ सुनिसत्रुघनमातुकुटिलाई॥ जरहिंगातरिसकछुनव १६२
साई॥ तेहिअवसरकुवरीतहंआई॥ वसनविभूषनविविधवनाई॥ लषिरिसभरेउलषनल

घु भाई॥ बरत अनल घृत आहुति पाई॥ हुमगि लात तकि कूबर मारा॥ परि मुह भर महि करत
पुकारा॥ कूबर टूटेउ फूट कपारू॥ दलित दसन मुख रुधिर प्रचारू॥ आह दइअ मै काह नसावा
करत नीक फलु अनइस पावा॥ सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी॥ लगे घसीटन धरि धरि झो
टी॥ भरत दयानिधि दीन्हि छुड़ाई॥ कौसल्या पहि गे दोउ भाई॥ दोहा॥ मलिन बसन बिबरन
बिकल कृस सरीर दुख भार॥ कनक कलप बर बेलि बन मानहु हनी तुसार॥ १६३॥ भरतहि देखि
मातु उठि धाई॥ मुरछित अवनि परी झइ आई॥ देखत भरत बिकल भए भारी॥ परे चरन तन द
सा बिसारी॥ मातु तात कह देहि देखाई॥ कह सिय राम लखन दोउ भाई॥ कइकइ कत जनमी ज
ग मांझ॥ जौ जनमि त भइ काहे न बांझ॥ कुल कलंकु जेहि जनमेउ मोही॥ अपजस भाजन प्रि
यजन द्रोही॥ को तिभुवन मोहि सरिस अभागी॥ गति असि तोरि मातु जेहि लागी॥ पितु सुरपुर

श्री॰ ६२

वनरघुवरकेतू॥ मैकेवलसबअनरथहेतू॥ धिगमोहिभएउवेनुवनआगी॥ दुसहदाहदुख

दूषनभागी॥ दोहा॥ मातुभरतकेवचनमृदुसुनिपुनिउठीसंभारि॥ लिएउठाइलगाइउ

रलोचनमोचतिवारि॥ १६३॥ सरलसुभायमायहियलाए॥ अतिहितमनहुरामफिरिआए॥

भेटेउवहुरिलषनलघुभाई॥ सोकुसनेहनहृदयसमाई॥ देखिसुभाउकहतसवुकोई॥

राममातुअसिकाहेनहोई॥ मातभरतुगोदवैठारे॥ आंसुपोछिमृदुवचनउचारे॥ अजहु

वछवलिधीरजुधरहू॥ कुसमउसमुझिसोकपरिहरहू॥ जनिमानहुहियहानिगला

नी॥ कालकरमगतिअघटितजानी॥ काहुहिदोसुदेहुजनिताता॥ भामोहिसववि धिवा

मविधाता॥ जोएतेहुदुखमोहिजिआवा॥ अजहुकोजानेकातेहिभावा॥ दोहा॥ पितुआयसु

भूषनवसनतातत जेरघुवीर॥ विसमउहरषनहृदयकछुपहिरेवलकलचीर॥ १६४॥ मु ६२

य प्रसन्न मन हरष न रोषू॥ सब कर सब बिधि करि परितोषू॥ चले बिपिन सुनि सिय संग ला
गी॥ रहइ न राम चरन अनुरागी॥ सुनत हि लषनु चले उठि साथा॥ रहहि न जतन किए रघु
नाथा॥ तब रघुपति सबही सिर नाई॥ चले संग सिय अरु लघु भाई॥ राम लषनु सिय बनहि
सिधाये॥ गइउँ न संग न प्रान पठाए॥ येहु सब भा इन्ह आँखिन्ह आगे॥ तउ न तजा तनु प्रा
न अभागे॥ मोहि न लाज निज नेहु निहारी॥ राम सरिस सुत मै महतारी॥ जिअइ मरइ भ
ल भूपति जाना॥ मोर हृदय सत कुलिस समाना॥ दोहा॥ कौसल्या के बचन सुनि भरत
सहित रनिवासु॥ ब्याकुल बिलपत राजगृह मानहु सोक निवासु॥ १६५॥ बिलपहि बिक
ल भरत दोउ भाई॥ कौसल्या लिए हृदय लगाई॥ भाँति अनेक भरत समुझाए॥ कहि बि
बेकमय बचन सुनाए॥ भरतहु मातु सकल समुझाई॥ कहि पुरान श्रुति कथा सुहाई॥ छं

अ० ६४

लविहीनसुचिसरलसुवानी॥ वोलेभरतजोरिजुगपानी॥ जेअघमातुपितासुतमारे॥ गाइ
गोठमहिसुरपुरजारे॥ जेअघतियवालकवधकीन्हे॥ मीतमहीपतिमाहुरदीन्हे॥ जेपा
तकउपपातकअहहीं॥ करमवचनमनभवकविकहहीं॥ तेपातकमोहिहोहुविधाता॥
जौंयहुहोइमोरमतमाता॥ दोहा॥ जेपरिहरिहरिहरचरनभजहिंभूतगनघोर॥ तिन्हकै
इगतिमोहिदेउविधिजौंजननीमतमोर॥ १६७॥ वेचहिंवेदधरमदुहिलेहीं॥ पिसुनप
रायपापकहिदेहीं॥ कपटीकुटिलकलहप्रियक्रोधी॥ वेदविदूषकविस्वविरोधी॥ लो°
भीलंपटलोलुपचारा॥ जेताकहिंपरधनपरदारा॥ पावौंमैंतिन्हकैगतिघोरा॥ जौंजन
नीएहसंमतमोरा॥ जेनहिंसाधुसंगअनुरागे॥ परमारथपथविमुखअभागे॥ जेनभजहिं ६४
हिहरिनरतनुपाई॥ जिन्हहिनहरिहरसुजसुसोहाई॥ तजिश्रुतिपथवामपथचलहीं

वंचक विरचि वेषु जगु छलहीं॥ तिन्ह कै गति मोहि संकर देऊ। जननी जौं यहु जान उँभे
ऊ॥ दोहा॥ मातु भरत के वचन सुनि साचे सरल सुभाय॥ कहति राम प्रिय तात तुम्ह सदा
वचन मन काय॥१६७॥ राम प्रान ते प्रान तुम्हारे॥ तुम्ह रघुपतिहि प्रान ते प्यारे॥ विधु वि
ष चवइ श्रवइ हिमु आगी॥ होइ वारिचर वारि विरागी॥ भएं ग्यानु वरु मिटइ न मोहू॥ तुम्ह
रामहि प्रतिकूल न होहू॥ मत तुम्हार एहु जो जग कहहीं॥ सो सपनेहुं सुख सुगति न लहहीं॥
अस कहि मातु भरत हियं लाए॥ थन पय श्रवहिं नयन जल छाए॥ करत विलाप वहुत ए
हि भांती॥ वैठेहिं वीति गई सब राती॥ वामदेउ वसिष्ठ तव आए॥ सचिव महाजन सकल वो
लाए॥ मुनि वहु भांति भरत उपदेसे॥ कहि परमारथ वचन सुदेसे॥ दोहा॥ तात हृदय धी
रजु धरहु करहु जो अवसर आजु॥ उठे भरत गुर वचन सुनि करन कहेउ सवु काजु॥१६८॥

अ॰ न्रपतनुवेदविहितअन्हवावा॥ परमविचित्रविमानवनावा॥ गहिपदभरतमातुसवराषी
६५ रहीरामदरसनअभिलाषी॥ चंदनअगरभारवहुआए॥ अमितअनेकसुगंधसुहाए॥
सरजुतीररचिचितावनाई॥ जनुसुरपुरसोपानसुहाई॥ एहिविधिदाहक्रियासवकी
न्ही॥ विधिवतन्हाइतिलांजलिदीन्ही॥ सोधिसुम्रतिसववेदपुराना॥ कीन्हभरतदसगा
तविधाना॥ जहँजसमुनिवरआयसुदीन्हा॥ तहँतससहसभांतिसवुकीन्हा॥ भएवि
सुद्धदिएसवदाना॥ धेनुवाजिगजवाहननाना॥ दोहा॥ सिंघासनभूषनवसनअन्नध
रनिधनधाम॥ दिएभरतलहिभूमिसुरभेपरिपूरनकाम॥ १६८॥ पितुहितभरतकीन्हि
जसिकरनी॥ सोमुषलाषजाइनहिवरनी॥ सुदिनसोधिमुनिवरतवआए॥ सचिवम ६५
हाजनसकलवोलाए॥ वैठेराजसभासवजाई॥ पठएवोलिभरतदोउभाई॥ भरतुव

सिष्ट निकट बैठे ठौरे॥ नीति धरम मय बचन उचारे॥ प्रथम कथा सब मुनिबर बरनी॥ कइ-
कइ कुटिल कीन्हि जसि करनी॥ भूप धर्म ब्रत सत्य सराहा॥ जेहि तनु परिहरि प्रेमु निबा-
हा॥ कहत राम गुन सील सुभाऊ॥ सजल नयन पुलके उ मुनिराऊ॥ बहुरि लखन सिय
प्रीति बखानी॥ सोक सनेह मगन मुनि ग्यानी॥ दोहा॥ सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि
कहेउ मुनिनाथ॥ हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ॥ १७०॥ अस बिचा-
रि केहि देइअ दोसू॥ ब्यर्थ काहि पर कीजिअ रोसू॥ तात बिचारु करहु मन माहीं॥ सोच जोगु
दसरथु नृपु नाहीं॥ सोचिअ बिप्र जो बेद बिहीना॥ तजि निज धरमु बिषय लयलीना॥ सो-
चिअ नृपति जो नीति न जाना॥ जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना॥ सोचिअ बयसु कृपिन ध-
नवान॥ जो न अतिथि सिव भगति सुजान॥ सोचिअ सूद्र बिप्र अपमानी॥ मुखर मान प्रि-

श्रीः

यज्ञान गुमानी॥ सोचिअ पुनि पति बंचक नारी॥ कुटिल कलहप्रिय इछाचारी॥ सोचिअ बटु
निजव्रत परिहरई॥ जो नहि गुर आयसु अनुसरई॥ दोहा॥ सोचिअ गृही जो मोह बस करइ
करम पथ त्याग॥ सोचिअ जती प्रपंच रत विगत विवेक विराग॥ १७१॥ वैषानस सोइ सोचन जो
गु॥ तपु विहाइ जेहि भावइ भोगु॥ सोचिअ पिसुन अकारन क्रोधी॥ जननि जनक गुर बंधु वि
रोधी॥ सब विधि सोचिअ पर अपकारी॥ निज तनु पोषक निरदय भारी॥ सोचनीय सबही वि
धि सोई॥ जो न छाडि छलु हरि जनु होई॥ सोचनीय नहि कोसल राउ॥ भुवन चारि दस प्रगट
प्रभाउ॥ भये अन अहइ न अब होनिहारा॥ भूप भरत जस पिता तुम्हारा॥ विधि हरि हरु सुर
पति दिसिनाथा॥ वरनहि सब दसरथ गुन गाथा॥ दोहा॥ कहहु तात केहि भांति कोउ करिहि
वडाई तासु॥ राम लषन तुम्ह सत्रुहन सरिस सुअन सुचि जासु॥ १७२॥ सब प्रकार भूपति व

उभागी॥ बादि बिषाद करिअ तेहि लागी॥ एहु सुनि समुझि सोचु परिहरहू॥ सिर धरि राज रजा
यसु करहू॥ राय राजपदु तुम्ह कहँ दीन्हा॥ पिता बचन फुर चाहिअ कीन्हा॥ तजे रामु जेहि
बचनहि लागी॥ तनु परिहरेउ राम बिरहागी॥ नृपहि बचन प्रिय नहि प्रिय प्राना॥ करहु ता
त पितु बचन प्रवाना॥ करहु सीस धरि भूप रजाई॥ हइ तुम्ह कहँ सब भाँति भलाई॥ परसुरा
म पितु आज्ञा राषी॥ मारी मातु लोग सब साषी॥ तनय ययातिहि यौवन दयेऊ॥ पितु आज्ञा अ
घ अजसु न भयेऊ॥ दोहा॥ अनुचित उचित बिचारु तजि जे पालहि पितु बैन॥ ते भाजन सुख सु
जसु के बसहि अमरपति ऐन॥ १७३॥ अवसि नरेस बचन फुर करहू॥ पालहु प्रजा सोक परिह
रहू॥ सुरपुर नृप पाइहि परितोषू॥ तुम्ह कहँ सुकृत सुजसु नहि दोषू॥ बेद बिदित संमत सबही
का॥ जेहि पितु देइ सो पावइ टीका॥ करहु राज परिहरहु गलानी॥ मानहु मोर बचन हित जानी॥

अ॰ रा॰ मुनिमुषलहवरामवैदेही॥अनुचितकहबनपंडितकेही॥कौसल्यादिसकलमहतारी
तेउप्रजासुषहोहिसुषारी॥प्रेमतुम्हाररामकरजानिहि॥सोसबविधितुम्हसनभलमा
निहि॥सौंपेहुराजुरामकेआए॥सेवाकरेहुसनेहसुहाए॥दोहा॥कीजिअगुरआयसुअ
वसिकहहिसचिवकरजोरि॥रघुपतिआएउचितजसतसतबकरबबहोरि॥१७४॥कौस
ल्याधरिधीरजुकहई॥पूतपथ्यगुरआयसुअहई॥सोआदरिअकरिअहितमानी॥तजिअ
बिषादकालगतिजानी॥बनरघुपतिसुरपुरनरनाहू॥तुम्हएहिभांतितातकदराहू॥परि
जनप्रजासचिवसबअंबा॥तुम्हहीसुतसबकहंअवलंबा॥लषिविधिबामकालकठिनाई॥
धीरजुधरहुमातुबलिजाई॥सिरधरिगुरआयसुअनुसरहू॥प्रजापालिपुरजनदुषहरहू॥गु ९७
रकेबचनसचिवअभिनंदनु॥सुनेभरतहियहितजनुचंदनु॥सुनीबहोरिमातुमृदुबानी

सीलसनेहसरलरससानी॥ छंद॥ सानीसरलरसमातुबानीसुनिभरतुव्याकुलभए
लोचनसरोरुहश्रवतसींचतबिरहउरअंकुरनए॥ सोदसादेषतसमयतेहिबिसरीसबहि
सुधिदेहकी॥ तुलसीसराहतसकलसादरसींवसहजसनेहकी॥ सोरठा॥ भरतुकमलक
रजोरिधीरधुरंधरधीरधरि॥ वचनअमिअजनुबोरिदेतउचितउत्तरसबहि॥ चौ॥ मोहि
उपदेसुदीन्हगुरुनीका॥ प्रजासचिवसंमतसबहीका॥ मातुउचितधरिआयसुदीन्हा॥ अ
वसिसीसधरिचाहौंकीन्हा॥ गुरपितुमातुस्वामिहितबानी॥ सुनिमनमुदितकरिअभलि
जानी॥ उचितकिअनुचितकिएविचारू॥ धरमुजाइसिरपातकभारू॥ तुम्हतौदेहुसरलसि
षसोई॥ जोआचरतमोरभलहोई॥ जद्यपियहसमुझतहौंनीके॥ तदपिहोतपरितोषुनजी
के॥ अबतुम्हबिनयमोरिसुनिलेहू॥ मोहिअनुहरतसिषावनुदेहू॥ ऊतरदेउँछमबअप

श्रीं० ६८ पराधू॥दुषितदोषगुनगानहिंसाधू॥दोहा॥पितुसुरपुरसियरामुवनकरनक
हहुमोहिराजु॥एहितेजानहुमोरहितकैआपनवडुकाजु॥१७६॥हितहमारसियप
तिसेवकाई॥सोहरिलीन्हिमातुकुटिलाई॥मैंअनुमानिदीषमनमाहीं॥आनउपाय
मोरहितनाहीं॥सोकसमाजुराजुकेहिलेषे॥लषनरामसियपदविनुदेषे॥वादिवसन
विनुभूषनभारू॥वादिविरतिविनुव्रह्मविचारू॥सरुजसरीरवादिवहुभोगा॥विनुहरिभ
गतिजायजपजोगा॥जायजीवविनुदेहसुहाई॥वादिमोरसबुविनुरघुराई॥जांउरामप
हिंआयसुदेहू॥एकहिआंकमोरहितएहू॥मोहिनृपकरिभलआपनचहहू॥सोउस
नेहजडताबसकेहहू॥दोहा॥केकेइसुअनकुटिलमतिरामविमुषगतलाज॥तुम्हचा ६८
हतसुषुमोहवसमोहिसेअधमकेराज॥१७७॥कहौंसाचुसवसुनिपतिआहू॥चाहिअध

रमसीलनरनाहू॥ मोहिराजुहठिदेइहहुजबहीं॥ रसारसातलजाइहितबहीं॥ मोहिस
मानकोपापनिवासू॥ जेहिलगिसीयरामबनबासू॥ रायरामकहुकाननदीन्हा॥ बिछुरत
गवनअमरपुरकीन्हा॥ मैसठुसबअनरथकरहेतू॥ बैठबातसबसुनउंसचेतू॥ बिनुरघुबी
रबिलोकिअबासू॥ रहेप्रानसहिजगउपहासू॥ रामपुनीतबिषयरसरूखे॥ लोलुपभूमि
भोगकेभूखे॥ कहलगिकहौंहृदयकठिनाई॥ निदरिकुलिसुजेहिलहीबडाई॥ दोहा॥:
कारनतेकारजुकठिनहोइदोसुनहिमोर॥ कुलिसअस्थितेउपलतेलोहकरालकठोर
१७८॥ कैकेईभवतनअनुरागे॥ पावरप्रानअघाइअभागे॥ जौंप्रियबिरहप्रानप्रियला
गे॥ देखबसुनबबहुतअबआगे॥ लखनरामसियकहुबनुदीन्हा॥ पठइअमरपुरपतिहि
तकीन्हा॥ लीन्हबिधवपनअपजसआपू॥ दीन्हेउप्रजहिसोकुसंतापू॥ मोहिदीन्हसुख

अ॰ सुजसुसुराजू॥ कीन्हकहुकरईसबकारकाजू॥ एहितेमोरकाहअबनीका॥ तेहिपरदेनक
१६८ हहुतुम्हटीका॥ कैकइजठरजनमिजगमाहीं॥ यहमोहिकहँकछुअनुचितनाहीं॥ मोरि
बातसबबिधिहिबनाई॥ प्रजापाचकतकरहुसहाई॥ दोहा॥ ग्रहग्रहीतपुनिबातबसते
हिपुनिबीछीमार॥ ताहिपिआइअबारुनीकहहुकवनउपचार॥१७८॥ कैकइसुअन
जोगुजगजोई॥ चतुरबिरंचिदीन्हमोहिसोई॥ दसरथतनयरामलघुभाई॥ दीन्हमोहि
बिधिबादिबडाई॥ तुम्हसबुकहहुकढावनटीका॥ रायरजायसुसबकहीकहनीका॥ उतरुदेउँ
केहिबिधिकेहिकेही॥ कहहुसुषेनजथारुचिजेही॥ मोहिकुमातुसमेतबिहाई॥ कहहु
कहिहिकेकीन्हिभलाई॥ मोबिनुकोसचराचरमाहीं॥ जेहिसियरामप्रानप्रियनाहीं॥ प १६८
रमहानिसबुकहँबडलाहू॥ अदिनुमोरनहिदूषनकाहू॥ संसयसीलप्रेमबसअहहू॥

सबइ उचित सब जो कछु कहहू ॥ दोहा ॥ राम मातु सुठि सरल चित मो पर प्रेम बिशेषि ॥ कह
इ सुभाय सनेह बस मोरि दीनता देषि ॥१८०॥ गुर बिबेक सागर जगु जाना ॥ जिन्हहि बिस्व कर
बदर समाना ॥ मो कहं तिलक साज सजु सोई ॥ भए बिधि बिमुष बिमुष सबु कोई ॥ परिहरि राम
सीय जग माहीं ॥ कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं ॥ सो मैं सुनब सहब सुष मानी ॥ अंतहुं कीच तहां
जहं पानी ॥ डरु न मोहि जगु कहिहि कि पोचू ॥ परलोकहु कर नाहिन सोचू ॥ एकइ उर बस दुस
ह दवारी ॥ मोहि लगि भे सिय रामु दुषारी ॥ जीवन लाहु लषन भल पावा ॥ सबु तजि राम चरन म
नु लावा ॥ मोर जनम रघुबर बन लागी ॥ झूठ काह पछिताउं अभागी ॥ दोहा ॥ आपनि दारुन
दीनता कहउं सबहि सिरु नाइ ॥ देषे बिनु रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जाइ ॥१८१॥ आन उ
पाउ मोहि नहि सूझा ॥ को जिय कै रघुबर बिनु बूझा ॥ एकहि आंक इहइ मन माहीं ॥ प्रातकाल च

सिहैं प्रभु पाहीं ॥ जद्यपि मैं अनभल अपराधी ॥ भइ मोहि कारन सकल उपाधी ॥ तदपि सरन
अ० सनमुख मोहि देखी ॥ छमि सब करिहहिं कृपा बिसेषी ॥ सील सकुच सुठि सरल सुभाऊ ॥ कृपा स
७० नेह सदन रघुराऊ ॥ अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा ॥ मैं सिसु सेवक जद्यपि बामा ॥ तुम्ह पै
पाच मोर भल मानी ॥ आयसु आसिष देहु सुबानी ॥ जेहि सुनि बिनय मोहि जनु जानी ॥ आव
हि बहुरि रामु रजधानी ॥ दोहा ॥ जद्यपि जनमु कुमातु तें मैं सठु सदा सदोस ॥ आपन जानि न
त्यागिहहिं मोहि रघुबीर भरोस ॥ १८३ ॥ भरत बचन सब कहं प्रिय लागे ॥ राम सनेह सुधा जनु
पागे ॥ लोग बियोग बिषम बिष दागे ॥ मंत्र सबीज सुनत जनु जागे ॥ मातु सचिव गुर पुर नर ना
री ॥ सकल सनेह बिकल भये भारी ॥ भरतहि कहहि सराहि सराही ॥ राम प्रेम मूरति तनु ७०
आही ॥ तात भरत अस काहे न कहहू ॥ प्रान समान राम प्रिय अहहू ॥ जो पावरु अपनी

जडताई॥ तुम्हहि सुगाइ मातु कुटिलाई॥ सो सठ कोटिक पुरुष समेता॥ बसहि कलप
सत नरक निकेता॥ अहि अघ अवगुन नहि मनि गहई॥ हरइ गरल दुष दारिद दहई॥
दोहा॥ अवसि चलिअ बन रामु जहँ भरत मंत्रु भल कीन्ह॥ सोक सिंधु बूडत सबहि तु
म्ह अवलंबनु दीन्ह॥१८४॥ भा सब के मन मोदु न थोरा॥ जनु घन धुनि सुनि चातक मो
रा॥ चलत प्रात लषि निरनउ नीके॥ भरतु प्रानप्रिय भे सबही के॥ मुनिहि बंदि भरतहि
सिरु नाई॥ चले सकल घर बिदा कराई॥ धन्य भरत जीवनु जग माहीं॥ सीलु सनेहु सरा
हत जाहीं॥ कहहि परसपर भा बड काजू॥ सकल चलइ कर साजहि साजू॥ जेहि राषहि
रहु घर रषवारी॥ सो जानइ जनु गरदनि मारी॥ कोउ कह रहन कहिय नहि काहू॥
कोन चहइ जग जीवनु लाहू॥ दोहा॥ जरउ सो संपति सदन सुषु सुहृद मातु पितु भाइ

अ० ७१ सनमुषहोतनजोरामपदकरइनसहजसहाइ ॥१८४॥ घरघरसाजहिंवाहननाना॥ ह
रषुहृदयपरभातपयाना॥ भरतजाइघरकीन्हविचारू॥ नगरुवाजिगजभवनभंडा
रू॥ संपतिसवरघुपतिकैआही॥ जौविनुजतनचलौंतजिताही॥ तौपरिनामनमोरि
भलाई॥ पापसिरोमनिसांइदोहाई॥ करइस्वामिहितसेवकुसोई॥ दूषनकोटिदेइ
किनकोई॥ असविचारिसुचिसेवकुवोले॥ जेसपनेहुंनिजधरमुनडोले॥ कहिसवम
रमुधरमुभलभाषा॥ जोजेहिलायकसोतेहिराषा॥ करिसवजतनुराषिरषवारे॥ रा
ममातुपहिंभरतुसिधारे॥ दोहा॥ आरतजननीजानिसवुभरतसनेहसुजान॥ क
हेउवनावनपालकीसजनसुषासनजान ॥१८५॥ चक्कचक्किजिमिपुरनरनारी॥ ७१
चहतप्रातउरआरतभारी॥ जागतसवनिसिभएउविहाना॥ भरतवोलायसचि

बसु जाना॥ कहेहु लेहु सब तिलक समाजू॥ बनहिं देब मुनि रामहि राजू॥ बेगि चलहु
सुनि सचिव जोहारे॥ तुरत तुरग रथ नाग सँवारे॥ अरुंधती अरु अगिनि समाजू॥ रथ च
ढि चले प्रथम मुनिराजू॥ बिप्र बृंद चढि बाहन नाना॥ चले सकल तप तेज निधाना॥ न
गर लोग सब सजि सजि जाना॥ चित्रकूट कहं कीन्ह पयाना॥ सिबिका सुभग न जाहिं बखि
यानी॥ चढि चढि चलत भई सब रानी॥ दोहा॥ सौंपि नगर सुचि सेवकनि सादर सब
हि चलाइ॥ सुमिरि राम सिय चरन तब चले भरत दोउ भाइ॥१८६॥ राम दरस बस
सब नर नारी॥ जनु करि करिनि चले तकि बारी॥ बन सिय राम समुझि मन माहीं॥ सा
नुज भरत पयादेहि जाहीं॥ देखि सनेह लोग अनुरागे॥ उतरि चले हय गय रथ त्या
गे॥ जाइ समीप राखि निज डोली॥ राम मातु मृदु बानी बोली॥ तात चढहु रथ बलि

अ० ७२ महतारी॥ होइहि प्रियपरिवारु दुखारी॥ तुम्हरे चलत चलिहि सब लोगू॥ सकल सो
कु संकुल नहि मग जोगू॥ सिर धरि बचन चरन सिरु नाई॥ रथ चढि चलत भये दोउ भा
ई॥ तमसा प्रथम दिवस करि वासू॥ दूसर गोमति तीर निवासू॥ दोहा॥ पय अहार फ
ल असन एक निसि भोजन एक लोग॥ करत राम हित नेम ब्रत परिहरि भूषन भोग॥
१८७॥ सई तीर वसि चले बिहाने॥ सृंगबेरपुर सब नियराने॥ समाचार सब सुने निषा
दा॥ हृदय बिचार करै सबिषादा॥ कारन कवन भरत बन जाहीं॥ है कछु कपट भाव म
न माहीं॥ जौं पै जिय न होति कुटिलाई॥ तौ कत लीन्ह संग कटकाई॥ जानहि सानुज
राम हि मारी॥ करौं अकंटक राज सुखारी॥ भरत न राजनीति उर आनी॥ तब कलंकु अ ७२
ब जीवन हानी॥ सकल सुरासुर जुरहि जुझारा॥ रामहि समर न जीतनिहारा॥ का आ

बरनु भरत अस करहीं॥ नहि बिषबेलि अमिअ फल फरहीं॥ दोहा॥ अस बिचारि गुह
ग्याति सन कहेउ सजग सब होहु॥ हथ्य वासहु बोरहु तरनि कीजिअ घाटारोहु॥ १८५॥
होहु संजोइल रोकहु घाटा॥ ठाटहु सकल मरइ के ठाटा॥ सनमुख लोह भरत सन ले
ऊं॥ जियत न सुरसरि उतरन देऊं॥ समर मरन पुनि सुरसरि तीरा॥ राम काजु छनभं
गु सरीरा॥ भरत भाइ नृप मैं जन नीचू॥ बडे भाग अस पाइअ मीचू॥ स्वामि काज करि
हउं रन रारी॥ जस धवलिहउं भुवन दस चारी॥ तजउं प्रान रघुनाथ निहोरे॥ दुहूं हा
थ मुद मोदक मोरे॥ साधु समाज न जाकर लेखा॥ राम भगत महु जासु न रेखा॥ जायं जि
यत जग सो महि भारू॥ जननी जोबन बिटप कुठारू॥ दोहा॥ः बिगत बिषाद निषादप
ति सबहि बढाइ उछाहु॥ सुमिरि राम मागेउ तुरत तरकस धनुष सनाहु॥ १८६॥ बे

अ॰ ७३

गुरु भाइ उसाजु सँजोऊ। सुनि रजाइ कदराइ न कोऊ। भलेहिं नाथ सब कहहिं
सहरषा। एकहिं एक बढ़ावइ करषा। चले निषाद जोहारि जोहारी। सूर सकल रन
रूचइ रारी। सुमिरि राम पद पंकज पनहीं। भाथीं बाँधि चढ़ाइन्हि धनुहीं। अंगरी पहि
रि कूँड़ि सिर धरहीं। फरसा बाँस सेल सम करहीं। एक कुसल अति ओड़न खाँड़े। कूद
हिं गगन मनहुँ छिति छाँड़े। निज निज साजु समाजु बनाई। गुह राउतहि जोहारे जाई।
देखि सुभट सब लायक जाने। लइ लइ नाम सकल सनमाने। दोहा। भाइहु लावहु
धोख जनि आजु काज बड़ मोहि। सुनि सरोष बोले सुभट बीर अधीर न होहि। १९०। रा
म प्रताप नाथ बल तोरे। करहिं कटकु बिनु भट बिनु घोरे। जीवत पाउ न पाछे धरहीं। ७३
रुंड मुंड मय मेदनि करहीं। दीख निषाद नाथ भल टोलू। कहेउ बजाउ जुझाउ ढोलू।

एतना कहत छींक भइ बायें॥ कहेउ सगुनिअन्ह षेत सुहाए॥ बूढ़ एकु कह सगुन
बिचारी॥ भरतहि मिलिअ न होइहि रारी॥ रामहि भरत मनावन जाहीं॥ सगुन कहइ
अस बिग्रहु नाहीं॥ सुनि गुह कहइ नीक कह बूढ़ा॥ सहसा करि पछिताहिं बिमूढ़ा॥
भरत सुभाउ सील बिनु बूझें॥ बड़ि हित हानि जानि बिनु जूझें॥ दोहा॥ गहहु घाट भट
सिमिटि सब लेउं मरम मिलि जाइ॥ बूझि मित्र अरि मध्य गति तस तब करिहौं आइ॥
१९०॥ लषन सनेह सुभाय सुहाए॥ बैरु प्रीति नहि दुरइ दुराए॥ अस कहि भेंट संजो
वन लागे॥ कंद मूल फल षग मृग मागे॥ मीन पीन पाठीन पुराने॥ भरि भरि भार कहा
रन्ह आने॥ मिलन साजु सजि मिलन सिधाए॥ मंगल मूल सगुन सुभ पाए॥ देषि दूरि
तें कहि निज नामू॥ कीन्ह मुनीसहि दंड प्रनामू॥ जानि रामप्रिय दीन्हि असीसा॥ भरत

अ० हि कहेउ बुझाइ मुनीसा॥ राम सखा मुनि स्यंदनु त्यागा॥ चले उतरि उमगत अनुरागा
७४ गाउँ जाति गुहँ नाउँ सुनाई॥ कीन्ह जोहारु माथ महि लाई॥ दोहा॥ करत दंडवत देखि
तेहि भरत लीन्ह उर लाइ॥ मनहुँ लखन सन भेंट भइ प्रेमु न हृदय समाइ॥ १९४॥ भें
टत भरतु ताहि अति प्रीती॥ लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती॥ धन्य धन्य धुनि मंगल मूला॥
सुर सराहि तेहि बरिसहिं फूला॥ लोक बेद सब भाँतिहि नीचा॥ जासु छाँह छुइ लेइअ सीं
चा॥ तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता॥ मिलत पुलक परिपूरित गाता॥ राम राम कहि जे
जमुहाहीं॥ तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं॥ यह तौ राम लाइ उर लीन्हा॥ कुल समेत ज
गु पावन कीन्हा॥ करमनास जलु सुरसरि परई॥ तेहि को कहहु सीस नहिं धरई॥ उलटा ७४
नामु जपत जगु जाना॥ बालमीकि भए ब्रह्म समाना॥ दोहा॥ स्वपच सबर खस जमन

जडपावरकोलकिरात॥रामकहतपावनपरमहोतभुवनविष्यात॥१८३॥नहिअचर
जजुगजुगचलिआई॥केहिनदीन्हिरघुबीरवडाई॥रामनाममहिमासुरकहहीं॥
सुनिसुनिअवधलोगसुषलहहीं॥रामसषहिमिलिभरतसप्रेमा॥पूछीकुसलसुमंग
लषेमा॥देषिभरतकरसीलुसनेहू॥भानिषादतेहिसमयविदेहू॥सकुचसनेहमोदु
मनवाढा॥भरतहिचितवतएकटकठाढा॥धरिधीरजपदवंदिवहोरी॥विनयसप्रे
मकरतकरजोरी॥कुसलमूलपदपंकजपेषी॥मैतिहुकालकुसलनिजलेषी॥अवप्र
भुपरमअनुग्रहतोरे॥सहितकोटिकुलमंगलमोरे॥दोहा॥समुझिमोरिकरतूतिकुल
प्रभुमहिमाजियजोइ॥जोनभजइरघुबीरपदजगविधिवंचितसोइ॥१८४॥कपटीका
यरकुमतिकुजाती॥लोकवेदवाहेरसवभांती॥रामकीन्हआपनजवहीते॥भयेउभुवन

श्री० ७५ भूषनतवहीं (तें)॥ देखिप्रीतिमुनिबिनयसुहाई॥ मिलेउबहोरिभरतलघुभाई॥ कहि
निषादनिजनामसुबानी॥ सादरसकलजोहारीरानी॥ जानिलषनसमदेहिंअसी
सा॥ जियहुसुषीसयलाषबरीसा॥ निरषिनिषादनगरनरनारी॥ भएसुषीजनुल
षनुनिहारी॥ कहहिंलहेउएहिजीवनलाहू॥ भेटेउरामभद्रभरिबाहू॥ सुनिनि
षादनिजभागबडाई॥ प्रमुदितमनलेचलेउलेवाई॥ दोहा॥ सनकारेसेवकसक
लचलेस्वामिरुषपाइ॥ घरतरुतरसरबागबनबासबनाएन्हिजाइ॥१८५॥ श्रृंग
वेरपुरभरतदीषजब॥ भेसनेहसबअंगसिथिलतब॥ सोहतदिएनिषादहिलागू॥
जनुतनुधरेबिनयअनुरागू॥ एहिबिधिभरतसेनसबसंगा॥ दीषजाइजगपावनि ७५
गंगा॥ रामघाटकहकीन्हप्रनामू॥ भामनुमगनुमिलेजनुरामू॥ करहिप्रनामनग

रनरनारी॥ मुदितब्रह्ममयवारिनिहारी॥ करिमज्जनमागहिकरजोरी॥ रामचंद्रपदप्री
तिनथोरी॥ भरतकहेउसुरसरितवरेनू॥ सकलसुषदसेवकसुरधेनू॥ जोरिपानिवरमाग
उँयेहू॥ सीयरामपदसहजसनेहू॥ दोहा॥ एहिविधिमज्जनुभरतुकरिगुरअनुसासन
पाइ॥ मातुनहानीजानिसवडेराचलेलेवाइ॥१८६॥ जहँतहँलोगन्हडेराकीन्हा॥ भरत
सोधुसवहीकरलीन्हा॥ गुरसेवाकरिआयसुपाई॥ राममातुपहिगेदोउभाई॥ चरनचांपि
कहिकहिमृदुवानी॥ जननीसकलभरतसनमानी॥ भाइहिसौंपिमातुसेवकाई॥ आपु
निषादहिलीन्हवोलाई॥ चलेसखाकरसोंकरजोरे॥ सिथिलसरीरुसनेहनथोरे॥ पूछ
तसखहिसोठाउँदेखाउ॥ नेकुनयनमनजरनिजुडाउ॥ जहँसियरामलषनुनिसिसो
ए॥ कहतभरेजललोचनकोए॥ भरतवचनसुनिभएउविषादू॥ तुरततहांलइगएउ

निषाद॥दोहा॥ जहँसिंसुपापुनीततर रघुवरकियविश्रामु॥ अतिसनेहसादरभरतकीन्ह
अ० ७६ दंडप्रनाम॥१९७॥ कुससाथरीनिहारिसुहाई॥ कीन्हप्रनामुप्रदक्षिनजाई॥ चरनरेषर
जआंषिन्हलाई॥ वनइनकहतप्रीतिअधिकाई॥ कनकविंदुदुइचारिकदेषे॥ राषेसीस
सीयसमलेषे॥ सजलविलोचनहृदयगलानी॥ कहतसषासनवचनसुवानी॥ श्रीहत
सीयविरहदुतिहीना॥ जथाअवधनरनारिमलीना॥ पिताजनकदेउँपटतरकेही॥ करत
लभोगुजोगुजगजेही॥ ससुरभानुकुलभानुभुआलू॥ जेहिसिहातअमरावतिपालू॥ प्रा
ननाथरघुनाथगोसाँई॥ जोवडहोतसोरामवडाई॥दोहा॥ पतिदेवतासुतीयमनिसीयसा
थरीदेषि॥ विहरतहृदउनहहरिहरिपवितेकठिनविशेषि॥१९८॥ लालनजोगुलषनल ७६
घुलोने॥ भेनभाइअसअहहिंनहोने॥ पुरजनप्रियपितुमातुदुलारे॥ सियरघुवीरहिप्रान

पिआरे ॥ म्रदु मूरति सुकुमार सुभाऊ ॥ नाति वाउ तन लाग न काऊ ॥ ते वन सहहि विपति स
व भाँती ॥ निदर कोटि कुलिस रहि छाती ॥ राम जनमि जग कीन्ह उजागर ॥ रूप सील सुष सव
गुन सागर ॥ पुरजन परिजन गुर पितु माता ॥ राम सुभाउ सवहि सुषदाता ॥ वैरिउ राम वडाई क
रहीं ॥ वोलनि मिलनि विनय मन हरहीं ॥ सारद कोटि कोटि सत सेषा ॥ करि न सकहि प्रभु गु
न गन लेषा ॥ दोहा ॥ सुष सरूप रघुवंस मनि मंगल मोद निधान ॥ ते सोवत कुस डासि महि वि
धि गति अति वलवान ॥ १९८ ॥ राम सुना दुषु कान न काऊ ॥ जीवन तरु जिमि जोगवइ राउ
पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती ॥ जोगवहि जननि सकल दिन राती ॥ ते अव फिरत वि
पिन पद चारी ॥ कंद मूल फल फूल अहारी ॥ धिग कैकई अमंगल मूला ॥ भइसि प्रान प्रिय
तम प्रतिकूला ॥ मैं धिग धिग अघ उदधि अभागी ॥ सवु उतपात भएउ जेहि लागी ॥ कुलक

ग

श्री
७७

लंकु करि सिरजेउ विधाता॥ साइ दोह मोहि कीन्ह कुमाता॥ मुनि सप्रेम समुझाव निषादू॥ ना
थ करिअ कत बादि बिषादू॥ राम तुम्हहि प्रिय तुम्ह प्रिय रामहि॥ यह निरजोसु दोसु बिधि
बामहि॥ छंद॥ बिधि बाम की करनी कठिन जेहि मातु कीन्ही बावरी॥ तेहि राति पुनि पुनि क
रहि प्रभु सादर सराहना रावरी॥ तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीतम कहत हौं सौंहे किये॥ परिना
म मंगल जानि अपने आनिए धीरज हिये॥ सोरठा॥ अंतरजामी राम सकुच सप्रेम कृपा
यतन॥ चलिअ करिअ बिश्राम यह बिचारि दृढ आनि मन॥२००॥ सखा बचन सुनि उर ध
रि धीरा॥ बास चले सुमिरत रघुबीरा॥ यह सुधि पाइ नगर नर नारी॥ चले बिलोकन आरत भा
री॥ परदछिना करि करहि प्रनामा॥ देहि कैकइहि खोरि निकामा॥ भरि भरि बारि बिलोचन ७७
लेहीं॥ बाम बिधातहि दूषन देहीं॥ एक सराहहि भरत सनेहू॥ कोउ कहहि नृपति निबाहेउ ने

ह॥ निंदहि आपुसराहिनिषादहि॥ कोकहहिसकउविमोहविषादहि॥ एहिविधिरातिलो
गुसवुजागा॥ भाभिनुसारगुदरालागा॥ गुरहिसुनावचढाइसुहाई॥ नईनावसवमातुच
ढाई॥ दंडचारिमहभासवपारा॥ उतरिभरततवसवहिसंभारा॥ दोहा॥ प्रातक्रियाकरि
मातुपदवंदिगुरहिसिरुनाइ॥ आगेकिएनिषादगनदीन्हेउकटकुचलाइ॥२०१॥ कि
येउनिषादनाथअगुवाई॥ मातुपालकीसकलचलाई॥ साथवुलाइभाइलघुदीन्हा॥
विप्रन्हसहितगवनगुरकीन्हा॥ आपुसुरसरिहिकीन्हप्रनामू॥ सुमिरेलषनसहित
सियरामू॥ गवनेभरतपयादेहिपाये॥ कोतलसंगजाहिडोरिआये॥ कहहिसुसेवकवा
रहिवारा॥ होइअनाथअस्वअसवारा॥ रामुपयादेहिपाउसिधाए॥ हमकहरथगं
जवाजिवनाए॥ सिरभरजाउँउचितअसमोरा॥ सवतेसेवकधरमुकठोरा॥ देखिभरतग

अ०
७८

ति सुनि मृदु बानी॥ सब सेवक गन गरहिं गलानी॥ दोहा॥ भरत तीसरे पहर कहुँ कीन्ह
प्रवेसु प्रयाग॥ कहत राम सिय राम सिय उमगि उमगि अनुराग॥२०२॥ झलका झलक
त पायन्ह कैसे॥ पंकज कोस ओस कन जैसे॥ भरत पयादेहिं आए आजू॥ भए उ दुखित सु
नि सकल समाजू॥ खबरि लीन्ह सब लोग नहाए॥ कीन्ह प्रनाम त्रिवेनिहिं आए॥ सवि
धि सितासित नीर नहाने॥ दिए दान महिसुर सनमाने॥ देखत स्यामल धवल हलोरे
पुलकि सरीर भरत कर जोरे॥ सकल काम प्रद तीरथराउ॥ वेद विदित जग प्रगट प्रभाउ
मागउँ भीख त्यागि निज धरमू॥ आरत काह न करइ कुकरमू॥ अस जिय जानि सुजा
न सुदानी॥ सुफल करहिं जग जाचक बानी॥ दोहा॥ अरथ न धरम न काम रुचि गति ७८
न चहउँ निरवान॥ जनम जनम रति राम पद यह वरदानु न आन॥२०३॥ जानहु राम

कुटिलकरिमोही॥लोगुकहउगुरसाहिबद्रोही॥सीतारामचरनरतिमोरे॥अनुदिनब
ढउअनुग्रहतोरे॥जलदजनमभरिसुरतिबिसारउ॥जाचतजलुपबिपाहनडारउ॥चा
तकुरटनिघटेघटिजाई॥बढेप्रेमुसबभांतिभलाई॥कनकहिबानचढइजिमिदाहे॥
तिमिप्रियतमपदनेमनिबाहे॥भरतबचनसुनिमाझत्रिबेनी॥भइम्रदुबानिसुमंगल
देनी॥तातभरततुम्हसबबिधिसाधू॥रामचरनअनुरागअगाधू॥बादिगलानिकरहु
मनमाहीं॥तुम्हसमरामहिकोउप्रियनाहीं॥दोहा॥ तनुपुलकेउहियहरषुसुनिबे
निबचनअनुकूल॥भरतधन्यकहिधन्यसुरहरषितबरषहिफूल॥२०४॥प्रमुदितती
रथराजनिवासी॥बैषानसबटुग्रहीउदासी॥कहहिपरसपरमिलिदसपांचा॥भरत
सनेहसीलसुचिसांचा॥सुनतरामगुनग्रामसुहाए॥भरद्वाजमुनिबरपहिआये॥दे

श्री०
७८

डपनामुकरतमुनिदेषे॥मूरतिवंतभाग्यनिजलेषे॥धाइउठाइलाइउरलीन्हे॥दीन्ह
असीसकृतारथकीन्हे॥आसनदीन्हनाइसिरवैठे॥चहतसकुचगृहजनुभजिपैठे॥
मुनिपूछवकिछुयहवडसोचू॥वोलेरिषिलषिसीलुसकोचू॥सुनहुभरतहमसवसु
धिपाई॥विधिकरतवपरकिछुनवसाई॥दोहा॥गलानिजियजनिकरहुसमुझिमातुकर तुम्ह
तूति॥तातकैकइहिदोसुनहिगईगिरामतिधूति॥२०५॥यहउकहतभलकहिहिनको
ऊ॥लोकवेदवुधसंमतदोऊ॥ताततुम्हारविमलजसुगाई॥पाइहिलोकउवेदवडाई॥
लोकवेदसंमतसवकहई॥जेहिपितुदेइराजुसोलहई॥राउसत्यव्रततुम्हहिवोला
ई॥देतराजुसुखधरमवडाई॥रामगवनवनअनरथमूला॥जोसुनिसकलविस्वभइ ७८
मूला॥सोभावीवसरानिअयानी॥करिकुचालिअंतहुपछितानी॥तहउंतुम्हारअ

लपअपराधू॥ कहइ सो अधम अयान असाधू॥ करतेहु राजु त तुम्हहि न दोसू॥ राम
हि होत सुनत संतोसू॥ दोहा॥ अव अति कीन्हेहु भरत भल तुम्हहि उचित मत एहु॥ स
कल सुमंगल मूल जग रघुवर चरन सनेहु॥२०६॥ सो तुम्हार धनु जीवनु प्राना॥ भूरिभाग
को तुम्हहि समाना॥ यह तुम्हार आचरजु न ताता॥ दसरथ सुअन राम प्रिय भ्राता॥ सु
नहु भरत रघुपति मन मांही॥ प्रेम पात्र तुम्ह सम कोउ नांही॥ लषन राम सीतहि अति
प्रीती॥ निसि सव तुम्हहि सराहत वीती॥ जाना मरमु नहात प्रयागा॥ मगन होहि तुम्ह
रे अनुरागा॥ तुम्ह पर अस सनेहु रघुवर के॥ सुष जीवन जग जस जड नर के॥ यह न अधि
क रघुवीर वडाई॥ प्रनत कुटुंव पाल रघुराई॥ तुम्ह त उ भरत मोर मत एहू॥ धरे देह
जनु राम सनेहू॥ दोहा॥ तुम्ह कह भरत कलंक यह हम सव कह उपदेसु॥ राम भगति

श्री०
८० रससिद्धिहितभायहसमउगनेसु॥२०७॥नवविधुबिमलतातजसुतोरा॥रघुबरकिं
करकुमुदचकोरा॥उदितसदाअथइहिकबहूंना॥घटिहिनजगनभदिनदिनदूना
कोकतिलोकप्रीतिअतिकरिही॥प्रभुप्रतापरविछविहिनहरिही॥निसिदिनसुष
दसदासबकाहू॥ग्रसिहिनकेकइकरतबराहू॥पूरनरामसुप्रेमपियूषा॥गुरअपमान
दोषनहिंदूषा॥रामभगतअबअमीअघाहू॥कीन्हेहुसुलभसुधाबसुधाहू॥भूपभ
गीरथसुरसरिआनी॥सुमिरतसकलसुमंगलषानी॥दसरथगुनगनबरनिनजाहीं
अधिककहाजेहिसमजगनाही॥दोहा॥जासुसनेहसकोचबसरामप्रगटभयआइ
जेहरहियनयननिकबहुनिरषेनहीअघाइ॥२०८॥कीरतिविधुतुम्हकीन्हअनूपा ८०
जहंबसरामप्रेममृगरूपा॥तातगलानिकरहुजियजाये॥डरहुदरिद्रहिपारसुपाए

सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं॥ उदासीन तापस बन रहहीं॥ सब साधन कर सुफल सो
हावा॥ लषन राम सिय दरसन पावा॥ तेहि फल कर फल दरस तुम्हारा॥ सहित प्रयाग सु
भाग हमारा॥ भरत धन्य तुम जग जस जयऊ॥ कहि अस प्रेम मगन मुनि भयऊ॥ सुनि
मुनि बचन सभासद हरषे॥ साधु सराहि सुमन सुर बरषे॥ धन्य धन्य धुनि गगन प्रयागा
सुनि सुनि भरत मगन अनुरागा॥ दोहा॥ पुलक गात हिय राम सिय सजल सरोरुह नय
न॥ करि प्रनाम मुनि मंडलिहि बोले गदगद बैन॥ २०८॥ मुनि समाज अरु तीरथराजू॥
साँचिहु सपथ अघाइ अकाजू॥ एहि थल जौं कछु कहिय बनाई॥ एहि सम अधिक न अ
घ अधमाई॥ तुम सर्बग्य कहौं सतिभाऊ॥ उर अंतरजामी रघुराऊ॥ मोहि न मातु करत
ब कर सोचू॥ नहि दुख जिय जग जानिहि पोचू॥ नाहिन डरु बिगरिहि परलोकू॥ पितु हम

श्री
८१

रनि करम मोहि न सोचू॥ सुत्र जस सुजस भरि भुवन सुहारू॥ लछिमन राम सरिस सुत पारू॥
राम बिरह तजि तनु छन भंगू॥ भूप सोच कर कवन प्रसंगू॥ राम लखन सिय बिनु पग पन
हीं॥ करि मुनि बेष फिरहिं बन बनहीं॥ दोहा॥ अजिन बसन फल असन महि सयन डा
सि कुस पात॥ बसि तरु तर नित सहत हिम आतप बरषा बात॥२१०॥ एहि दुख दाह दहइ दि
न छाती॥ भूख न बासर नीद न राती॥ एहि कुरोग कर औषधु नाहीं॥ सोधेउँ सकल बिस्व म
न माहीं॥ मातु कुमत बढई अघ मूला॥ तेहिं हमार हित कीन्ह बसूला॥ कलि कुकाठ कर की
न्ह कुजंत्र॥ गाडि अवधि पढि कठिन कुमंत्र॥ मोहि लगि यहु कुठाटु तेहिं ठाटा॥ घालेसि स
ब जगु बारहबाटा॥ मिटइ कुयोगु राम फिरि आएँ॥ बसइ अवध नहिं आन उपाएँ॥ भरत ब ८१
चन सुनि मुनि सुख पाई॥ सबहिं कीन्हि बहु भाँति बडाई॥ तात करहु जनि सोचु विशेषी॥ स

बदुष मिटिहि तिम्ह पग देषी ॥ दोहा ॥: करि प्रबोधु मुनिबर कहेउ अतिथि प्रेम प्रिय होहु ॥
कंद मूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु ॥ २११ ॥ सुनि मुनि बचन भरत हियँ सोचू ॥ भयउ
कुअवसर कठिन सकोचू ॥ जानि गरुइ गुर गिरा बहोरी ॥ चरन बंदि बोले कर जोरी ॥ सिर धरि आ
यसु करिअ तुम्हारा ॥ परम धरम यहु नाथ हमारा ॥ भरत बचन मुनिबर मन भाये ॥ सुचि सेवक
सिष निकट बोलाए ॥ चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई ॥ कंद मूल फल आनहु जाई ॥ भलेहिं ना
थ कहि तिन्ह सिर नाये ॥ प्रमुदित निज निज काज सिधाये ॥ मुनिहि सोच पाहुन बड नेवता
तसि पूजा चाहिय जस देवता ॥ सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आई ॥ आयसु होइ सो करहिं गो
साईं ॥ दोहा ॥: राम बिरह ब्याकुल भरत सानुज सहित समाजु ॥ पहुनाई करि हरहु श्रमु क
हा मुदित मुनिराजु ॥ २१२ ॥ रिधि सिधि सिर धरि मुनिबर बानी ॥ बडभागिनि आपुहि अनुमा

अ० ८२ नी॥ कहहि परसपर सिधि समुदाई॥ अतुलित अतिथि राम लघु भाई॥ मुनिपद बंदि क
रिअ सोइ आजू॥ होहि सुखी सब राज समाजू॥ अस कहि रचेउ रुचिर गृह नाना॥ जेहि बिलो
कि बिलखाहि बिमाना॥ भोग बिभूति भूरि भरि राखे॥ देखत जिन्हहि अमर अभिलाषे॥ दा
सी दास साजु सब लीन्हे॥ जोगवत रहहि मनहि मनु दीन्हे॥ सब समाजु सजि सिधि पल मा
ही॥ जे सुख सुरपुर सपनेहु नाही॥ प्रथमहि बास दिए सब केही॥ सुंदर सुखद जथा रुचि जे
ही॥ दोहा॥ बहुरि सपरिजन भरत कहु रिषि अस आयसु दीन्ह॥ बिधि बिसमय दायकु बिभव
मुनिबर तपबल कीन्ह॥ २१३॥ मुनि प्रभाउ जब भरत बिलोका॥ सकल घुलागे लोकपति लोका॥
सुख समाजु नहि जाइ बखानी॥ देखत बिरति बिसारहि ग्यानी॥ आसन सयन सुबसन बिताना॥ ८२
बन बाटिका बिहग मृग नाना॥ सुरभि फूल फल अमिय समाना॥ बिमल जलासय बिबिध

बिधाना॥ असनपान सुचि अमिय अमी से॥ देषि लोग सकुचात जमी से॥ सुरसुरभी सुरतरु
सबही के॥ लषि अभिलाषु सुरेस सची के॥ रितु बसंत बह त्रिबिध बयारी॥ सब कह सुलभ पदा
रथ चारी॥ स्रक चंदन बनितादिक भोगा॥ देषि हरष बिसमय बस लोगा॥ दोहा॥ संपति
चकई भरत चक मुनि आयस षेलवार॥ तेहि निसि आश्रम पिंजरा राषे भा भिनुसार॥
२१४॥ कीन्ह निमज्जनु तीरथराजा॥ नाइ मुनिहि सिरु सहित समाजा॥ रिषि आयसु अस
सीस सिर राषी॥ करि दंडवत बिनय बहु भाषी॥ पथ गति कुसल साथ सब लीन्हे॥ चले चि
त्रकूटहि चितु दीन्हे॥ रामसषा कर दीन्हे लागू॥ चलत देह धरि जनु अनुरागू॥ नहि पद
त्रान सीस नहि छाया॥ प्रेम नेम ब्रत धरमु अमाया॥ लषन राम सिय पंथ कहानी॥ पूछत
सषहि कहत म्रदु बानी॥ राम बास थल बिटप बिलोके॥ उर अनुराग रहत नहि रोके॥ दे

श्री० षिदसा सुर वरिसहि फूला॥ भइ म्रदु महि मगु मंगल मूला॥ दोहा॥ः किएँ जाँहि छा
८३ या जलद सुषद वहइ वर वात॥ तस मगु भएउ न राम कहँ जस भा भरतहि जात॥२१५॥
जड चेतन मग जीव घनेरे॥ जे चितए प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे॥ ते सव भए परम पद जोगू॥ भ
रत दरस मेटा भव रोगू॥ यह वडि वात भरत कइ नाहीं॥ सुमिरत जिन्हहि राम मन मा
हीं॥ वारक राम कहत जग जेऊ॥ होत तरन तारन नर तेऊ॥ भरत राम प्रिय पुनि लघु भ्रा
ता॥ कस न होइ मगु मंगलदाता॥ सिद्ध साधु मुनिवर अस कहहीं॥ भरतहि निरषि
हरषु हिय लहहीं॥ देषि प्रभाव सुरेसहि सोचू॥ जगु भल भलेहि पोच कहु पोचू॥ गुर सन
कहेउ करिअ प्रभु सोई॥ रामहि भरतहि भेट न होई॥ दोहा॥ः राम सकोची प्रेम वस भ ८३
रत सुप्रेम पयोधि॥ वनी वात विगरन चहति करिय जतनु छलु सोधि॥२१६॥ वचन सुनत

सुरगुरुमुसुकाने॥ सहसनयनबिनुलोचनजाने॥ मायापतिसेवकसनमाया॥ करइत
उलटिपरइसुरराया॥ तबकछुकीन्हरामरुखजानी॥ अबकुचालिकरिहोइहिहानी॥ सु
निसुरेसरघुनाथसुभाऊ॥ निजअपराधरिसाहिनकाऊ॥ जोअपराधभगतकरकरई॥
रामरोषपावकसोजरई॥ लोकहुवेदविदितइतिहासा॥ यहमहिमाजानहिदुरवासा॥
भरतसरिसकोरामसनेही॥ जगुजपरामरामजपजेही॥ दोहा॥ः मनहुनआनियअमर
रघु पतिवरभगतअकाजु॥ अजसुलोकपरलोकदुखदिनदिनसोकसमाजु॥२१७॥ सुनुसुरेस
उपदेसुहमारा॥ रामहिसेवकुपरमपिआरा॥ मानतसुखुसेवकसेवकाई॥ सेवकवैरवैरु
अधिकाई॥ जद्यपिसमनहिरागनरोषू॥ गहहिनपापुपुन्यगुनदोषू॥ करमप्रधानवि
स्वकरिराख्या॥ जोजसकरइसोतसफलुचाखा॥ तदपिकरहिसमविषमविहारा॥ भगत

श्री०
८४

अभगतहृदयअनुसारा॥अगुनअलेपअमानयेकरस॥रामसगुनभएभगतप्रेमबस
रामसदासेवकरुचिराषी॥वेदपुरानसाधुसुरसाषी॥असजियजानितजहुकुटिलाई॥कर
हुभरतपदप्रीतिसुहाई॥दोहा॥रामभगतपरहितनिरतपरदुषदुषीदयाल॥भगतसि
रोमनिभरततेजनिडरपहुसुरपाल॥२१८॥सत्यसंधप्रभुसुरहितकारी॥भरतरामआय
सुअनुसारी॥स्वारथविवसविकलतुमहोहू॥भरतदोसुनहिराउरमोहू॥सुनिसुरवरसु
रगुरवरवानी॥भाप्रमोदुमनमिटीगलानी॥वरषिप्रसूनहरषिसुरराऊ॥लगेसराहन
भरतसुभाऊ॥एहिविधिभरतचलेमगजाहीं॥दसादेषिमुनिसिद्धसिहाहीं॥जवहिंरा
मुकहिलेहिंउसासा॥उमगतप्रेममनहुचहुपासा॥द्रवहिवचनसुनिकुलिसपषानी॥ ८४
पुरजनप्रेमुनजाइवषाना॥वीचवासुकरिजमुनहिआए॥निरषिनीरलोचनजलछा

र॥दोहा॥ रघुवर वरन विलोकि वर वारि समेत समाज॥ होत मगन वारिधि विरह चढे
विवेक जहाज॥२४९॥ जमुन तीर तेहि दिन करि वासू॥ भएउ समय सम सवहि सुपासू॥
रातिहि घाट घाट की तरनी॥ आईं अगनित जाहि न वरनी॥ प्रात पार भए एकहि खेवा
तोषे राम सखा की सेवा॥ चले नहाइ नदिहि सिर नाई॥ साथ निषादनाथ दोउ भाई॥
आगे मुनिवर वाहन आछे॥ राजसमाजु जाइ सवु पाछे॥ तेहि पाछे दोउ वंधु पयादे॥
भूषन वसन वेष सुठि सादे॥ सेवक सुहृद सचिव सुत साथा॥ सुमिरत लषनु सीय रघुना
था॥ जहँ जहँ राम वास विश्रामा॥ तहँ तहँ करहि सप्रेम प्रनामा॥ दोहा॥ मगवासी नर ना
रि सुनि धाम काम तजि धाइ॥ देषि सरूप सनेह सव मुदित जनम फलु पाइ॥२५०॥ कह
हि सप्रेम एक एक पाहीं॥ राम लषन सषि होहि कि नाहीं॥ वय वपु वरन रूप सोइ आली

अ० सीलु सनेहु सरिस सम चाली॥ वेषु न सो सषि सीय न संगा॥ आगे अनी चली चतुरंगा॥ न
२५ हि प्रसन्न मुष मानस षेदा॥ सषि संदेहु होइ एहि भेदा॥ तासु तरक तियगन मन मानी॥
कहहि सकल तेहि सम न सयानी॥ तेहि सराहि बानी फुरि पूजी॥ बोली मधुर बचन ति
य दूजी॥ कहि सप्रेम सब कथा प्रसंगू॥ जेहि बिधि राम राज रस भंगू॥ भरतहि बहुरि स
राहन लागी॥ सील सनेह सुभाय सुभागी॥ दोहा॥ चलत पयादे षात फल पिता दी
न्ह तजि राजु॥ जात मनावन रघुवरहि भरत सरिस को आजु॥ २२१॥ भायप भगति भर
त आचरनू॥ कहत सुनत दुष दूषन हरनू॥ जो कछु कहब थोर सषि सोई॥ राम बंधु अ
स काहे न होई॥ हम सब सानुज भरतहि देषे॥ भइन्ह धन्य जुवती जन लेषे॥ सुनि गुन २५
देषि दसा पछिताही॥ कैकइ जननि जोगु सुत नाही॥ कोउ कह दूषन रानिहि नाहिन

बिधि सबु कीन्ह हमहि जो दाहिन॥ कहँ हम लोक बेद बिधि हीनी॥ लघु तिय कुल कर
तूति मलीनी॥ बसहि कुदेस कुगावँ कुबामा॥ कहँ यह दरसु पुन्य परिनामा॥ अस अनं
दु अचरजु प्रति ग्रामा॥ जनु मरु भूमि कलपतरु जामा॥ दोहा॥ भरत दरसु देखत खुले
उ मग लोगन्ह कर भागु॥ जनु सिंघलबासिन्ह भए उ बिधि बस सुलभ प्रयागु॥२२४॥ नि
ज गुन सहित राम गुन गाथा॥ सुनत जाहि सुमिरत रघुनाथा॥ तीरथ मुनि आश्रम सुर
धामा॥ निरखि निमज्जहि करहि प्रनामा॥ मनही मन मागहि बरु येहू॥ सीय राम पद
पदुम सनेहू॥ मिलहि किरात कोल बनबासी॥ बैखानस बटु जती उदासी॥ करि प्र
नामु पूछहि जेहि तेही॥ केहि बन लखनु रामु बैदेही॥ ते प्रभु समाचार सब कहहीं॥
भरतहि देखि जनम फलु लहहीं॥ जे जन कहहि कुसल हम देखे॥ ते प्रिय राम लख

अ० ८६

नसमलेखे॥रहिविधिबूझतसबहिसुवानी॥सुननरामबनबासकहानी॥दोहा॥तेहि
बासरबसिप्रातहीचलेसुमिरिरघुनाथ॥रामदरसकीलालसाभरतसरिससबसाथ
॥२२३॥मंगलसगुनहोहिसबकाहू॥फरकहिसुखदबिलोचनबाहू॥भरतहिसहितस
माजउछाहू॥मिलिहहिरामुमिटिहिदुखदाहू॥करतमनोरथजसजियजाके॥जाहि
सनेहसुरासबछाके॥सिथिलअंगपगमगडगिडोलहिं॥बिहबलबचनप्रेमबसबो
लहिं॥रामसखातेहिसमयदेखावा॥सैलसिरोमनिसहजसुहावा॥जासुसमीपसरि
तपयतीरा॥सीयसमेतबसहिदोउबीरा॥देखिकरहिसबदंडप्रनामा॥कहिजयजा
नकिजीवनरामा॥प्रेममगनअससराजसमाजू॥जनुफिरिअवधचलेरघुराजू॥दोहा॥
भरतप्रेमतेहिसमयजसतसकहिसकइनसेषु॥कबिहिअगमजिमिब्रह्मसुखअह

ममलिनजनेषु॥२७६॥सकलसनेहसिथिलरघुबरके॥गएकोसदुइदिनकरढ
रके॥जलुथलुदेखिबसेनिसिबीते॥कीन्हगवनरघुनाथपिरीते॥उहारामुरजनीअव
सेषा॥जागेसीयसपनअसदेषा॥सहितसमाजभरतजनुआए॥नाथवियोगतापतन
ताए॥सकलमलिनमनदीनदुषारी॥देषीसासुआनअनुहारी॥सुनिसियसप
नभरेजललोचन॥भयेसोचवससोचविमोचन॥लषनसपनयहनीकनहोई॥क
ठिनकुचाहसुनाइहिकोई॥असकहिबंधुसमेतनहाने॥पूजिपुरारिसाधुसनमाने
छंद॥ ॥सनमानिसुरमुनिबंदिबैठेउतरदिसिदेषतभये॥नभधूरिषगमृगभूरि
भागेविकलप्रभुआश्रमगये॥तुलसीउठेअवलोकिकारनुकाहचितसचकितरहे
सबसमाचारकिरातकोलन्हिआइतेहिअवसरकहे॥सोरठा॥सुनतसुमंगलबै

श्री॰
८७

त मन प्रमोद तन पुलक भर॥ सरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल॥२२५॥ बहुरि
सोचबस भय सियरवनू॥ कारन कवन भरत आगवनू॥ एक आइ अस कहा बहोरी
सेन संग चतुरंग न थोरी॥ सो सुनि रामहि भा अति सोचू॥ इत पितु बच उत बंधु सकोचू॥
भरत सुभाउ समुझि मन माहीं॥ प्रभु चित हित थिति पावत नाहीं॥ समाधान तब भा य
ह जाने॥ भरतु कहे महु साधु सयाने॥ लषन लषेउ प्रभु हृदय षभारू॥ कहत समय
सम नीति बिचारू॥ बिनु पूछे कछु कहउं गोसाईं॥ सेवक समय न ढीठु ढिठाई॥ तुम्ह
सर्वज्ञ सिरोमनि स्वामी॥ आपनि समुझि कहउं अनुगामी॥ दोहा॥ नाथ सुहृद सु
ठि सरल चित सील सनेह निधान॥ सब पर प्रीति प्रतीति जिय जानिय आपु समान ८७
२२६॥ बिषई जीव पाइ प्रभुताई॥ मूढ मोह बस होहिं जनाई॥ भरतु नीति रत साधु सुजा

ना॥प्रभुपदप्रेमुसकलजगुजाना॥तेउआजुरामपदुपाई॥चलेउधरममरजादमि
टाई॥कुटिलकुबंधुकुअवसरुताकी॥जानिरामबनवासएकाकी॥करिकुमंत्रमन
साजिसमाजू॥आएकरैअकंटकराजू॥कोटिप्रकारकलपिकुटिलाई॥आएदलु
बटोरिदोउभाई॥जौंजियहोतिनकपटकुचाली॥केहिसोहातिरथबाजिगजाली
भरतहिदोसुदेइकोजाए॥जगबौराइराजपदुपाए॥दोहा॥ससिगुरतियगामीनहु
षचढेउभूमिसुरजान॥लोकबेदतेबिमुषभाअधमनबेनुसमान॥२२७॥सहसबाहु
सुरनाथत्रिसंकू॥केहिनराजमददीन्हकलंकू॥भरतकीन्हयहउचितउपाऊ॥
रिपुरिनरंचनराषबकाऊ॥एककीन्हिनहिभरतभलाई॥निदरेरामजानिअस
हाई॥समुझिपरिहिसोआजुबिसेषी॥समरसरोषराममुखुपेषी॥एतनाकहतनी

अ०
८८ निरमलमूला॥रनरसविटपपुलकमिसफूला॥प्रभुपदवंदिसीसरजराषी॥वोलेसत्य
सहजवलभाषी॥अनुचितनाथनमानवमोरा॥भरतहमहिउपचारनथोरा॥कहँ
लगिसहियरहियमनुमारे॥नाथसाथधनुहाथहमारे॥दोहा॥ छत्रजातिरघुकुल
जनमुरामअनुजजगुजान॥लातहुमारेचढतिसिरनीचकोधूरिसमान॥१२४॥उठि
करजोरिरजायसुमागा॥मनहुवीररससोवतजागा॥वाँधिजटासिरकसिकटिभाथा॥
साजिसरासनुसायकुहाथा॥आजुरामसेवकजसुलेऊँ॥भरतहिसमरसिषावनुदेऊँ॥
रामनिरादरकरफलुपाई॥सोवहुसमरसेजदोउभाई॥आइवनाभलसकलसमा
जू॥प्रगटकरौरिसपाछिलआजू॥जिमिकरिनिकरदलइमृगराजू॥लेइलपेटिलवा ८८
जिमिवाजू॥तैसेहिभरतहिसेनसमेता॥सानुजनिदरिनिपातउँषेता॥जौसहायकर

संकरु आई॥ तौ मोरौं रन राम दोहाई॥ दोहा॥ः अति सरोष माषे लषन लषि सुनि सपथ प्रवान॥ सभय लोक सब लोकपति चाहत भभरि भगान॥२२९॥ जगु भय मगन गगन भइ बानी॥ लषन बाहुबलु विपुल बषानी॥ तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा॥ को कहि सकइ को जाननि हारा॥ अनुचित उचित काजु कछु होऊ॥ समुझि करिय भल कह सबु कोऊ॥ सहसा करि पाछे पछिताहीं॥ कहहिं वेद बुध ते बुध नाहीं॥ सुनि सुर बचन लषन सकुचाने॥ राम सीय सादर सनमाने॥ कही तात तुम्ह नीति सुहाई॥ सब तें कठिन राजमदु भाई॥ जो अंचवत नृप मातहिं तेई॥ नाहिन साधु सभा जेहि सेई॥ सुनहु लषन भल भरत सरीसा॥ विधि प्रपंच महु सुना न दीसा॥ दोहा॥ः भरतहि होइ न राजमदु विधि हरि हर पद पाइ॥ कबहु कि कांजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ॥२३०॥ तिमिरु त

अ॰ १८९ रुन तरनिहि मकु गिलई॥ गगनु मगन मकु मेघहि मिलई॥ गोपद जल बूडहि घटजो
नी॥ सहज छमा बरु छाडइ छोनी॥ मसक फूक मकु मेरु उडाई॥ होइ न नृपमद भर
तहि भाई॥ लषन तुम्हार सपथ पितु आना॥ सुचि सुबंधु नहि भरत समाना॥ सगुन
षीरु अवगुन जलु ताता॥ मिलइ रचै परपंचु बिधाता॥ भरतु हंस रबिबंस तडागा॥ जन
मि कीन्ह गुन दोष बिभागा॥ गहि गुन पय तजि अवगुन बारी॥ निज जस जगत कीन्हि
उजियारी॥ कहत भरत गुन सील सुभाऊ॥ प्रेम पयोधि मगन रघुराऊ॥ दोहा॥ सुनि
रघुबर बानी बिबुध देषि भरत पर हेतु॥ सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपानिकेतु॥
२३१॥ जौ न होत जग जनम भरत को॥ सकल धरम धुर धरनि धरत को॥ कबि कुल अगम १८९
भरत गुन गाथा॥ को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा॥ लषन राम सियँ सुनि सुर बानी॥ अ

तिसु षल है अनजाइ बषानी ॥ इहाँ भरत सब सहित सहाए ॥ मंदाकिनी पुनीत नहाए
सरित समीप राषि सब लोगा ॥ मागि मातु गुर सचिव नियोगा ॥ चले भरत जहँ सिय रघुरा
ई ॥ साथ निषाद नाथ लघु भाई ॥ समुझि मातु करतब सकुचाहीं ॥ करत कुतरक कोटि म
न माहीं ॥ राम लषन सिय सुनि मम नाऊं ॥ उठि जनि अनत जाहि तजि ठाऊं ॥ दोहा ॥
मातु मते महँ मानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर ॥ अघ अवगुन छमि आदरहिं समुझि
आपनी ओर ॥ २३४ ॥ जौं परिहरहिं मलिन मन जानी ॥ जौं सनमानहिं सेवकु मानी ॥ मो
रे सरन राम की पनहीं ॥ राम सुस्वामि दोसु सब जनहीं ॥ जग जस भाजन चातक मीना ॥
नेम प्रेम निज निपुन नबीना ॥ अस मन गुनत चले मग जाता ॥ सकुच सनेह सिथिल
सब गाता ॥ फेरति मनहिं मातु कृत षोरी ॥ चलत भगति बल धीरज धोरी ॥ जब समुझत

अ० रघुनाथसुभाऊ।।नवृपथपरतअनाइलपाऊ।।भरतदसातेहिअवसरकैसी।।जलप्र
९६ वाहजलअलिगतिजैसी।।देखिभरतकरसोचसनेहू।।भानिषादतेहिसमयविदेहू।।
दोहा।।: लगेहोनमंगलसगुनसुनिगुनिकहतनिषादु।।मिटिहिसोचुहोइहिहर
षुपुनिपरिनामविषादु।।२३३।।सेवकवचनसत्यसवजाने।।आश्रमनिकटजाइनि
यराने।।भरतदीखवनसैलसमाजू।।मुदितछुधितजनुपाइसुनाजू।।ईतिभीतिजनु
प्रजादुखारी।।त्रिविधितापपीडितग्रहमारी।।जाइसुराजसुदेससुखारी।।होहिंभरत
गतितेहिअनुहारी।।रामवासवनसंपतिभ्राजा।।सुखीप्रजाजनुपाइसुराजा।।सचि
वविरागुविवेकुनरेसू।।विपिनसुहावनपावनदेसू।।भटजमनियमसैलरजधानी।। ९६
सांतिसुमतिसुचिसुंदररानी।।सकलअंगसंपन्नसुराऊ।।रामचरनआश्रितचित

चा० ॥ दोहा ॥ जीतिमोहमहिपालुदलसहितविवेकुभुआलु ॥ करतअकंटकराज्य
पुरसुषसंपदासुकालु ॥ २३५ ॥ वनप्रदेसमुनिवासघनेरे ॥ जनुपुरनगरगाउँगनषेरे
विपुलविचित्रविहगमृगनाना ॥ प्रजासमाजुनजाइवषाना ॥ षगहाकरिहरिवाघव
राहा ॥ देषिमहिषवृषसाजुसराहा ॥ वयरुविहाइचरहिंएकसंगा ॥ जहँतहँमनहुँसेन
चतुरंगा ॥ झरनाझरहिंमत्तगजगाजहिं ॥ मनहुँनिसानविविधविधवाजहिं ॥ चककचकोर
चातकसुकपिकगन ॥ कूंजितमंजुमरालमुदितमन ॥ अलिगनगावतनाचतमोरा ॥ जनु
सुराजुमंगलचहुँओरा ॥ वेलिविटपतृनसफलसफूला ॥ सवसमाजुमुदमंगलमूला
दोहा ॥ रामसैलसोभानिरषिभरतहृदयअतिप्रेमु ॥ तापसतपफलुपाइजिमिसुषी
सिरानेनेमु ॥ २३६ ॥ तवकेवटऊँचेंचढिधाई ॥ कहेउभरतसनभुजाउठाई ॥ नाथदेषिअ

अ०
२५१

हिं बिटप बिसाला॥ पाकरि जंबु रसाल तमाला॥ तिन्ह तरु बरन्ह मध्य बटु सोहा॥ मंजु बिसा
ल देषि मन मोहा॥ नील सघन पल्लव फल लाला॥ अबिरल छांह सुषद सब काला॥ मान
हु तिमिर अरुनमय रासी॥ बिरची बिधि सकेलि सुषमा सी॥ ए तरु सरित समीप गोसांई॥
रघुबर परनकुटी जहं छाई॥ तुलसी तरुबर बिबिध सुहाए॥ कहुं कहुं सियं कहुं लषन लगाए॥ ब अ०
ट छाया बेदिका बनाई॥ सिय निज पानि सरोज सुहाई॥ दोहा॥ जहां बैठि मुनिगन सहि
त नित सिय राम सुजान॥ सुनहि कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान॥ २३६॥ सषा ब
चन सुनि बिटप निहारी॥ उमगे भरत बिलोचन बारी॥ करत प्रनाम चले दोउ भाई॥ कह
त प्रीति सारद सकुचाई॥ हरषहि निरषि राम पद अंका॥ मानहु पारस पायउ रंका॥ रज सि २५१
र धरि हिय नयनन्हि लावहिं॥ रघुबर मिलन सरिस सुष पावहिं॥ देषि भरत गति अकथ अ

तीवा॥ प्रेममगनमृगखगजडजीवा॥ सखहिसनेहबिबसमगभूला॥ कहिसुपंथसुरबर
षहिफूला॥ निरखिसिद्धसाधकअनुरागे॥ सहजसनेहसराहनलागे॥ होतनभूतलभा
उभरतको॥ अचरसचरचरअचरकरतको॥ दोहा॥ पेमुअमिअमंदरुबिरहुभरतपयो
धिगँभीर॥ मथिप्रगटेउसुरसाधुहितकृपासिंधुरघुबीर॥ २३७॥ सखासमेतमनोहरजोटा॥
लखेउनलखनसघनबनओटा॥ भरतदीखप्रभुआश्रमुपावन॥ सकलसुमंगलसदनु
सुहावन॥ करतप्रवेसमिटेदुखदावा॥ जनुजोगीपरमारथुपावा॥ देखेभरतलखनप्रभुआ
गे॥ पूछेबचनकहतअनुरागे॥ सीसजटाकटिमुनिपटबाँधे॥ तूनकसेकरसरधनुकाँधे॥ बे
दीपरमुनिसाधुसमाजू॥ सीयसहितराजतरघुराजू॥ बलकलबसनजटिलतनुस्यामा॥ ज
नुमुनिबेषुकीन्हरतिकामा॥ करकमलनिधनुसायकफेरत॥ हियकीजरनिहरतहँसि

अ० ८९ हेरति॥ दोहा॥ लसत मंजु मुनि मंडली मध्य सीय रघुनंदु॥ ज्ञान सभा जनु तनु धरे भगति
सच्चिदानंदु॥२३८॥ सानुज सखा समेत मगन मन॥ बिसरे हरष सोक सुख दुख गन॥ पा
हि नाथ कहि पाहि गोसाईं॥ भूतल परे लकुट की नाईं॥ बचन सप्रेम लखन पहिचाने॥ क
रत प्रनामु भरत जिय जाने॥ बंधु सनेह सरस येहि ओरा॥ उत साहिब सेवा बस जोरा॥ मि
लि न जाइ नहि गुदरत बनई॥ सुकबि लखन मन की गति भनई॥ रहे राखि सेवा पर भा
रु॥ चढ़ी चंग जनु खैंच खेलारु॥ कहत सप्रेम नाइ महि माथा॥ भरत प्रनाम करत रघुना
था॥ उठे राम सुनि प्रेम अधीरा॥ कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा॥ दोहा॥ बरबस लिए
उठाइ अलाए कृपानिधान॥ भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान॥ ८९
२३९॥ मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी॥ कबिकुल अगम करम मन बानी॥ परम

प्रेम पूरन दोउ भाई॥ मनु बुधि चित अहमिति बिसराई॥ कहहु सुप्रेमु प्रगट को कर
ई॥ केहि छाया कबि मति अनुसरई॥ कबिहि अरथ आखर बलु साचा॥ अनुहरि ताल
गतिहि नटु नाचा॥ अगम सनेहु भरत रघुबर को॥ जहं न जाइ मनु बिधि हरि हर को॥
सो मैं कुमति कहौं केहि भांती॥ बाज सुराग कि गांडर तांती॥ मिलनि बिलोकि भरत
रघुबर की॥ सुरगन सभय धकधकी धरकी॥ समुझाये सुरगुरु जड जागे॥ बरषि प्रसू
न प्रसंसन लागे॥ दोहा॥ मिलि सप्रेम रिपुसूदनहि केवटु भेटेउ राम॥ भूरि भाय भे
टे भरत लछिमन करत प्रनाम॥२४०॥ भेटेउ लषन ललकि लघु भाई॥ बहुरि नि
षादु लीन्ह उर लाई॥ पुनि मुनिगन दुहु भाइन्ह बंदे॥ अभिमत आसिष पाइ अनं
दे॥ सानुज भरत उमगि अनुरागा॥ धरि सिर सिय पद पदुम परागा॥ पुनि पुनि कर

अ० १८२ तप्रनामउठाये॥ सिरकरकमलपरसिबैठाये॥ सियअसीसुदीन्हिमनमाहीं॥ मगनस
नेहदेहसुधिनाहीं॥ सबविधिसानुकूललखिसीता॥ भेनिसोचउरअपडरबीता॥ को
उकछुकहइनकोउकछुपूछा॥ प्रेमभरामननिजगतिछूछा॥ तेहिअवसरकेवटधी
रजधरि॥ जोरिपानिबिनवतप्रनामुकरि॥ दोहा॥ नाथसाथमुनिनाथकेमातुसकल
पुरलोग॥ सेवकसेनपसचिवसबआयेबिकलबियोग॥ २४२॥ सीलसिंधुसुनिगुरआगव
नु॥ सियसमीपराखेरिपुदवनु॥ चलेसबेगरामतेहिकाला॥ धीरधरमधुरदीनदया
ला॥ गुरहिदेखिसानुजअनुरागे॥ दंडप्रनामकरनप्रभुलागे॥ मुनिबरधाइलियेउ
रलाई॥ प्रेमउमगिभेटेदोउभाई॥ प्रेमपुलकिकेवटकहिनामू॥ कीन्हदूरितेदंडप्र १८२
नामू॥ रामसखारिषिबरबसभेटा॥ जनुमहिलुठतसनेहसमेटा॥ रघुपतिभगतिसु

मंगलमूला॥ नभ सराहि सुर बरषहि फूला॥ एहि सम निपट नीच कोउ नाहीं॥ बड़ ब
सिष्ट सम को जग माहीं॥ दोहा॥ः जेहि लखि लखनहु तें अधिक मिले मुदित मुनिराउ॥ सो
सीतापति भजन को प्रगट प्रताप प्रभाउ॥ २४३॥ आरत लोग राम सब जाना॥ करुना
कर सुजान भगवाना॥ जो जेहि भाय रहा अभिलाषी॥ तेहि तेहि कै तसि तसि रुख राखी
सानुज मिलि पल महु सब काहू॥ कीन्ह दूरि दुख दारुन दाहू॥ यह बडि बात राम कै ना
हीं॥ जिमि घट कोटि एक रबि छाहीं॥ मिलि केवटहि उमगि अनुरागा॥ पुरजन सकल
सराहहि भागा॥ देखी राम दुखित महतारी॥ जनु सुबेलि अवली हिम मारी॥ प्रथम राम
भेटी कैकेई॥ सरल सुभाय भगति मति भेई॥ पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी॥ काल करम
बिधि सिर धरि खोरी॥ दोहा॥ः भेटी रघुबर मातु सब करि प्रबोधु परितोषु॥ अंब ईस आ

अ० ९४ धीन जगु काहु न देइ अदोसु ॥२४३॥ गुरतिय पद बंदे दुहु भाई ॥ सहित बिप्रतिय जे सँ
ग आई ॥ गंग गौरि सम सब सनमानी ॥ देहि असीस मुदित म्रदु बानी ॥ गहि पद लगे
सुमित्रा अंका ॥ जनु भेटी संपति अति रंका ॥ पुनि जननी चरननि दोउ भ्राता ॥ परे प्रेम
ब्याकुल सब गाता ॥ अति अनुराग अंब उर लाए ॥ नयन सनेह सलिल अन्हवाए ॥
तेहि अवसर कर हरष बिषादू ॥ किमि कबि कहइ मूक जिमि स्वादू ॥ मिलि जननिहि सा
नुज रघुराऊ ॥ गुर सन कहेउ कि धारिय पाऊ ॥ पुरजन पाइ मुनीस नियोगू ॥ जल थल त
कि तकि उतरेउ लोगू ॥ दोहा ॥ महिसुर मंत्री मातु गुर गने लोग लिये साथ ॥ पावन आश्रम
गवनु किय भरत लखन रघुनाथ ॥२४४॥ सीय आइ मुनिबर पग लागी ॥ उचित असी ९४
स लही मन मागी ॥ गुरपतिनिहि मुनितियन्ह समेता ॥ मिली प्रेमु कहि जाइ न जेता ॥

वंदि वंदि पग सिय सबही के॥ आसिरबचन लहे प्रिय जी के॥ सासु सकल जब सीय नि
हारी॥ मूदे नयन सहमि सुकुमारी॥ परी बधिक बस मनहु मराली॥ काह कीन्ह करतार
कुचाली॥ तिन्ह सिय निरखि निपट दुष पावा॥ सो सब सहिय जो दैउ सहावा॥ जनक
सुता तब उर धरि धीरा॥ नील नलिन लोयन भरि नीरा॥ मिली सकल सासुन्ह सिय जाई
तेहि अवसर करुना महि छाई॥ दोहा॥ लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अ
नुराग॥ हृदय असीसहि प्रेम बस रहिअहु भरी सोहाग॥२४५॥ बिकल सनेह सीय स
ब रानी॥ बैठन सबहि कहेउ गुर ज्ञानी॥ कहि जग गति मायिक मुनिनाथा॥ कहे कछु
क परमारथ गाथा॥ नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा॥ सुनि रघुनाथ दुसह दुष पावा॥ मरन
हेतु निज नेह बिचारी॥ भे अति बिकल धीर धुर धारी॥ कुलिस कठोर सुनत कटु बानी॥ बि

लषनसीयसबुरानी॥सोकबिकलअतिसकलसमाजू॥मानहुराजअकाजेउआ
श्री० जू॥मुनिवरबहुरिरामसमुझाए॥सहितसमाजसुसरितनहाए॥व्रतनिरंबुतेहिदिनप्रभु
२५ कीन्हा॥मुनिहुकहेजलुकाहुनलीन्हा॥दोहा॥ भोरुभयेरघुनंदनहिजोमुनिआयसु
दीन्ह॥श्रद्धाभगतिसमेतप्रभुसोसबुसादरकीन्ह॥२४६॥ करिपितुक्रियावेदजसिब
त रनी॥भेपुनीतपातकतमतरनी॥जासुनामपावकअघतूला॥सुमिरतसकलसुमंगल
मूला॥सुद्धसोभयउसाधुसंमतअस॥तीरथआवाहनसुरसरिजस॥सुद्धभए दुइबा
सरबीते॥बोलेगुरसनरामपिरीते॥नाथलोगसबनिपटदुषारी॥कंदमूलफलअंबुअ
हारी॥सानुजभरतसचिवसबमाता॥देषिमोहिपलजिमिजुगजाता॥सबसमेतपुर २५
धारिअपाऊ॥आपुइहाअमरावतिराऊ॥बहुतकहेउसबकिएउढिठाई॥उचित

होइ न सकइ रिस आगि गोसाईं ॥ दोहा ॥ धरम सेतु करुनायतन कस न कहहु अस राम ॥ लो
ग दुषित दिन दुइ दरसु देषि लहहु बिश्राम ॥ २४७ ॥ राम बचन मुनि सभय समाजू ॥ ज
नु जलनिधि मथत बिकल जहाजू ॥ सुनि गुर गिरा सुमंगल मूला ॥ भएउ मनहु मारुत
अनुकूला ॥ पावनि पय तिहु काल नहाहीं ॥ जो बिलोकि अघ ओघ नसाहीं ॥ मंगल
मूरति लोचन भरि भरि ॥ निरषहिं हरषि दंडवत करि करि ॥ राम सैल बन देषन जाहीं
जहँ सुष सकल सकल दुष नाहीं ॥ झरना झरहि सुधासम बारी ॥ त्रिबिध ताप हर त्रिबि
ध बयारी ॥ बिटप बेलि तृन अगनित जाती ॥ फल प्रसून पल्लव बहु भाँती ॥ सुंदर सि
ला सुषद तरु छाहीं ॥ जाइ बरनि बन छबि केहि पाहीं ॥ दोहा ॥ सरनि सरोरुह जल बिह
ग कूजत गुंजत भृंग ॥ बैर बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहुरंग ॥ २४८ ॥ कोल किं

अ०
१९६

रात भिल्ल बनबासी॥ मधु सुचि सुंदर स्वाद सुधासी॥ भरि भरि परन पुटी रचि रूरी॥ कंद
मूल फल अंकुर जूरी॥ सबहि देहि करि बिनय प्रनामा॥ कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा॥
देहि लोग बहु मोल न लेही॥ फेरत राम दोहाई देही॥ कहहि सनेह मगन मृदु बानी॥
मानत साधु प्रेम पहिचानी॥ तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा॥ पावा दरसन राम प्रसादा॥
हमहि अगम अति दरस तुम्हारा॥ जस मरु धरनि देवधुनि धारा॥ राम कृपाल निषाद
निवाजा॥ परिजन प्रजउ चहिय जस राजा॥ दोहा॥ यह जिय जानि सकोच तजि करिय
छोह लखि नेह॥ हमहि कृतारथ करन लगि फल तृन अंकुर लेहु॥ २५१॥ तुम्ह प्रिय
पाहुन बन पगु धारे॥ सेवा जोग न भाग हमारे॥ देव काह हम तुम्हहि गोसाईं॥ ईंधन
पात किरात मिताई॥ यह हमारि अति बडि सेवकाई॥ लेहि न बासन बसन चोराई॥ हम

१९६

जडजीवजीवगनघाती॥कुटिलकुचालीकुमतिकुजाती॥पापकरतनिसिबासरजाँहीं
नहिपटकटिनहिपेटअघाहीं॥सपनेहुधरमबुद्धिकसकाऊ॥यहरघुनंदनदरसप्र
भाऊ॥जबतेप्रभुपदपदुमनिहारे॥मिटेदुसहदुखदोषहमारे॥बचनसुनतपुरजनअ
नुरागे॥तिन्हकेभागसराहनलागे॥छंद॥लागेसराहनभागसबअनुरागबचनसुनाव
हीं॥बोलनिमिलनिसियरामपदसनेहलखिसुखुपावहीं॥नरनारिनिदरहिनेहनिज
सुनिकोलभिल्लनिकीगिरा॥तुलसीकृपारघुबंसमनिकीलोहलैनौकातिरा॥सोरठा॥बि
न२ हरहिबनचहुओरप्रतिदिनप्रमुदितलोगसब॥जलज्यौंदादुरमोरभयेपीनपावसप्रथम
॥२५०॥पुरनरनारिमगनअतिप्रीती॥बासरजाहिपलकसमबीती॥सीयसासुप्रतिबेष
बनाई॥सादरकरइसरिससेवकाई॥लखानमरमरामबिनुकाहू॥मायासबसियमाया

अ

माहु॥ सीयसासुसेवाबसकीन्ही॥ तिन्हलहिसुषसिषआसिषदीन्ही॥ लषिसियसहित
सरलदोउभाई॥ कुटिलरानिपछितानिअघाई॥ अवनिजमहिजाचतिकैकेई॥ महिन
बीचुबिधिमीचुनदेई॥ लोकहुबेदबिदितकबिकहहीं॥ रामबिमुषथलुनरकनलहहीं
यहुसंसउसबकेमनमाहीं॥ रामगवनुबिधिअवधकिनाहीं॥ दोहा॥ निसिननींदन
हिभूषदिनभरतबिकलसुठिसोच॥ नीचकीचबिचमगनजसमीनहिसलिलसकोच
२५१॥ कीन्हिमातुमिसकालकुचाली॥ ईतिभीतिजसपाकतसाली॥ केहिबिधिहोइराम
अभिषेकू॥ मोहिअवकलतउपाउनएकू॥ अवसिफिरहिंगुरआयसुमानी॥ मुनिपुनि
कहबरामरुचिजानी॥ मातुकहेहुबहुरहिंरघुराऊ॥ रामजननिहठकरबिकिकाऊ॥ ९७
मोहिअनुचरकरकेतिकबाता॥ तेहिमहकुसमउबामबिधाता॥ जौंहठकरउंतनिपट

कुकरमू॥ हरगिरितेगुरुसेवकधरमू॥ एकउनुगुनितिनमनठहरानी॥ सोचतभरतहिरै
नि|बिहानी॥ प्रातनहाइप्रभुहिसिरनाई॥ बैठतपठएरिषयबोलाई॥ दोहा॥ःगुरपद
कमलप्रनामुकरिबैठेआयसुपाइ॥ बिप्रमहाजनसचिवसबजुरेसभासदआइ॥२५२
बोलेमुनिवरसमयसमाना॥ सुनहुसभासदभरतसुजाना॥ धरमधुरीनभानुकुलभा
नू॥ राजारामस्वबसभगवानू॥ सत्यसंधपालकश्रुतिसेतू॥ रामजनमजगमंगलहेतू॥
गुरपितुमातुबचनअनुसारी॥ खलदलुदलनदेवहितकारी॥ नीतिप्रीतिपरमारथस्वा
रथु॥ कोउनरामसमजानजथारथु॥ बिधिहरिहरुससिरबिदिसिपाला॥ मायाजीवक
रमकुलिकाला॥ अहिपमहिपजहँलगिप्रभुताई॥ जोगसिद्धिनिगमागमगाई॥ करि
बिचारिजियदेखहुनीके॥ रामरजाइसीससबहीके॥ दोहा॥ राखेरामरजाइरुखहमसब

श्री०
९८

कर हित होइ॥ समुझि सयाने करहु अब सब मिलि संमत सोइ॥२५४॥ सब कहु सुषद रा
म अभिषेकू॥ मंगल मोद मूल मग एकू॥ केहि विधि अवध चलहि रघुराउ॥ कहहु समुझि
सोइ करिअ उपाउ॥ सब सादर सुनि मुनिवर बानी॥ नय परमारथ स्वारथ सानी॥ उत
रु न आव लोग भय भोरे॥ तब सिर नाइ भरत कर जोरे॥ भानुबंस भए भूप घनेरे॥ अधि
क एक तें एक बडेरे॥ जनम हेतु सब कहु पितु माता॥ करम सुभासुभ देइ विधाता॥ दलि
दुष सजइ सकल कल्याना॥ अस असीस राउरि जगु जाना॥ सोइ गोसाइ विधि गति जे
हि छेकी॥ सकइ को टारि टेक जो टेकी॥ दोहा॥ बूझिय मोहि उपाउ अब सो सब मोर अ
भागु॥ सुनि सनेहमय बचन गुर उर उमगा अनुरागु॥२५५॥ तात बात फुरि राम कृपाहीं ९८
राम विमुष सिधि सपनेहु नाहीं॥ सकुचउँ तात कहत एक बाता॥ अरध तजहि बुध सर

वसुजाता॥तुम्हकाननगवनहुदोउभाई॥फेरिअहिंलषनसीयरघुराई॥७॥मुनिसुवच
नहरषेदोउभाता॥भेप्रमोदपरिपूरनगाता॥मनप्रसंनतनतेजुविराजा॥जनुजिएराउ
रामभयराजा॥वहुतलाभलोगन्हलघुहानी॥समदुषसुषसवरोवहिरानी॥कहहिंभर
तुमुनिकहासोकीन्ह॥फलुजगजीवनअभिमतदीन्ह॥काननकरउंजनमभूरिवासू॥ए
हितेअधिकनमोरसुपासू॥दोहा॥अंतरजामीरामसियतुम्हसर्वग्यसुजानु॥जौंफुरकहहु
तनाथनिजकीजियवचनप्रमान॥२५५॥भरतवचनमुनिदेषिसनेहू॥सभासहितमुनिभ
एउविदेहू॥भरतमहामहिमाजलरासी॥मुनिमतिठाढितीरअवलासी॥गाचहैपारजत
नुहियहेरा॥पावतनावनवोहितवेरा॥औरुकरिहिकोभरतवडाई॥सरसीसीकीसिंधुसमा ५२
ई॥भरतुमुनिहिमनभीतरभाए॥सहितसमाजरामपहिंआए॥प्रभुप्रनामुकरिदीन्हसु

अ॰ १९८ आसनु॥बैठेसबसुनिमुनिअनुसासनु॥बोलेमुनिबरबचनबिचारी॥देसकालअवसर
अनुहारी॥सुनहुरामसरबग्यसुजाना॥धरमनीतिगुनग्याननिधाना॥दोहा॥ःसबकेउ
रअंतरबसहुजानहुभाउकुभाउ॥पुरजनजननीभरतहितहोइसोकहियउपाउ॥२५६
आरतकहहिंबिचारिनकाउ॥सूझजुआरिहिआपनदाउ॥सुनिमुनिबचनकहतरघु
राउ॥नाथतुम्हारेहिहाथउपाउ॥सबकरहितरुखराउरिराखे॥आयसुकिएमुदितफु
रभाषे॥प्रथमजोआयसुमोकहुँहोई॥माथेमानिकरउँसिखसोई॥पुनिजेहिकहँजसकह
बगोसाईं॥सोसबभाँतिघटिहिसेवकाई॥कहमुनिरामसत्यतुम्हभाषा॥भरतसने
हबिचारुनराखा॥तेहितेंकहउँबहोरिबहोरी॥भरतभगतिबसभइमतिमोरी॥मोरेजा १९८
नभरतरुचिराखी॥जोकीजियसोसुभसिवसाखी॥दोहा॥ःभरतबिनयसादरसुनियक

रियविचारुवहोरि॥ करवसाधुमतलोकमतन्रपनयनिगमनिचोरि॥२५७॥ गुरअनुरा
गभरतपरदेषी॥ रामहृदयआनंदुविशेषी॥ भरतहिधरमधुरंधरजानी॥ निजसेवकत
नमानसवानी॥ वोलेगुरआयसुअनुकूला॥ वचनमंजुमृदुमंगलमूला॥ नाथसपथ
पितुचरनदोहाई॥ भयउनभुअनभरतसमभाई॥ जेगुरपदअंवुजअनुरागी॥ तेलो
कहुवेदहुवडभागी॥ राउरजापरअसअनुरागू॥ कोकहिसकइभरतकरभागू॥ लषि
लघुवंधुवुद्धिसकुचाई॥ करतवदनपरभरतवडाई॥ भरतकहहिसोइकिएभलाई
असकहिरामरहेअरगाई॥ दोहा॥ तवमुनिवोलेभरतसनसवसंकोचुतजितात॥ कृ
पासिंधुप्रियवंधुसनकहहुहृदयकैवात॥२५८॥ सुनिमुनिवचनरामरुषपाई॥ गुर
साहिवअनुकूलअघाई॥ लषिअपनेसिरसवुछरुभारु॥ कहिनसकहिकछुकरहि

विचारू॥ पुलकि सरीर सभा भये ठाढे॥ नीरज नयन नेह जल वाढे॥ कहव मोर मुनिनाथ
अ० १०० निवाहा॥ एहि तें अधिक कहौं मै काहा॥ मै जानउँ निज नाथ सुभाऊ॥ अपराधिहु पर
कोह न काऊ॥ मो पर कृपा सनेह विशेषी॥ षेलत षुनुस न कवहू देषी॥ सिसुपन तें परि
हरेउँ न संगा॥ कवहुँ न कीन्ह मोर मन भंगा॥ मै प्रभु कृपा रीति जियँ जोही॥ हारेहुँ षेल
जितावहि मोही॥ दोहा॥ ॥ महूँ सनेह सकोच वस सनमुष कहे न वयन॥ दरसन तृपि
त न आजु लगि प्रेम पिआसे नयन॥ २५९॥ विधि न सकेउ सहि मोर दुलारा॥ नीच वीच
जननी मिस पारा॥ येहउ कहत मोहि आजु न सोभा॥ अपनी समुझि साधु सुचि को भा
मातु मंद मइ साधु सुचाली॥ उर अस आनत कोटि कुचाली॥ फरइ कि कोदव वालि सु १००
साली॥ मुकुता प्रसव कि संवुक काली॥ सपनेहु दोसु कलेसु न काहू॥ मोर अभाग उद

धिअबगाहू॥ बिनुसमुझेंनिजअघपरिपाकू॥ जारिउँजायजननिकहिकाकू॥ हृदय
हेरिहारेउँसबओरा॥ येकहिभाँतिभलेहिभलमोरा॥ गुरुगोसाइँसाहिबसियरामू॥
लागतमोहिनीकपरिनामू॥ दोहा ॥ साधुसभागुरप्रभुनिकटकहउँसुथलसतिभा
उ॥ प्रेमप्रपंचुकिझूठफुरजानहिमुनिरघुराउ॥२६०॥ भूपतिमरनुप्रेमपनुराषी॥
जननीकुमतिजगतुसबुसाषी॥ देषिनजाहिबिकलमहतारी॥ जरहिदुसहजरपुर
नरनारी॥ महींसकलअनरथकरमूला॥ सोसुनिसमुझिसहेउँसबसूला॥ सुनिबन
गवनुकीन्हरघुनाथा॥ करिमुनिबेषलषनसियसाथा॥ बिनुपानहिन्हपयादेहिपा
ये॥ संकरसाषिरहेउँएहिघाए॥ बहुरिनिहारिनिषादसनेहू॥ कुलिसकठिनउरभए
उनबेहू॥ अबसबआँषिन्हदेषेउँआई॥ जिअतजीवजडसबइसहाई॥ जिन्हहिनि

अ० रचिमगासोंपिनिवीछी॥ तजहिविषमविषुनामसती छी॥ दो०॥ तेउरघुनंदनुलषनुसिय
१०१ अनहितलागेजाहि॥ तासुतनयनजि दुसहदुषदैउसहावैकाहि॥२६२॥ मुनिअतिविक
लभरतवरवानी॥ आरतिप्रीतिविनयनयसानी॥ सोकमगानसवुसभायभारू॥ मनहुक
मलवनपरेउतुसारू॥ कहिअनेकविधिकथापुरानी॥ भरतप्रवोधुकीन्हमुनिज्ञानी॥ वो
लेउचितवचनरघुनंदू॥ दिनकरकुलकैरववनचंदू॥ तातजायजनिकरहुगलानी॥ ईस
अधीनजीवगतिजानी॥ तीनिकालतिभुवनमतमोरे॥ पुन्यसलोकताततरतोरे॥ उरआ
नततुम्हपरकुटिलाई॥ जाइलोकुपरलोकुनसाई॥ दोसुदेइजननिहिजडतेई॥ जिन्ह
गुरसाधुसभानहिसेई॥ दोहा॥ मिटिहइपापप्रपंचसवअषिलअमंगलभार॥ लोक १०१
सुजसुपरलोकसुषसुमिरतनामुतुम्हार॥२६३॥ कहउँसुभाउसत्यशिवसाषी॥ भरतभू

मिरहहाउरीरायी॥ तातकुतरककरहुजनिजाए॥ बैरप्रेमुनहिदुरइँदुराए॥ मुनिगननि ३
कटविहगम्रगजाहीं॥ बाधकवधिकविलोकिपराहीं॥ हितअनहितपसुपछिउजाना॥
मानुषतनगुनज्ञाननिधाना॥ ताततुम्हहिमैजानउँनीके॥ करउँकाहअसमंजसजी
के॥ राखेउराउसत्यमोहित्यागी॥ तनुपरिहरेउप्रेमपनलागी॥ तासुवचनमेटतमन
सोचू॥ तेहितेअधिकतुम्हारसकोचू॥ तापरगुरमोहिआयसुदीन्हा॥ अवसिजोकहहु
चहउँसोइकीन्हा॥ दोहा॥ मनुप्रसन्नकरिसकुचतजिकहहुकरउँसोइआजु॥ सत्य
संधरघुवरवचनसुनिभासुखीसमाजु॥ २६४॥ सुरगनसहितसभयसुरराजू॥ सोचहि
चाहतहोनअकाजू॥ वनतउपावकरतकछुनाही॥ रामसरनसवगेमनमाहीं॥ वहु
रिविचारिपरस्परकहहीं॥ रघुपतिभगतभगतिवसअहहीं॥ सुधिकरिअंवरीषदुर

अ०
१०२ वासा॥ भे सुर सुरपति निपट निरासा॥ सहे सुरन्ह बहु काल विषादा॥ नर हरि किए प्रगट प्र
हलादा॥ लगि लगि कान कहहि धुनि माथा॥ अब सुर काज भरत के हाथा॥ आन उपाउ
न देखिय देवा॥ मानत राम सुसेवक सेवा॥ हिय सप्रेम सुमिरहु सब भरतहि॥ निज गुन सी
ल राम बस करतहि॥ दोहा॥ सुनि सुर मनु सुर गुर कहेउ भल तुम्हार बड भागु॥ सकल सु
मंगल मूल जग भरत चरन अनुरागु॥ २६४॥ सीतापति सेवक सेवकाई॥ कामधेनु सय
सरिस सुहाई॥ भरत भगति तुम्हरे मन आई॥ तजहु सोचु विधि बात बनाई॥ देखु देवपति
भरत सुभाउ॥ सहज सुभाय विवस रघुराउ॥ मन थिर करहु देव डरु नाहीं॥ भरतहि जानि
राम परिछाहीं॥ सुनि सुर गुर सुर संमत सोचू॥ अंतरजामी प्रभुहि संकोचू॥ निज सिर भारु भ १०२
रत जिय जाना॥ करत कोटि विधि उर अनुमाना॥ करि विचारु मन दीन्ही ठीका॥ राम रजा

यसु आपन नीका॥ निज पन तजि राखेउ पनु मोरा॥ छोहु सनेहु कीन्ह नहि थोरा॥ दोहा॥
कीन्ह अनुग्रह अमित अति सब विधि सीतानाथ॥ करि प्रनामु बोले भरतु जोरि जलज
जुग हाथ॥ २६५॥ कहौं कहावौं का अव स्वामी॥ कृपा अंबुनिधि अंतरजामी॥ गुर प्रसंन
साहिव अनुकूला॥ मिटी मलिन मन कलपित सूला॥ अपडर डरेउँ न सोच समूले॥ रवि
हि न दोसु देव दिसि भूले॥ मोर अभागु मातु कुटिलाई॥ विधि गति विषम काल कठिनाई॥
पाउ रोपि सव मिलि मोहि घाला॥ प्रनतपाल पन आपन पाला॥ यह नइ रीति न राउरि
होई॥ लोकहु वेद विदित नहि गोई॥ जगु अनभल भल एकु गोसाँई॥ कहिय होइ भल
कासु भलाई॥ देव देवतरु सरिस सुभाउ॥ सनमुख विमुख न काहुहि काउ॥ दोहा॥
जाइ निकट पहिचानि तरु छाँह समनि सव सोच॥ मागत अभिमत पाव जग राउ रंक

भलपोच॥२६६॥लषिसवविधिगुरस्वामिसनेहू॥नहिमनमिटेउछोभुसंदेहू॥अवकरु
अयो॰ १०३ नानिधिकीजियसोई॥जनहितप्रभुचितछोभुनहोई॥जोसेवकुसाहिवहिसकोची॥
निजहितचहइतासुमतिपोची॥सेवकहितसाहिवसेवकाई॥करइसकलसुषलोभु
विहाई॥स्वारथनाथफिरेसवहीका॥किएरजाइकोटिविधिनीका॥यहस्वारथपरमा
रथसारू॥सकलसुकृतफलसुगतिसिंगारू॥देवएकविनतीसुनिमोरी॥उचितहोइत
सकरववहोरी॥तिलकसमाजुसाजिसवआना॥करियसुफलप्रभुजौंमनमाना॥दो
हा॥सानुजपठइयमोहिवनकीजियसवहिसनाथ॥नतुफेरिअहिवंधुदोउनाथ
चलौंमइसाथ॥२६७॥नतरुजाहिवनतीनिउभाई॥वहुरियसीयसहितरघुराई॥ १०३
जेहिविधिप्रभुप्रसन्नमनहोई॥करुनासागरकीजियसोई॥देवदीन्हसवमोहि

अभारू॥ मोरेनीतिनधरमबिचारू॥ कहउंवचनसवस्वारथहेतू॥ रहतनआरतकेचि
तचेतू॥ उतरदेइसुनिस्वामिरजाई॥ सोसेवकलषिलाजलजाई॥ असमैअवगुनउ
दधिअगाधू॥ स्वामिसनेहसराहतसाधू॥ अवकृपालमोहिसोमतभावा॥ सकुचस्वामि
मनजाहिनपावा॥ प्रभुपदसपथकहउंसतभाउ॥ जगमंगलहितएकउपाउ॥ दो
हा॥ प्रभुप्रसन्नमनसकुचतजिजोजेहिआयसुदेव॥ सोसिरधरिधरिकरिहिसवमिटि
हिअनटअवरेव॥ २६८॥ भरतवचनसुचिसुनिसुरहरषे॥ साधुसराहिसुमनसुरवरषे॥
असमंजसवसअवधनिवासी॥ प्रमुदितमनतापसवनवासी॥ चुपहिंरहेरघुनाथसको
ची॥ प्रभुगतिदेषिसभासवसोची॥ जनकदूततेहिअवसरआए॥ मुनिवसिष्ठसुनिवे
गिवुलाए॥ करिप्रनामतिन्हरामनिहारे॥ वेषुदेषिभएनिपटदुषारे॥ दूतन्हमुनिवर

अ० बूझिबाता॥ कहहु बिदेह भूप कुसलाता॥ सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा॥ बोले चरबर जो
१०४ रे हाथा॥ बूझब राउर सादर साईं॥ कुसल हेतु सो भयउ गोसाईं॥ दोहा॥ नाहि त कोसल
नाथ के साथ कुसल गइ नाथ॥ मिथिला अवध बिसेषि ते जगु सब भयउ अनाथ॥ २६८
कोसलपति गति सुनि जनकौरा॥ भे सब लोग सोच बस बौरा॥ जेहि देखे तेहि समय बिदेहू
नाम सत्य अस लाग न केहू॥ रानि कुचालि सुनत नरपालहि॥ सूझ न कछु जस मनि बि
नु ब्यालहि॥ भरत राज रघुबर बनबासू॥ भा मिथिलेसहि हृदय हरासू॥ नृप बूझे बुध
सचिव समाजू॥ कहहु बिचारि उचित का आजू॥ समुझि अवध असमंजस दोऊ॥ चलिय
कि रहिय न कह कछु कोऊ॥ नृपहि धीर धरि हृदय बिचारी॥ पठए अवध चतुर चर चा १०४
री॥ बूझि भरत सति भाउ कुभाऊ॥ आएहु बेगि न होइ लषाऊ॥ दोहा॥ गए अवध चर

भरतगतिवूझिदेखिकरतूति॥ चलेचित्रकूटहिभरतचारचलेतिरहूति॥ २७०॥ दूतन्ह
आइभरतकीकरनी॥ जनकसमाजजथामतिवरनी॥ सुनिगुरपरिजनसचिवमहीपति
भेसवसोचसनेहविकलअति॥ धरिधीरजकरिभरतवडाई॥ लिएसुभटसाहनीवोला
ई॥ घरपुरदेसराखिरखवारे॥ हयगयरथवहुजानसवारे॥ दुघरीसाधिचलेततकाला॥
किएविश्रामनमगमहिपाला॥ भोरहिआजुनहाइप्रयागा॥ चलेजमुनउतरनसवला
गा॥ खवरिलेनहमपठएनाथा॥ तिन्हकहिअसमहिनाएउमाथा॥ साथकिरातछसा
तकदीन्हे॥ मुनिवरतुरतविदाचरकीन्हे॥ दोहा॥ सुनतजनकआगवनुसवहरषेउअव
धसमाजु॥ रघुनंदनहिसकोचवडसोचविवससुरराजु॥ २७१॥ गरइगलानिकुटिलकैके
ई॥ काहिकहइकेहिदूषनदेई॥ असमनआनिमुदितनरनारी॥ भएउवहोरिरहवदिन

अ० चारी॥ एहि प्रकार गत बासर सोऊ॥ प्रात नहान लाग सब कोऊ॥ करि मज्जन पूजहि नर ना
१७५ री॥ गनपति गौरि पुरारि तमारी॥ रमा रमन पद बंदि बहोरी॥ बिनवहि अंजलि अंचल जो
री॥ राजा राम जानकी रानी॥ आनंद अवधि अवध रजधानी॥ सुबस बसउ फिरि सहित
समाजा॥ भरतहि रामु करहु जुबराजा॥ एहि सुख सुधा सींचि सब काहू॥ देव देहु जग जीव
न लाहू॥ दोहा॥ गुर समाज भाइन्ह सहित राम राजु पुर होउ॥ अछत राम राजा अवध
मरिय माग सबु कोउ॥ २७३॥ सुनि सनेहमय परिजन बानी॥ निंदहि जोग बिरति मुनि
ग्यानी॥ एहि बिधि नित्य करम करि पुरजन॥ रामहि करहि प्रनाम पुलक तन॥ ऊंच नी
च मध्यम नर नारी॥ लहहि दरस निज निज अनुहारी॥ सावधान सबही सनमानहि १७५
सकल सराहत कृपानिधानहि॥ लरिकाइते रघुबर बानी॥ पालत नीति प्रीति पहिचा

नी॥सीलसकोचसिंधुरघुराऊ॥सुमुषसुलोचनसरलसुभाऊ॥कहतरामगुनगनअ
नुरागे॥सबनिजभाग्यसराहनलागे॥हमसमपुन्यपुंजजगथोरे॥जिन्हहिरामजान
तकरिमोरे॥दोहा॥प्रेममगनतेहिसमयसबसुनिआवतमिथिलेसु॥सहितसभासं
भ्रमउठेउरबिकुलकमलदिनेसु॥२७३॥भाइसचिवगुरपुरजनसाथा॥आगेंगवनु
कीन्हरघुनाथा॥गिरिबरुदीषजनकपतिजबहीं॥करिप्रनामरथत्यागेउतबहीं॥रा
मदरसलालसाउछाहू॥पथश्रमलेसुकलेसुनकाहू॥मनतहँजहँरघुबरबैदेही॥
बिनुमनतनदुषसुषसुधिकेही॥आवतजनकुचलेएहिभाँती॥सहितसमाजप्रेमम
तिमाती॥आएनिकटदेषिअनुरागे॥सादरमिलनपरसपरलागे॥लगेजनकमुनिजन
पदबंदन॥रिषिन्हप्रनामकीन्हरघुनंदन॥भाइन्हसहितरामिलिराजहि॥चलेल

आ०
१०६

बाद्रु समेत समाजु हि ॥ दोहा ॥ आश्रम सागर सांत रस पूरन पावन पाथु ॥ सेन मनहुं क
रुना सरित लिएं जाति रघुनाथु ॥ २७४ ॥ बोरति ग्यान बिराग करारे ॥ बचन ससोक मिलत
नद नारे ॥ सोच उसास समीर तरंगा ॥ धीरज तट तरुबर कर भंगा ॥ बिषम बिषाद तोरावति
धारा ॥ भय भ्रम भवर अबर्त अपारा ॥ केवट बुधि बिद्या बडि नावा ॥ सकहि न षेइ ऐक न
हि आवा ॥ बनचर कोल किरात बिचारे ॥ थके बिलोकि पथिक हियं हारे ॥ आश्रम उद
धि मिली जब जाई ॥ मनहु उठेउ अंबुधि अकुलाई ॥ सोक बिकल दोउ राज समाजा ॥ र
हा न ग्यानु न धीरजु लाजा ॥ भूप रूप गुन सील सराही ॥ रोवहि सोक सिंधु अवगाही ॥ छंद
अवगाहि सोक समुद्र सोचहि नारि नर ब्याकुल महा ॥ दै दोष सकल सरोष बोलहि बाम १०६
बिधि कीन्हो कहा ॥ सुर सिद्ध तापस जोगि जन मुनि देषि दसा बिदेह की ॥ तुलसी न सम

रथकोउजोतरिसैकेसरितसनेहकी॥सोरठा॥किएअमितउपदेसजहँतहँलोगन्ह
मुनिवरन्ह॥धीरजुधरियनरेसकहेउवसिष्ठविदेहसन॥२७५॥जासुज्ञानरविभवनि
सिनासा॥वचनकिरिनमुनिकमलविकासा॥तेहिकिमोहममतानियराई॥यहसियरा
मसनेहवडाई॥विषईसाधकसिद्धसयाने॥त्रिविधजीवजगवेदवषाने॥रामसनेहस
रसमनजासू॥साधुसभावडआदरतासू॥सोहतरामप्रेमविनुज्ञानू॥करनधारविनु
जिमिजलजानू॥मुनिवहुविधिविदेहसमुझाए॥रामघाटसवलोगनहाए॥सकलसो
कसंकुलनरनारी॥सोवासरवीतेउविनुवारी॥पसुषगमृगन्हनकीन्हअहारू॥प्रिय
परिजनकरकवनविचारू॥दोहा॥दोउसमाजनिमिराजरघुराजनहानेप्रात॥वैठे
सववटविटपतरमनमलीनकृसगात॥२७६॥जेमहिसुरदसरथपुरवासी॥जेमिथि

अ० लापति नगर निवासी। हंस बंस गुर जनक पुरोधा। जिन्ह जगु मगु परमारथु सोधा। लगे कह
१६७ न उपदेस अनेका। सहित धरम नय बिरति बिबेका। कौसिक कहि कहि कथा पुरानी। स
मुझाई सब सभा सुबानी। तब रघुनाथ कौसिकहि कहेउ। नाथ कालि जल बिनु सबु रहे
उ। मुनि कह उचित कहत रघुराई। गएउ बीति दिन पहर अढ़ाई। रिषि रुख लखि कह
तेरहुतिराजू। इहाँ उचित नहिं असन अनाजू। कहा भूप भल सबहि सोहाना। पाइ
रजायसु चले नहाना। दोहा। तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार। लइ आ
ए बनचर बिपुल भरि भरि काँवरि भार॥ २७७॥ कामद भे गिरि राम प्रसादा। अवलोकत
अपहरत बिषादा। सर सरिता बन भूमि बिभागा। जनु उमगत आनँद अनुरागा। बे १६७
लि बिटप सब सफल सफूला। बोलत खग मृग अलि अनुकूला। तेहि अवसर बन अ

धिकउछाहु॥त्रिविधिसमीरसुषदसवकाहु॥जाइनवरनिमनोहरताई॥जनुमहिकर
तिजनकपहुनाई॥तवसवलोगनहाइनहाई॥रामजनकमुनिआयसुपाई॥देषि
देषितरुवरअनुरागे॥जहँतहँपुरजनउतरनलागे॥दलफलमूलकंदविधिनाना॥पा
वनसुंदरसुधासमाना॥दोहा॥सादरसवकहरामगुरपठएभरिभरिभार॥पूजिपित
रसुरअतिथिगुरलगेकरनफलहार॥२७८॥एहिविधिवासरवीतेचारी॥रामनिरषि
नरनारिसुषारी॥दुहुँसमाजअसरुचिमनमाहीं॥विनुसियरामफिरवभलनाहीं॥सी
तारामसंगवनवासू॥कोटिअमरपुरसरिससुपासू॥परिहरिलषनुरामवैदेही॥जेहिघ
रुभाववामविधितेही॥दाहिनदैवहोइजवसवहीं॥रामसमीपवसियवनतवहीं॥मंदा
किनिमज्जनतिहुकाला॥रामदरसमुदमंगलमाला॥अटनुरामगिरिवनतापसथ

अ० ल॥ असनु अमिय सम कंद मूल फल॥ सुष समेत संवत दुइ साता॥ पल सम होहि न ज
१०८ निअहि जाता॥ दोहा॥ एहि सुष जोग न लोग सब कहहि कहाँ अस भागु॥ सहज सुभा
व समाज दुहुँ राम चरन अनुरागु॥ २७९॥ एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं॥ बचन स
प्रेम सुनत मन हरहीं॥ सीय मातु तेहि समय पठाईं॥ दासी देषि सुअवसरु आईं॥ साव
का सुनि सब सिय सासु॥ आयउ जनकराज रनिवासू॥ कौसल्या सादर सनमानी॥ आ
सन दिए समय सम आनी॥ सीलु सनेह सकल दुहुँ ओरा॥ द्रवहि देषि सुनि कुलिस क
ठोरा॥ पुलक सिथिल तन बारि बिलोचन॥ महि नष लिषन लगीं सब सोचन॥ सब सिय
राम प्रीति कि सि मूरति॥ जनु करुना बहु बेष बिसूरति॥ सीय मातु कह बिधि बुधि बाँ १०८
की॥ जो पय फेनु फोर पबि टाँकी॥ दोहा॥ सुनिय सुधा देषिय गरल सब करतूति कराल

जहँतहँकाकउलूकवकमानससकृतमराल॥२८०॥सुनिससोचकहदेविसुमित्रा॥
विधिगतिवडिविपरीतिविचित्रा॥जोसृजिपालइहरइवहोरी॥वालकेलिसमविधिम
तिभोरी॥कौसल्याकहदोसुनकाहू॥करमविवसदुखसुखछतिलाहू॥कठिनकरमग
तिजानविधाता॥जोसुभअसुभसकलफलदाता॥ईसरजाइसीससवहीके॥उतप
तिथितिलयविषहुअमीके॥देविमोहवससोचियवादी॥विधिप्रपंचअसअचलअ
नादी॥भूपतिजिअवमरवउरआनी॥सोचियसखिलखिनिजहितहानी॥सीयमा
तुकहसत्यसुवानी॥सुकृतीअवधिअवधपतिरानी॥दोहा॥लषनरामसियजाहुव
नभलपरिनामनपोचु॥गहवरिहियकहकौसिलामोहिभरतकरसोचु॥२८१॥ईस
प्रसादअसीसतुम्हारी॥सुतसुतवधूदेवसरिवारी॥रामसपथमेकीन्हिनकाउ॥

अ० सोकरिकहैंसबसीससनिभाऊ॥भरतसीलगुनविनयबडाई॥भायपभगतिभरोसभला
१०९ ई॥कहतसारदहुकरमतिहीचे॥सागरसीपकिजाहिंउलीचे॥जानउंसदाभरतकुल
दीपा॥बारबारमोहिकहेउमहीपा॥कसेकनकमनिपारिषपाए॥पुरुषपरिषिअहिं
समयसुभाये॥अनुचितआजुकहवअसमोरा॥सोकसनेहसयानपथोरा॥सुनिसुर
सरिसमपावनिवानी॥भईसनेहविकलसवरानी॥दोहा॥कौसल्याकहधीरधरिसु
नहुदेविमिथिलेसि॥कोविवेकनिधिवल्लभहितुम्हहिसकेउपदेसि॥२८४॥रानिरा
यसनअवसरपाई॥अपनीभांतिकहवसमुझाई॥रषिअहिलषनुभरतगवनहिंव
न॥जौयहमतमानैमहीपमन॥तौभलिजतनुकरवसुविचारी॥मोरेसोचुभरतकरभा १०९
री॥गूढसनेहभरतमनमाहीं॥रहेनीकमोहिलागतनाहीं॥लषिसुभावसुनिसरल

सुवानी॥ सवभइ मगनकरुनरसरानी॥ नभप्रसून झरि धन्यधन्यधुनि॥ सिथिलसने
हसिद्धजोगीमुनि॥ सवरनिवाससविथकिलषिरहेऊ॥ तवधरिधीरसुमित्राकहेऊ॥ देवि
दंडजुगजामिनिवीती॥ राममातुसुनिउठीसप्रीती॥ दोहा॥ वेगिपायधारियथलहिक
हसनेहसतिभाय॥ हमरैतोअववईसगतिकैमिथिलेससहाय॥ ३८४॥ लषिसनेहसुनि
वचनविनीता॥ जनकप्रियागहेपायपुनीता॥ देवि उचितअसविनयतुम्हारी॥ दसरथ
घरनिराममहतारी॥ प्रभुअपनेनीचहुआदरहीं॥ अगिनिधूमगिरिसिरतृनधरहीं॥ से
वकुराउकरममनवानी॥ सदाससहायमहेसभवानी॥ रौरेअंगजोगुजगकोहै॥ दीपसह
यकिदिनकरसोहै॥ रामजाइवनकरिसुरकाजू॥ अचलअवधपुरकरिहहिराजू॥ अम
रनागनरराममवाहुवल॥ सुषवसिहहिंअपनेअपनेथल॥ यहसवजागवलिककहि॥

अ॰ षा॥देखिनहोइमुधामुनिभाषा॥दोहा॥असकहिपगपरिप्रेमअतिसियहितविनय
११० सुनाइ॥सियसमेतसियमातुतबचलीसुआयसुपाइ॥२८४॥प्रियपरिजनहिमिलीवैदे
ही॥जोजेहिजोगभांतितेहितेही॥तापसवेषजानकिदेषी॥भासबविकलविषाद
विशेषी॥जनकरामगुरआयसुपाई॥चलेथलहिसियदेषीआई॥लीन्हलाइउरज
नकजानकी॥पाहुनिपावनप्रेमप्रानकी॥उरउमगेउअंवुधिअनुरागू॥भएउभूपम
नमनहुप्रयागू॥सियसनेहवटुवाढतजोहा॥तापररामप्रेमसिसुसोहा॥चिरजीवीमुनि
ग्यानविकलजनु॥वूडतलेहेउवालअवलंवनु॥मोहमगनमतिनहिविदेहकी॥महि
मासियरघुवरसनेहकी॥दोहा॥सियपितुमातुसनेहवसविकलनसकीसंभारि॥धर ११०
निसुताधीरजुधरेउसमउसुधरमविचारि॥२८५॥तापसवेषजनकसियदेषी॥भएउ

प्रेमपरितोषविशेषी।पुत्रिपवित्रकिएकुलदोऊ।सुजसधवलजगुकहसबकोऊ।जि
तिसुरसरिकीरतिसरितोरी।गवनुकीन्हविधिअंडकरोरी।गंगअवनिथलतीनिबडे
रे।एहिकियसाधुसमाजघनेरे।पितुकहसत्यसनेहसुबानी।सीयसकुचमहिमनहु
समानी।पुनिपितुमातुलीन्हउरलाई।सिखआसिषहितदीन्हसुहाई।कहतिनसी
यसकुचमनमाहीं।इहांबसबरजनीभलनाहीं।लषिरुषरानिजनायउराऊ।हृदय
सराहतसीलसुभाऊ।दोहा।बारबारमिलिभेंटिसियबिदाकीन्हसनमानि।कही
समयसिरभरतगतिरानिसुबानिसयानि।२८६।सुनिभूपालभरतव्यवहारू।सोन
सुगंधसुधाससिसारू।मूदेसजलनयनपुलकेतन।सुजससराहनलगेमुदितमन
सावधानसुनुसुमुखिसुलोचनि।भरतकथाभवबंधविमोचनि।धर्मराजनयब्रह्मवि

अ०
१११ चारू॥इहाजथामतिमोरप्रचारू॥सोमतिमोहिभरतमहिमाहीं॥कहइकाहछलिछुअ
तिनछाहीं॥विधिगनपतिअहिपतिसिवसारद॥कविकोविदवुधबुद्धिविसारद॥भर
तचरितकीरतिकरतूती॥धरमसीलगुनविमलविभूती॥समुझतसुनतसुषदसवकाहू॥
सुचिसुरसरिरुचिनिदरसुधाहू॥दोहा॥निरवधिगुननिरुपमपुरुषभरतभरतसमजा
नि॥कहियसुमेरुकिसेरसमकविकुलमतिसकुचानि॥१८७॥अगमसवहिवरनतवर
बरनी॥जिमिजलहीनमीनगमुधरनी॥भरतअमितमहिमासुनुरानी॥जानहिरामनस
कहिवषानी॥वरनिसप्रेमभरतअनुभाऊ॥तियजियकीरुचिलषिकहराऊ॥वहुरहि
लषनुभरतवनुजाहीं॥सवकरभलसवकेमनमाहीं॥देविपरंतुभरतरघुवरकी॥प्रीति १११
प्रतीतिजाइनहितरकी॥भरतुअवधिसनेहममताकी॥जद्यपिरामसीवसमताकी॥पर

मारथस्वारथसुखसारे॥भरतनसपनेहुमनहुनिहारे॥साधनसिद्धिरामपगनेहू॥मोहि
लखिपरतभरतमतयेहू॥दोहा॥भोरेहुभरतनपेलिहहिमनसहुरामरजाइ॥करिय
नसोचसनेहवसकहेउभूपबिलषाइ॥२८८॥रामभरतगुनगनतसप्रीती॥निसिदंपति
१ हिंपलकसमबीती॥राजसमाजप्रातजुगजागे॥न्हाइन्हाइसुरपूजनलागे॥गेनहाइगु
रपहिंरघुराई॥बंदिचरनबोलेरुषपाई॥नाथभरतपुरजनमहतारी॥सोकबिकलबन
बासदुषारी॥सहितसमाजराउमिथिलेसू॥बहुतदिवस भएसहतकलेसू॥उचि
तहोइसोइकीजियनाथा॥हितसबहीकररौरेहाथा॥असकहिअतिसकुचेरघुराऊ॥
मुनिपुलकेलषिसीलसुभाऊ॥तुम्हबिनुरामसकलसुषसाजा॥नरकसरिसदुहुरा
जसमाजा॥दोहा॥ प्रानप्रानकेजीवकेजियसुषकेसुषराम॥तुम्हतजितातसुहात

रहहिजिन्हहियँतिन्हहिबिधिबाम॥२८९॥सोसुखधरमकरमुजरिजाऊ॥जहँनरामपद
पंकजभाऊ॥जोगुकुजोगुज्ञानअज्ञानू॥जहँनहिरामप्रेमपरधानू॥तुमबिनुदुखी
सुखीतुमतेही॥तुमजानहुजियजोजेहिकेही॥राउरआयसुसिरसबहीके॥बिदितकृ
पालहिगतिसबनीके॥आपुआश्रमिहधारियपाऊ॥भएउसनेहसिथिलमुनिराउ॥
करिप्रनामतबरामसिधाए॥रिसनेहसुभायसुहाए॥महाराजेअबकीजियसोई॥
सबकरधरमसहितहितहोई॥दोहा॥ज्ञाननिधानसुजानसुचिधरमधीरनरपाल॥
तुम्हबिनुअसमंजससमनकोसमरथएहिकाल॥२९०॥सुनिमुनिबचनजनकअनु
रागे॥लखिगतिज्ञानुबिरागुबिरागे॥सिथिलसनेहगुनतमनमाहीं॥आएइहाँकीन्ह
भलनाहीं॥रामहिरायकहेउबनजाना॥कीन्हआपुप्रियप्रेमप्रवाना॥हमअबबनते

वनहिपठाई॥ प्रमुदितफिरवविवेकवडाई॥ तापसमुनिमहिसुरसुरदेषी॥ भयप्रेमवस
विकलविशेषी॥ समउसमुझिधरिधीरजुराजा॥ चलेभरतपहिंसहितसमाजा॥ भरतआइ
आगेभइलीन्हे॥ अवसरसरिससुआसनदीन्हे॥ तातभरतकहतेरहुतिराऊ॥ तुम्हहिवि
दितरघुवीरसुभाऊ॥ दोहा॥ रामसत्यव्रतधरमरतसवकरसीलसनेहु॥ संकटसहतस
कोचवसकहियजोआयसुदेहु॥ २९०॥ सुनितनपुलकिनयनभरिवारी॥ वोलेभरतुधी
रधरिभारी॥ प्रभुप्रियपूज्यपितासमआपू॥ कुलगुरुसमहितमायनवापू॥ कौसिकादि
मुनिसचिवसमाजू॥ ज्ञानअंवुनिधिआपुनआजू॥ सिसुसेवकआयसुअनुगामी॥ जानि
मोहिसिषदेइअस्वामी॥ एहिसमाजथलवूझवराउर॥ मौनमलिनमैंवोलववाउर॥ छो
टेवदनुकहौंवडिवाता॥ छमवताताललषिवामविधाता॥ आगमनिगमप्रसिद्धपुराना॥

अ० सेवाधरमुकठिनजगुजाना॥स्वामिधरमस्वारथहिविरोधू॥वैरुअंधप्रेमहिनप्रवोधू॥
दोहा॥ राषिरामरुषधरमव्रतुपराधीनमोहिजानि॥सवकेसंमतसर्वहितकरियप्रेमुप
११३ हिचानि॥२५४॥भरतवचनसुनिदेषिसुभाउ॥सहितसमाजसराहतराउ॥सुगमअग
ममृदुमंजुकठोरे॥अरथअमितअतिआषरथोरे॥ज्यौंमुषमुकुरमुकुरनिजपानी॥गहि
नजाइअसअद्भुतवानी॥भूपभरतमुनिसाधुसमाजू॥गेजहंविवुधकुमुदद्विजराजू॥सु
निसुधिसोचविकलसवलोगा॥मनहुमीनगननवजलजोगा॥देवप्रथमकुलगुरुगति
देषी॥निरषिविदेहसनेहविसेषी॥रामभगतिमयभरतनिहारे॥सुरस्वारथीहहरिहि
यहारे॥सवकोउरामप्रेममयपेषा॥भयेअलेषसोचवसलेषा॥ दोहा॥ रामुसनेहस ११३
कोचवसकहससोचसुरराज॥रचहुप्रपंचहिपंचमिलिनाहितभएउअकाजु॥२५५॥

सुनहु सुमिरि सारदा सराही॥ देवि देव सरनागति पाही॥ फेरि भरत मति करि निज माया
पालु बिबुध कुल करि छल छाया॥ बिबुध बिनय सुनि देवि सयानी॥ बोली सुर स्वारथ
जड जानी॥ मो सन कहहु भरत मति फेरू॥ लोचन सहस न सूझ सुमेरू॥ बिधि हरि हर मा
या बडि भारी॥ सोउ न भरत मति सकइ निहारी॥ सो मति मोहि कहत करु भोरी॥ चंदिनि कर
कि चंडकर चोरी॥ भरत हृदय सिय राम निवासू॥ तहँ कि तिमिर जहँ तरनि प्रकासू॥ अस क
हि सारद गई बिधि लोका॥ बिबुध बिकल निसि मानहु कोका॥ दोहा॥ सुर स्वारथी मलीन
१ मन कीन्ह कुमंत्र कुठाटु॥ रचि प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाटु॥ २९४॥ करि कु
चालि सोचत सुरराजू॥ भरत हाथ सबु काज अकाजू॥ गए जनकु रघुनाथ समीपा॥ सन
माने सब रघुकुल दीपा॥ समय समाज धरम अबिरोधा॥ बोले तब रघुबंस पुरोधा॥ जन

अ० कैभरतसंवादसुनाई॥भरतकहावतिकहीसुहाई॥तातरामजसआयसुदेहू॥सोसबक
२२४ रउमोरमतयेहू॥सुनिरघुनाथजोरिजुगपानी॥बोलेसत्यसरलम्रदुबानी॥बिद्यमानआ
पुनमिथिलेसू॥मोरकहबसबभांतिभदेसू॥राउररायरजायसुहोई॥राउरिसपथसही
सिरसोई॥दोहा॥ रामसपथसुनिमुनिजनकुसकुचेसभासमेत॥सकलबिलोकतभरत
मुखबनइनउतरुदेत॥२५९॥सभासकुचबसभरतनिहारी॥रामबंधुधरिधीरजुभारी
कुसमउदेखिसनेहुसंभारा॥बढतबिंधिजिमिघटजनिवारा॥सोककनकलोचनमति
छोनी॥हरीबिमलगुनगनजगजोनी॥भरतबिबेकबराहबिसाला॥अनायासउधरीते
हिकाला॥करिप्रनामसबकहकरजोरे॥रामराउगुरसाधुनिहोरे॥छमबआजुअतिअनु २२४
चितमोरा॥कहउंबदनम्रदुबचनकठोरा॥हियसुमिरिसारदासुहाई॥मानसतेमुख

पंकजआई॥ विमलविवेकधरमनयसाली॥ भरतभारतीमंजुमराली॥ दोहा॥ निरखि
विवेकविलोचनन्हिसिथिलसनेहसमाजु॥ करिप्रनामबोलेभरतुसुमिरिसीयरघुराजु
२९७॥ प्रभुपितुमातुसुहृदगुरस्वामी॥ पूज्यपरमहितअंतरजामी॥ सरलसुसाहिबसील
निधानू॥ प्रनतपालसरवग्यसुजानू॥ समरथसरनागतहितकारी॥ गुनगाहकअवगु
नअघहारी॥ स्वामिगोसाइंहिसरिसगोसाईं॥ मोहिसमानमंइसाइंदोहाई॥ प्रभुपितु
वचनमोहवसपेली॥ आएउंइहांसमाजसकेली॥ जगभलपोचऊंचअरुनीचू॥ अमिअ
अमरपदमाहुरमीचू॥ रामरजाइमेटिमनमाहीं॥ देखासुनाकतहुंकोउनाहीं॥ सोमैंसव
विधिकीन्हिढिठाई॥ प्रभुमानीसनेहसेवकाई॥ दोहा॥ कृपाभलाईआपनीनाथ
कीन्हभलमोर॥ दूषनभेभूषनसरिससुजसुचारुचहुंओर॥ २९८॥ राउरिरीतिसुवा

श्री॰ निबहाई॥ जगत बिदित निगमागम गाई॥ कूर कुटिल खल कुमति कलंकी॥ नीच निसी
११५ ल निरीस निसंकी॥ ते उ सुनि सरन सामुहे आए॥ सकृत प्रनाम किए अपनाए॥ देषि
दोष कबहु न उर आने॥ सुनि गुन साधु समाज बषाने॥ को साहिब सेवक हि निवाजी
आपु समाज साज सब साजी॥ निज करतूति न समुझि अ सपने॥ सेवक सकुच सोचु उर
अपने॥ सो गोसाइ नहि दूसर कोपी॥ भुजा उठाइ कहौं पन रोपी॥ पसु नाचत सुक पाठ
प्रबीना॥ गुन गति नट पाठक आधीना॥ दोहा॥ यौं सुधारि सनमानि जन किए साधु सि
र मोर॥ को कृपाल बिनु पालिहै बिरदावलि बरजोर॥ २९८॥ सोक सनेह कि बाल सुभा
ये॥ आये उ लाइ रजायसु बाये॥ तबहु कृपाल हेरि निज ओरा॥ सबइ भांति भल मानेउ ११५
मोरा॥ देषे उ पाय सुमंगल मूला॥ जाने उ स्वामि सहज अनुकूला॥ बडे समाज बिलोके

उभागा॥ वडीचूक साहिव अनुरागा॥ कृपा अनुग्रह अंगु अघाई॥ कीन्हि कृपानिधि स
व अधिकाई॥ राखा मोर दुलार गोसांई॥ अपने सील सुभाय भलाई॥ नाथ निपट मै की
न्हि ढिठाई॥ स्वामि समाज सकोच विहाई॥ अविनय विनय जथारुचि वानी॥
छमिहि देव अति आरत जानी॥ दोहा॥ सुहृद सुजान सुसाहिवहि वहुत कहत वडि खो
रि॥ आयसु देइअ देव अव सव सुधारी मोरि॥ २९९॥ प्रभु पद पदुम पराग दोहाई॥
सत्य सुकृत सुख सीवं सुहाई॥ सो करि कहौं हिए अपने की॥ रुचि जागत सोवत सपने की॥
सहज सनेह स्वामि सेवकाई॥ स्वारथ छल फल चारि विहाई॥ अज्ञा सम न सुसाहिव
सेवा॥ सो प्रसाद जनु पावइ देवा॥ अस कहि प्रेम विवस भये भारी॥ पुलक सरीर विलोच
न वारी॥ प्रभु पद कमल गहे अकुलाई॥ समउ सनेह न सो कहि जाई॥ कृपासिंधु सन

अ॰ मानिसुबानी॥बैठारेसमीपगहिपानी॥भरतबिनयसुनिदेखिसुभाऊ॥सिथिलसनेह
११६ सभारघुराऊ॥ छंद॥: रघुराउसिथिलसनेहसाधुसमाजमुनिमिथिलाधनी॥मनम
हुसराहतभरतभायपभगतिकीमहिमाघनी॥भरतहिप्रसंसतबिबुधबरषतसुमनु
मानसमलिनसे॥तुलसीबिकलसबलोगसुनिसकुचेनिसागमनलिनसे॥ सोरठा॥: दे
खिदुखारीदीनदुहुँसमाजनरनारिसब॥मघवामहामलीनमुयेमारिमंगलचहत
३००॥कपटकुचालिसीवँसुरराजू॥परअकाजप्रियआपनकाजू॥काकसमानपाक
रिपुरीती॥छलीमलीनकतहुँनप्रतीती॥प्रथमकुमतकरिकपटुसकेला॥सोउचा
टुसबकेसिरमेला॥सुरमायासबलोगबिमोहे॥रामप्रेमअतिसेनबिछोहे॥भरउ ११६
चाटबसमनथिरनाहीं॥छनबनरुचिछनसदनसोहाहीं॥दुबिधमनोगतिप्रजा

दुआरी॥सरितसिंधुसंगममज्जनुवारी॥दुचितकनउपरितोषनलहहीं॥येकुयेकुस
नमरमुनकहहीं॥लषिहियहंसिकहकृपानिधानू॥सरिससवानमघवानजुवानू॥
दोहा॥: भरतजनकुमुनिगनसचिवसाधुसचेतविहाइ॥लागीदेवमायासवहिज
थाजोगजनुपाइ॥२०१॥कृपासिंधुलषिलोगदुषारे॥निजसनेहसुरपतिछलभारे॥
सभाराउगुरमहिसुरमंत्री॥भरतभगतिसवकैमतिजंत्री॥रामहिचितवतचित्रलिषे
से॥सकुचतबोलतवचनसिषेसे॥भरतप्रीतिनतिविनयवडाई॥सुनतसुषदवरनत
कठिनाई॥जासुविलोकिभगतिलवलेसू॥प्रेममगनमुनिगनमिथिलेसू॥महिमा
तासुकहइकिमितुलसी॥भगतिसुभावसुमतिहियहुलसी॥आपुछोटिमहिमावडि
जानी॥कविकुलकानिमानिसकुचानी॥कहिनसकतिगुनरुचिअधिकाई॥मति

श्री० गतिवालकवचनकीनाईं ॥ दोहा ॥ भरतविमलजसविमलविधुसुमतिचकोरकुमारि
११७ उदितविमलजनुहृदयनभएकटकरहीनिहारि ॥ ३०४ ॥ भरतसुभाउनसुगमनि
गमहूं ॥ लघुमतिचापलताकविछमहू ॥ कहतसुनतसतिभाउभरतको ॥ सीयराम
पदहोइनरतको ॥ सुमिरतभरतहिप्रेमरामको ॥ जेहिनसुलभतेहिसरिसवामको ॥
देषिदयालदसासवहीकी ॥ रामसुजानजानिजनजीकी ॥ धरमधुरीनधीरनयना
गर ॥ सत्यसनेहसीलसुषसागर ॥ देसकाललषिसमयसमाजू ॥ नीतिप्रीतिपालक
रघुराजू ॥ वोलेवचनवानिसरवसुसे ॥ हितपरिनामसुनतससिरसुसे ॥ तातभरततुम्ह
धरमधुरीना ॥ लोकवेदविदप्रेमप्रवीना ॥ दोहा ॥ करमवचनमानसविमलतुम्हसमानतुम्हतात ११७
गुरसमाजलघुवंधुगुनकुसमयकिमिकहिजात ॥ ३०५ ॥ जानहुतात

तरनिकुलरीती॥सत्यसंधपितुकीरतिप्रीती॥समउसमाजलाजगुरजनकी॥उदा
सीनहितअनहितमनकी॥तुम्हहिबिदितसबहीकरकरमू॥आपनमोरपरमहित
धरमू॥मोहिसबभांतिभरोसतुम्हारा॥तदपिकहौंअवसरअनुसारा॥ताततातबिनुबा
तहमारी॥केवलगुरकुलकृपासँभारी॥नतरुप्रजापुरजनपरिवारू॥हमहिसहितसब
होतखुआरू॥जौंबिनुअवसरअथवदिनेसू॥जगकेहिकहहुनहोइकलेसू॥तसउत
पाततातबिधिकीन्हा॥मुनिमिथिलेसराखिसबुलीन्हा॥दोहा॥राजकाजसबलाजप
तिधरमधरनिधनधाम॥गुरप्रभावपालिहिसबहिभलहोइहिपरिनाम॥२५४॥सहि
तसमाजतुम्हारहमारा॥घरबनगुरप्रसादरखवारा॥मातुपितागुरस्वामिनिदेसू॥सक
लधरमधरनीधरसेसू॥सोतुम्हकरहुकरावहुमोहू॥ताततरनिकुलपालकहोहू॥सा

अ० धरुकरुसकलसिधिदेनी॥कीरतिसुगतिभूतिमयवेनी॥सोविचारिसहिसंकटभारी॥
११८ करहुप्रजापरिवारुसुषारी॥बाँटीविपतिसवहिमोहिभाई॥तुम्हहिअवधिभरिवडिक
ठिनाई॥जानितुम्हहिमृदुकहउँकठोरा॥कुसमयतातनअनुचितमोरा॥होहिकुठा
यसुबंधुसहाए॥ओडियहिहाथअसनिहुकेघाए॥दोहा॥सेवककरपदनयनसेमुष
सोसाहिबुहोइ॥तुलसीप्रीतिकिरीतिसुनिसुकविसराहहिसोइ॥३०५॥सभासकलसुनि
रघुवरवानी॥प्रेमपयोधिअमिअजनुसानी॥सिथिलसमाजसनेहसमाधी॥देषिदसा
चुपसारदसाधी॥भरतहिभएउपरमसंतोषू॥सनमुषस्वामिविमुषदुषदोषू॥मुषप्रसन्न
मनमिटाविषादू॥भाजनुगूंगेहिगिराप्रसादू॥कीन्हसप्रेमप्रनामवहोरी॥वोलेपानि ११८
पंकरुहजोरी॥नाथभएउसुषसाथगयेको॥लहेउलाहुजगजनमुभयेको॥अवकृपा

लखनसिआयसुहोई।।करउँसीसधरिसादरसोई।।सोअवलंबदेवमोहिदेई।।अवधिपारपा
वउँजेहिसेई।।दोहा।।देवदेवअभिषेकहितगुरअनुसासनपाइ।।आनेउँसबतीरथ
सलिलतेहिकहँकहारजाइ।।उ०।।एकमनोरथबडमनमाहीं।।सभयसकोचजातक
हिनाहीं।।कहहुतातप्रभुआयसुपाई।।बोलेबानिसनेहसुहाई।।चित्रकूटमुनिथलती
रथबन।।खगमृगसरसरिनिरझरगिरिगन।।प्रभुपदअंकितअवनिविशेषी।।आयसु
होइजौआवउँदेषी।।अवसिअत्रिआयसुसिरधरहू।।तातविगतभयकाननचरहू।।मु
निप्रसादवनमंगलदाता।।पावनपरमसुहावनभ्राता।।रिषिनायकुजहँआयसुदेहीं।।
राषेहुतीरथजलथलतेहीं।।सुनिप्रभुबचनभरतसुषपावा।।मुनिपदकमलमुदितसि
रनावा।।दोहा।।भरतरामसंवादसुनिसकलसुमंगलमूल।।सुरस्वारथीसराहिकुल

अ० बरषहिं सुरतरु फूल॥३०७॥धन्य भरत जय राम गोसाईं॥कहत देव हरषत बरिआईं॥
११८ मुनि मिथिलेस सभा सब काहू॥भरत बचन सुनि भएउ उछाहू॥भरत राम गुन ग्राम
सनेहू॥पुलकि प्रसंसत राउ बिदेहू॥सेवक स्वामि सुभाव सुहावन॥नेमु प्रेमु अति पाव
न पावन॥मति अनुसार सराहन लागे॥सचिव सभासद सब अनुरागे॥सुनि सुनि राम
भरत संवादू॥दुहुँ समाज हिय हरष बिषादू॥राम मातु दुख सुख सम जानी॥कहि गुन
दोष प्रबोधीं रानी॥एक कहहिं रघुबीर बडाई॥एक सराहत भरत भलाई॥दोहा॥
अत्रि कहेउ तब भरत सन सैल समीप सुकूप॥राखिय तीरथ तोय तहँ पावन अमि
य अनूप॥३०८॥भरत अत्रि अनुसासन पाई॥जल भाजन सब दिए चलाई॥सानुज ११८
आपु अत्रि मुनि साधु॥सहित गए जहँ कूप अगाधू॥पावन पाथ पुन्य थल राखा॥प्रमुदि

तप्रेमअत्रिअसभाषा॥ तातअनादिसिद्धथलयेहू॥ लोपेउकालविदितनहिंकेहू
तवसेवकन्हसरसथलदेषा॥ कीन्हसुजलहितकूपविशेषा॥ विधिवसभयउविश्व
उपकारू॥ सुगमअगमअतिधरमविचारू॥ भरतकूपअवकहिहहिलोगा॥ अतिपाव
नतीरथजलजोगा॥ प्रेमसनेमनिमज्जतप्रानी॥ होइहहिंविमलकरममनवानी॥ ९
दोहा॥ कहतकूपमहिमासकलगएजहाँरघुराउ॥ अत्रिसुनायेउरघुवरहितीरथ
पुन्यप्रभाउ॥ ३१०॥ कहतधरमइतिहाससप्रीती॥ भयउभोरुनिसिसोसुखवीती॥
नित्यनिवाहिभरतदोउभाई॥ रामअत्रिगुरआयसुपाई॥ सहितसमाजसाजसव
सादे॥ चलेरामवनअटनपयादे॥ कोमलचरनचलतविनुपनहीं॥ भइमृदुभूमिसकु
चिमनमनहीं॥ कुसकंटककाँकरीकुराई॥ कटुककठोरकुवस्तुदुराई॥ महिमंजुलमृ

अ०
१२० टपफूलिफलतृनमृदुताहीं॥ मृगविलोकिषगवोलसुवानी॥ सेवहिंसकलरामप्रि
दुमारगकीन्हे॥ वहतसमीरत्रिविधिसुषलीन्हे॥ सुमनवरषिसुरघनकरिछाहीं॥ वि
यजानी॥ दोहा॥ सुलभसिद्धिसवप्राकृतहुरामुकहतजमुहात॥ रामप्रानप्रियभरतक
हुयहनहोइवडिवात॥ २१०॥ एहिविधिभरतफिरतवनमाहीं॥ नेमुप्रेमुलषिमुनिसकु
चाहीं॥ पुन्यजलाश्रयभूमिविभागा॥ षगमृगतरुतृनगिरिवनवागा॥ चारुविचित्रप
वित्रविशेषी॥ वूझतभरतदिव्यसवुदेषी॥ सुनिमनमुदितकहतरिषिराउ॥ हेतुनामगु
नपुन्यप्रभाउ॥ कतहुनिमज्जनकतहुप्रनामा॥ कतहुविलोकतमनअभिरामा॥ क
तहुवैठिमुनिआयसुपाई॥ सुमिरतसीयसहितदोउभाई॥ देषिसुभाउसनेहसुसेवा॥ १२०
देहिअसीसमुदितवनदेवा॥ फिरहिगएदिनपहरअढाई॥ प्रभुपदकमलविलोकहि

आई॥ दोहा॥ देखे थल तीरथ सकल भरत पांच दिन मांझ॥ कहत सुनत हरि हर सुजस गए
उ दिवस भइ सांझ॥ ३१४॥ भोर न्हाइ सब जुरा समाज॥ भरत भूमिसुर तिरहुति राजू॥ भल दि
नु आजु जानि मन माहीं॥ राम कृपाल कहत सकुचाहीं॥ गुर नृप भरत सभा अवलोकी॥
सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी॥ सील सराहि सभा सब सोची॥ कहुं न राम सम स्वामि
सकोची॥ भरत सुजान राम रुख देखी॥ उठि सप्रेम धरि धीर बिशेषी॥ करि दंडवत कहत क
र जोरी॥ राखी नाथ सकल रुचि मोरी॥ मोहि लगि सबहि सहेउ संतापू॥ बहुत भांति दुख पा
वा आपू॥ अब गोसाइं मोहि देउ रजाई॥ सेवौं अवध अवधि भरि जाई॥ दोहा॥ जेहि उपा
य पुनि पाय जनु देखइ दीनदयाल॥ सो सिष देइअ अवधि लगि कोसलपाल कृपाल॥
३१५॥ पुरजन परिजन प्रजा गोसाईं॥ सब सुचि सरस सनेह सगाईं॥ रा उर बदि भल भव

दुषदाहू॥ प्रभुविनुवादिपरमपदलाहू॥ स्वामिसुजानुजानिसवहीकी॥ रुचिलालसारहनि
श्री० जनजीकी॥ प्रनतपालपालहिसवकाहू॥ देवदुहूंदिसिओरनिवाहू॥ असमोहिसवविधि
१२१ धिभूरिभरोसो॥ किएविचारनसोचषरोसो॥ आरतिमोरिनाथकरछोहू॥ दुहुंमिलि
कीन्हढीठुअतिमोहू॥ यहवडदोषदूरिकरिस्वामी॥ तजिसकोचसिषअअनुगामी॥ ३
भरतविनयसुनिसवहिप्रसंसी॥ षीरनीरविवरनगतिहंसी॥ दोहा॥ दीनवंधुसुनि
वंधुकेवचनदीनछलहीन॥ देसकालअवसरसरिसवोलेरामप्रवीन॥ ३०४॥ ताततुम्ह
रिमातपरिजनकी॥ चिंतागुरहिनृपहिघरवनकी॥ माथेपरगुरमुनिमिथिलेसू॥ हम
महितुम्हहिसपनेहुंनकलेसू॥ मोरतुम्हारपरमपुरुषारथु॥ स्वारथसुजससुधरमपरमा १२१
रथु॥ पितुआयसुपालियदुहुभाई॥ लोकवेदभलभूपभलाई॥ गुरपितुमातुस्वामि

सिषपाले॥चलेहुकुमगपगपरहिनषाले॥असविचारिसवसोचविहाई॥पालहुअव
वधअवधिलगिजाई॥पुरपुरजनपरिजनपरिवारु॥गुरपदरजहिलागछरुभारु॥तुम्ह
मुनिमातुसचिवसिषमानी॥पालेहुपुहुमिप्रजारजधानी॥दोहा॥ मुषियामुषसो
चाहीऐषानपानकहुएक॥पालइपोषइसकलअंगतुलसीसहितविवेक॥३१४॥
राजधरमसरवसयतनोई॥जिमिमनमाहमनोरथगोई॥वंधुप्रवोधकीन्हबहुभां
ती॥विनुअधारमनतोषुनसाती॥भरतसीलगुरसचिवसमाजु॥सकुचसनेहविवस
रघुराजु॥प्रभुकरिकृपापावरीदीन्ही॥सादरभरतसीसधरिलीन्ही॥चरनपीठकरुना
निधानके॥जनुजुगजामिकप्रजाप्रानके॥संपुटभरतसनेहरतनके॥आषरजुगज
नुजीवजतनके॥कुलकपाटकरकुसलकरमके॥विमलनयनसेवासुधरमके॥भर

नमुदितअवलंबलहेते॥असमुझजमसियरामरहेते॥ दोहा॥ मांगेउबिदाप्रनामक
अ० १२२ रिरामलिएउरलाइ॥लोगउचाटेअमरपतिकुटिलकुअवसरपाइ॥२९५॥सोकुचालि
सबकहंभइनीकी॥अवधिआसमसजीवनिजीकी॥नतरुलषनसियरामबियोगा॥
॥ हहरिमरतसबलोगकुरोगा॥रामकृपाअवरेबसुधारी॥बिबुधधारिभइगुनदगोहारी॥
भेंटतभुजभरिभाइभरतसो॥रामप्रेमरसकहिनपरतसो॥तनमनबचनउमगअनु
रागा॥धीरधुरंधरधीरजुत्यागा॥बारिजलोचनमोचतबारी॥देषिदसासुरसभादुषारी॥
मुनिगनगुरधुरधीरजनकसे॥ग्यानअनलमनकसेकनकसे॥जेबिरंचिनिरलेपउपा
ये॥पदुमपत्रजिमिजगजलजाये॥ दोहा॥ तेउबिलोकिरघुबरभरतप्रीतिअनूपअ १२२
पार॥भएमगनमनतनबचनसहितबिरागबिचार॥२९६॥जहांजनकगुरगतिमतिभो

री॥ प्राकृतप्रीतिकहतवडिषोरी॥ वरनततरघुवरभरतवियोगा॥ मुनिकठोरकविज्ञान
हिलोगा॥ सोसकोवरसंभ्रकथसुवानी॥ समउससनेहसुमिरिसकुचानी॥ भेटिभरतरघु
वरसमुझाये॥ पुनिरिपुदवनहरषिहियलाये॥ सेवकसचिवभरतरुषपाई॥ निजनि
जकाजलागेसवजाई॥ सुनिदारुनदुषदुहूसमाजा॥ लागेचलनकेसाजनसाजा॥ प्रभु
पदपदुमवंदिदोउभाई॥ चलेसीसधरिरामरजाई॥ मुनितापससवनदेवनिहोरी॥ ८
सवसनमानिवहोरिवहोरी॥ दोहा॥ लषनहिभेटिप्रनामुकरिसिरधरिसियपदधू
रि॥ चलेसप्रेमअसीससुनिसकलसुमंगलमूरि॥ २१७॥ सानुजरामनृपहिसिरनाई॥
कीन्हिवहुतविधिविनयवडाई॥ देवदयावसवडदुषपायेउ॥ सहितसमाजकाननन
हिआयेउ॥ पुरपगुधारियदेइअसीसा॥ कीन्हधीरधरिगवनमहीसा॥ मुनिमहिदे

श्री० व साधु सनमाने॥ बिदा किए हरि हर सम जाने॥ सासु समीप गए दोउ भाई॥ फिरे बंदि
१२३ पग आसिष पाई॥ कौसिक बामदेव जाबाली॥ पुरजन परिजन सचिव सुचाली॥ जथा जो
ग करि बिनय प्रनामा॥ बिदा किए सब सानुज रामा॥ नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे॥ सब स
नमानि कृपानिधि फेरे॥ दोहा॥ भरत मातु पद बंदि प्रभु सुचि सनेह मिलि भेंटि॥ बिदा
कीन्ह सजि पालकी सकुच सोच सब मेटि॥ ३१९॥ परिजन मातु पितहि मिलि सीता॥ फिरी
प्रानप्रिय प्रेम पुनीता॥ करि प्रनाम भेंटी सब सासू॥ प्रीति कहत कबि हिय न हुलासू॥
सुनि सिष अभिमत आसिष पाई॥ रही सीय दुहुँ प्रीति समाई॥ रघुपति पटु पालकी
मगाई॥ करि प्रबोध सब मातु चढ़ाई॥ बार बार हिलि मिलि दुहुँ भाई॥ सम सनेह जननी १२३
पहुँचाई॥ साजि बाजि गज बाहन नाना॥ भूप भरत दल कीन्ह पयाना॥ हृदयँ रामु सि

अ० राजनुमोहतधेरसरीरा॥३२०॥मुनिमहिसुरगुरभरतभुआलू॥रामबिरहसबुसाजबेहालू॥
१२४ प्रभुगुनग्रामगनतमनमाहीं॥सबचुपचापचलेमगजाहीं॥जमुनाउतरिपारसबभएऊ
सोबासरबिनुभोजनगएऊ॥उतरिदेवसरिदूसरबासू॥रामसखासबकीन्हसुपासू॥सईउ-
तरिगोमतीनहाए॥चौथेदिवसअवधपुरआए॥जनकरहेपुरबासरचारी॥राजकाजसब
साजसँभारी॥सौंपिसचिवगुरभरतहिराजू॥तेरहुतिचलेसाजिसबसाजू॥नगरनारिनर
गुरसिखमानी॥बसेसुखेनरामरजधानी॥दोहा॥रामदरसलगिलोगसबकरतनेमउ-
पबास॥तजितजिभूषनभोगसुषजिअतअवधिकीआस॥३२१॥सचिवसुसेवकभरतप्र-
बोधे॥निजनिजकाजपायसिषओधे॥पुनिसिषदीन्हबोलिलघुभाई॥सौंपीसकलमा- १२४
तुसेवकाई॥भूसुरबोलिभरतकरजोरे॥करिप्रनामबयबिनयनिहोरे॥ऊंचनीचकार-

यलषनसमेता॥ चलेजाहिंसबलोगअचेता॥ बसहबाजिगजपसुहियहारे॥ चलेजाहिं
परबसमनमारे॥ दोहा॥ गुरगुरतियपदबंदिप्रभुसीतालषनसमेत॥ फिरेहरषबि
समयसहितआयेपरननिकेत॥ ३१८॥ बिदाकीन्हसनमानिनिषादू॥ चलेउहृदय
बड़बिरहबिषादू॥ कोलकिरातभिल्लबनचारी॥ फेरेफिरेजोहारिजोहारी॥ प्रभुसियल
षनबैठिबटछांहीं॥ प्रियपरिजनबियोगबिलषाहीं॥ भरतसनेहसुभाउसुबानी॥ प्रि
याअनुजसनकहतबषानी॥ प्रीतिप्रतीतिबचनमनकरनी॥ श्रीमुषरामप्रेमबसबरनी॥
तेहिअवसरषगम्रगजलमीना॥ चित्रकूटचरअचरमलीना॥ बिबुधबिलोकिदसारघु
बरकी॥ बरषिसुमनकहिगतिघरघरकी॥ प्रभुप्रनामकरिदीन्हभरोसो॥ चलेमुदितम
नडरनषरोसो॥ दोहा॥ सानुजसीयसमेतप्रभुराजतपरनकुटीर॥ भगतिग्यानबैरा

अ० एकवागा॥ रमाविलासरामअनुरागी॥ तजतवमनजिमिजनवडभागी॥ दोहा॥ रामप्रे
१२५ मभाजनभरतुवडेनएहिंकरतूति॥ चातकहंससराहियतटेकविवेकविभूति॥ ३२३॥
देहदिनहिंदिनदूवरिहोई॥ घटैतेजवलमुखछविसोई॥ नितनवरामप्रेमपनपी
ना॥ वढतधरमदलुमनुनमलीना॥ जिमिजलुनिघटतसरदप्रकासे॥ विलसतवेत
सवनजविकासे॥ समदमसंजमनियमउपासा॥ नषतभरतहियविमलअकासा॥ ध्रु
वविस्वासअवधिराकासी॥ स्वामिसुरतिसुरवीथिविकासी॥ रामप्रेमविधुअचलअदो
षा॥ सहितसमाजसोहनितचोषा॥ भरतरहनिसमुझनिकरतूती॥ भगतिविरतिगुनवि
मलविभूती॥ वरनतसकलसुकविसकुचाहीं॥ सेसगनेसगिरागमुनाहीं॥ दोहा॥ १२५
नितपूजतप्रभुपांवरीप्रीतिनहृदयसमाति॥ मागिमागिआयसुकरतराजकाजवहु

जभलपोचू॥ आयसु देवन करव संकोचू॥ परिजन पुरजन प्रजा वुलाये॥ समाधानु करि सु
वस वसाये॥ सानुज गे गुर गेहव होरी॥ करि दंडवत कहत कर जोरी॥ आयसु होइ त रहउँ
सनेमा॥ वोले मुनि तन पुलकि सप्रेमा॥ समुझव कहव करव तुम्ह जोई॥ धरम सारु जग हो
इहि सोई॥ दोहा॥ सुनि सिष पाइ असीस वडि गनक वोलि दिन साधि॥ सिंघासन प्रभु
पादुका वैठारे निरुपाधि॥ ३२३॥ राम मातु गुर पद सिर नाई॥ प्रभु पद पीठ रजायसु पाई॥ नं
दिगाउँ करि परन कुटीरा॥ कीन्ह निवास धरम धुर धीरा॥ जटाजूट सिर मुनिपट धारी॥ म
हि षनि कुस साथरी सँवारी॥ असन वसन वासन व्रत नेमा॥ करत कठिन रिषि धरम स
प्रेमा॥ भूषन वसन भोग सुष भूरी॥ मन तन वचन तजे तृन तूरी॥ अवध राज सुरराज सि
हाई॥ दसरथ धन सुनि धनद लजाई॥ तेहि पुर वसत भरत विनु रागा॥ चंचरीक जिमि चं

भाँति ॥३२४॥ पुलकगातहियसियरघुबीरू ॥ जीहनामजपलोचननीरू ॥ लषनरामु
सियकाननबसहीं ॥ भरतभवनबसितपतनुकसहीं ॥ दोउदिसिसमुझिकहतसबलोगू
सबविधिभरतसराहनजोगू ॥ सुनिव्रतनेमसाधुसकुचाहीं ॥ देषिदसामुनिराजलजा
हीं ॥ परमपुनीतभरतआचरनू ॥ मधुरमंजुमुदमंगलकरनू ॥ हरनकठिनकलिकलु
षकलेसू ॥ महामोहनिसिदलनदिनेसू ॥ पापपुंजकुंजरमृगराजू ॥ समनसकलसंता
पसमाजू ॥ जनरंजनभंजनभवभारू ॥ रामसनेहसुधाकरसारू ॥ छंद ॥ सियरामप्रे
मपियूषपूरनहोतजनमुनभरतको ॥ मुनिमनअगमजमनियमसमदमविषमव्र
तआचरतको ॥ दुषदाहदारिददंभदूषनसुजसमिसअपहरतको ॥ कलिकालतुल
सीसेसठहिहठिरामसनमुषकरतको ॥ सोरठा ॥ भरतचरितकरिनेमुतुलसीजोसाद

अ०
१२६

रसुनहि।सीयरामपदप्रेमअवसिहोइभवरसबिरति॥३२५॥इतिश्रीरामचरित्रमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलवैराग्यसंपादिनीनामद्वितीयःसोपानः॥२॥समाप्तमशुभमस्तु॥सिद्धिरस्तु॥संवत॥१८५० माघशुक्लप्रथम्यां॥१॥लि०
मजीवनलाल